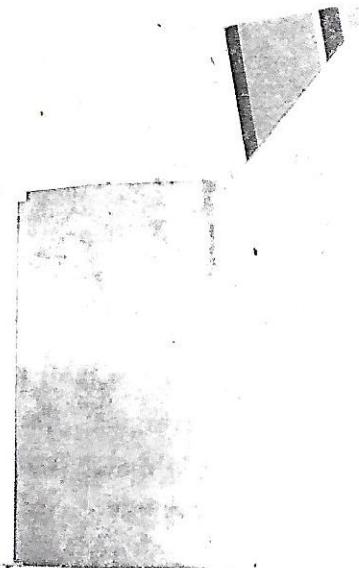


डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली की पुस्तके—

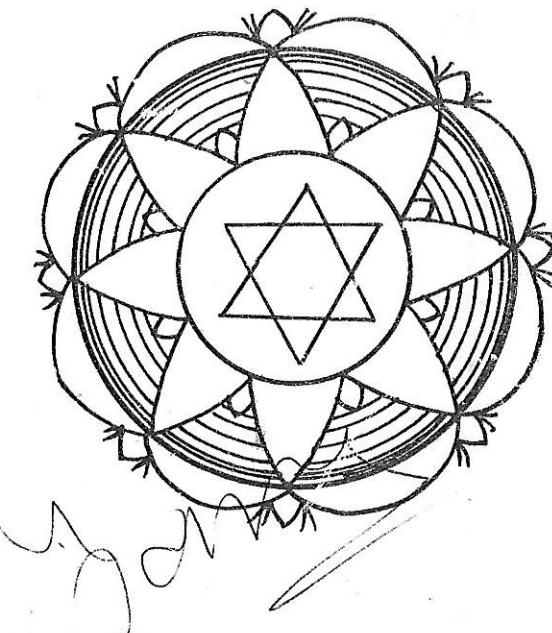
- सुबोध हस्तरेखा
- सुबोध प्रारम्भिक ज्योतिष
- सुबोध स्वज्ञ ज्योतिष
- सुबोध मुहूर्त ज्योतिष
- सुबोध ऊँक विद्या



सुबोध पब्लिकेशन्स

# सुबोध मुहूर्त ज्योतिष

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली





**COLLECTION OF VARIOUS**  
→ HINDUISM SCRIPTURES  
→ HINDU COMICS  
→ AYURVEDA  
→ MAGZINES

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

Made with  
By  
  
**Avinash/Shashi**

[creator of  
hinduism  
server]

प्रकाशक : सुबोध पब्लिकेशन्स, २/३ बी, अंसारी रोड, नई दिल्ली-२  
 संस्करण : १९९६ मुद्रक : जयमाया आफ्सेट, शाहदरा, दिल्ली-३२  
 SUBODH MUHURTA JYOTISH  
 by Dr. Narain Dutt Shrimali

## विषय-सूची

|                            |    |                           |    |
|----------------------------|----|---------------------------|----|
| १. विषय प्रवेश             | ११ | २७. शून्य तिथियाँ         | २२ |
| २. कालभेद                  | ११ | २८. युगादि तिथियाँ        | २३ |
| ३. मुहूर्त                 | ११ | २९. क्षय वृद्धि तिथियाँ   | २३ |
| ४. मुहूर्त क्या है ?       | १२ | ३०. तिथियों में करने      | २३ |
| ५. दिवस-मुहूर्त            | १२ | ३१. तिथियों में करने      | २४ |
| ६. मुहूर्त नक्षत्र, स्वामी | १२ | ३२. योग कार्य             | २४ |
| ७. रात्रि-मुहूर्त          | १३ | ३३. विष तिथि घटी          | २५ |
| ८. अभिजिन्मुहूर्त          | १३ | ३४. विषघटी-दोष            | २५ |
| ९. प्रदोष                  | १४ | ३५. परिहार                | २६ |
| १०. क्षणतिथि               | १४ | ३६. वार                   | २७ |
| ११. संवत्सर                | १४ | ३७. वाराधिपति             | २७ |
| १२. संवत्सर स्वामी         | १५ | ३८. वार दोष               | २७ |
| १३. संवत्सर-फल             | १६ | ३९. वार दोष परिहास        | २७ |
| १४. ऋतु                    | १६ | ३१. वारों के अनुसार किये  | २८ |
| १५. अयन                    | १७ | जानेवाले कार्य            | २८ |
| १६. मास                    | १७ | ३१. वार विषघटी            | २८ |
| १७. क्षयमास-अधिक मास       | १८ | ४०. वार विभाजन            | २९ |
| १८. गलमास                  | १८ | ४१. यामार्द्द             | २९ |
| १९. गलमास में वर्ज्य कार्य | १९ | ४२. कालवेला-काल रात्रि    | २९ |
| २०. पक्ष                   | १९ | ४३. कुलिकादि योग          | ३० |
| २१. तिथि                   | २० | ४४. नक्षत्र-स्वरूप, तारा- |    |
| २२. तिथिसंज्ञक             | २० | संख्या, स्वामी भ्रहा-     |    |
| २३. तिथिभेद                | २१ | षिपति                     |    |
| २४. रंधतिथियाँ             | २१ | ४५. नक्षत्र-संज्ञा        |    |
| २५. वर्ज्य तिथियाँ         | २२ | ४६. नक्षत्र विषघटी        |    |
| २६. शुभ तिथियाँ            | २२ | ४७. मास शून्य नक्षत्र     |    |

धर्मशिक्षक आदित्य नाथ पाण्डेय, ग्राम-चन्दपुर, पौष्ट-भवानीपुर,  
तहसील व आना-चुनार, जिला-मिजपुर (उप्र०), पिन-२३१३०४.

|                               |    |                                |    |                              |    |
|-------------------------------|----|--------------------------------|----|------------------------------|----|
| ४८. पंचक नक्षत्र              | ३४ | ७६. गुरु शुक्रास्त में वर्ज्य- | ५१ | १३०. वर्णगुण चक्र            | ६२ |
| ४९. पुष्य नक्षत्र             | ३५ | काम                            | ५२ | १३१. वश्य                    | ६२ |
| ५०. जन्म नक्षत्र              | ३५ | ७७. सिंहस्थ गुरु               | ५२ | १३२. प्रहृ मैत्री चक्र       | ६३ |
| ५१. योग                       | ३६ | ७८. भूरेष्ठन                   | ५४ | १०४. जीविका ज्ञान            | ६३ |
| ५२. नैसर्गिक योग              | ३६ | ७९. भू-हास्य                   | ५४ | १०५. अन्नप्राशन मुहूर्त      | ६४ |
| ५३. व्यतिपात                  | ३७ | ८०. भू-शयन                     | ५४ | १०६. कर्णवेध मुहूर्त         | ६४ |
| ५४. वैधृति                    | ३७ | ८१. भूरजस्वला                  | ४५ | १०७. कन्या नासिका वेध        | ६४ |
| ५५. विशेष योग विवेचन          | ३७ | ८२. देवशयन                     | ४५ | मुहूर्त                      | ५४ |
| ५६. त्याज्य योग               | ३८ | ८३. अग्निवास                   | ४५ | १०८. जन्मदिन मुहूर्त         | ५४ |
| ५७. करण                       | ३८ | ८४. अग्निवास फल                | ४५ | १०९. चूड़ाकर्म मुहूर्त       | ५४ |
| ५८. भद्रा                     | ३९ | ८५. घोड़श संस्कार              | ४५ | ११०. अक्षरारम्भ मुहूर्त      | ५५ |
| ५९. भद्रावास                  | ३९ | ८६. नवीन वस्त्र धारण           | ४५ | १११. विद्यारम्भ मुहूर्त      | ५६ |
| ६०. भद्रादिशा                 | ४० | मुहूर्त                        | ४६ | ११२. यज्ञोपवीत मुहूर्त       | ५६ |
| ६१. भद्रा अंग                 | ४० | ८७. रजस्वला स्नान              | ४६ | ११३. यज्ञोपवीत काल           | ५६ |
| ६२. भद्रा संज्ञा              | ४० | मुहूर्त                        | ४६ | ११४. नक्षत्र वेध             | ५६ |
| ६३. जन्म राशि कब<br>प्रयोग हो | ४० | ८८. सौमन्तोन्नयन मुहूर्त       | ४६ | ११५. सप्तशलाका वेधयंत्र      | ५६ |
| ६४. नामराशि कब<br>प्रयोग हो   | ४० | ८९. मास गर्भपति                | ४७ | ११६. तिवल                    | ५६ |
| ६५. संक्रान्ति                | ४० | ९०. विष्णु पूजा मुहूर्त        | ४७ | ११७. रोगवंचक                 | ५६ |
| ६६. संक्रान्ति-पूण्यकाल       | ४० | ९१. पितृगृह जाने का            | ४७ | ११८. रोग बाण                 | ५६ |
| ६७. चन्द्रमा                  | ४० | मुहूर्त                        | ४८ | ११९. सूर्य चन्द्र गुरु शुद्ध | ५६ |
| ६८. चन्द्रगोचर फल             | ४१ | ९२. पष्ठी पूजन मुहूर्त         | ४८ | १२०. अपवाद                   | ५६ |
| ६९. शुभ चन्द्र                | ४१ | ९३. सूतिका स्नान मुहूर्त       | ४८ | १२१. उपनयन कर्ता             | ६० |
| ७०. जन्म चन्द्र               | ४२ | ९४. नामकरण संस्कार             | ४८ | १२२. उपनयन में निषेध         | ६० |
| ७१. स्त्री चन्द्र बल          | ४२ | मुहूर्त                        | ४९ | १२३. वेदारम्भ मुहूर्त        | ६० |
| ७२. चन्द्र दिशा               | ४२ | ९५. जलपूजन मुहूर्त             | ५० | १२४. विवाह मुहूर्त           | ६० |
| ७३. चन्द्रवाहन                | ४२ | ९६. दुष्यपान मुहूर्त           | ५० | १२५. पत्नी परीक्षा           | ६१ |
| ७४. त्रैलोक्य में चन्द्रवास   | ४३ | ९७. राहुमुख विचार              | ५० | १२६. निषेध                   | ६१ |
| ७५. धातचन्द्र                 | ४३ | ९८. योगिनीवास                  | ५१ | १२७. विवाह समय               | ६१ |
|                               | ४३ | ९९. रुद्रवास                   | ५१ | १२८. अष्टकूट                 | ६१ |
|                               | ४३ | १००. दोलारोहण मुहूर्त          | ५१ | १२९. कर्ण विचार              | ६२ |
|                               |    |                                |    |                              |    |

|                              |    |
|------------------------------|----|
| १५६. प्रथम युवति संभोग       |    |
| मुहूर्त                      | ७५ |
| १६०. वस्त्र निर्माण मुहूर्त  | ७५ |
| १६१. वस्त्र धोने की दुकान    |    |
| का मुहूर्त                   | ७५ |
| १६२. चमड़े का मुहूर्त        | ७५ |
| १६३. सुगंधित द्रव्य मुहूर्त  | ७६ |
| १६४. भूषण रत्न मुहूर्त       | ७६ |
| १६५. नौकरी करने का मुहूर्त   | ७६ |
| १६६. सबारी लाने का मुहूर्त   | ७७ |
| १६७. बाहन चक्र               | ७७ |
| १६८. नौकर रखने का मुहूर्त    | ७७ |
| १६९. नौकर-मालिक लाभ-         |    |
| हानि                         | ७७ |
| १७०. नौकाचलन मुहूर्त         | ७८ |
| १७१. शस्त्र निर्माण मुहूर्त  | ७८ |
| १७२. शत्रु ताड़न मुहूर्त     | ७८ |
| १७३. मादक वस्तु मुहूर्त      | ७८ |
| १७४. वाद्य प्रयोग मुहूर्त    | ७८ |
| १७५. शत्रु संघि मुहूर्त      | ७८ |
| १७६. पशु क्रय-विक्रय मुहूर्त | ७९ |
| १७७. पक्षी पालन मुहूर्त      | ७९ |
| १७८. मंत्र साधन मुहूर्त      | ८० |
| १७९. नृप प्रयाण मुहूर्त      | ८० |
| १८०. नगर प्रवेश मुहूर्त      | ८० |
| १८१. मल्ल किया मुहूर्त       | ८० |
| १८२. व्याज लेन-देन मुहूर्त   | ८१ |
| १८३. भूमि के क्रय-विक्रय     |    |
| का मुहूर्त                   | ८१ |
| १८४. वाणिज्य कर्म प्रारम्भ   |    |
| करने का मुहूर्त              | ८१ |
| १८५. होटल खोलने का मुहूर्त   | ८१ |
| १८६. हल चलाने का मुहूर्त     | ८२ |
| १८७. बीज बोने का मुहूर्त     | ८२ |
| १८८. सिंचाई मुहूर्त          | ८२ |
| १८९. खलिहान का मुहूर्त       | ८२ |
| १९०. अनाज काटने का मुहूर्त   | ८३ |
| १९१. चूड़ी धारण मुहूर्त      | ८३ |
| १९२. चूड़ी चक्र              | ८३ |
| १९३. बंटवारा करने का         |    |
| मुहूर्त                      | ८४ |
| १९४. ब्रतोद्यापन मुहूर्त     | ८४ |
| १९५. यज्ञ अनुष्ठानादि        |    |
| मुहूर्त                      | ८४ |
| १९६. यंत्र मंत्र प्रयोग      |    |
| मुहूर्त                      | ८४ |
| १९७. औंपरेशन मुहूर्त         | ८५ |
| १९८. रोगमुक्त स्थान          |    |
| मुहूर्त                      | ८५ |
| १९९. दीक्षा मुहूर्त          | ८५ |
| २००. गोद लेने का मुहूर्त     | ८६ |
| २०१. संन्यास धारण करने       |    |
| मुहूर्त                      | ८६ |
| २०२. राज्याभिषेक मुहूर्त     | ८६ |
| २०३. खड़ग धारण मुहूर्त       | ८७ |
| २०४. संधि-मुहूर्त            | ८७ |
| २०५. लघु-उद्योग मुहूर्त      | ८७ |
| २०६. बृहद् व्यापार मुहूर्त   | ८८ |
| २०७. बहीखाता प्रारम्भ        |    |
| मुहूर्त                      | ८८ |
| २०८. संपत्ति विभाजन          |    |
| मुहूर्त                      | ८८ |

|                              |     |
|------------------------------|-----|
| २०९. आवेदन-मुहूर्त           |     |
| २१०. नौकरी प्रारम्भ          |     |
| करने का मुहूर्त              |     |
| २११. कोल्हू प्रारम्भ करने    |     |
| का मुहूर्त                   |     |
| २१२. नाई की दुकान            |     |
| मुहूर्त                      |     |
| २१३. सुनार की दुकान          |     |
| मुहूर्त                      |     |
| २१४. लुहार की दुकान          |     |
| मुहूर्त                      |     |
| २१५. काष्ठ की दुकान          |     |
| मुहूर्त                      |     |
| २१६. मिठाई की दुकान          |     |
| मुहूर्त                      |     |
| २१७. चमड़े की दुकान          |     |
| मुहूर्त                      |     |
| २१८. गुप्तचर कार्य मुहूर्त   | ६०  |
| २१९. तबादले के बाद           |     |
| 'द्यूटी जॉइन मुहूर्त         | ६०  |
| २२०. प्रकाशन खोलने का        |     |
| मुहूर्त                      | ६१  |
| २२१. चुनाव में सड़े होने का  |     |
| मुहूर्त                      | ६१  |
| २२२. संसद में जाने का        |     |
| मुहूर्त                      | ६१  |
| २२३. मंत्रि शपथ              |     |
| मुहूर्त                      | ६१  |
| २२४. बाग लगाने का            |     |
| मुहूर्त                      | ६२  |
| २२५. फिल्म प्रारंभ करने      |     |
| का मुहूर्त                   | ६२  |
| २२६. फिल्म प्रदर्शन          |     |
| मुहूर्त                      | ६२  |
| २२७. भवन निर्माण मुहूर्त     | ६२  |
| २२८. त्याज्य तिथियाँ         | ६३  |
| २२९. नींव खोदने की दिशा      | ६४  |
| २३०. गृहारंभ के विशेष योग    | ६५  |
| २३१. राहु मुख                | ६५  |
| २३२. सर्पमुख विचार           | ६५  |
| २३३. गृह द्वारा विचार        | ६५  |
| २३४. चौखट चढ़ाने का          |     |
| मुहूर्त                      | ६६  |
| २३५. चूल्हा स्थापन मुहूर्त   | ६६  |
| २३६. जलाशय खनन मुहूर्त       | ६६  |
| २३७. निवार चक्र              | ६६  |
| २३८. चन्द्र द्वारा जल        |     |
| प्रमाण                       | ६७  |
| २३९. देव प्रतिष्ठा मुहूर्त   | ६७  |
| २४०. शिववास                  | ६८  |
| २४१. वास्तुशांति मुहूर्त     | ६८  |
| २४२. नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त | ६९  |
| २४३. वामार्क विचार           | ६९  |
| २४४. दिशा तिथि विचार         | ६९  |
| २४५. भद्रा विचार             | १०० |
| २४६. यात्रा मुहूर्त          | १०० |
| २४७. मास शूल विचार           | १०० |
| २४८. धात मास तिथि            | १०० |
| २४९. योगिनी                  | १०१ |
| २५०. वार दिक्षाल             | १०१ |

## मुहूर्त ज्योतिष

जीवन के प्रत्येक क्षण का एक अद्वय संचालक है, जिसकी व्यवस्था से यह समयचक्र गतिशील रहता है। दिन, रात, रात के बाद फिर ठीक समय पर, निश्चित स्थान पर सूर्योदय एवं सूर्यर्षित, ठीक समय पर ऋतुओं का आगमन-प्रस्थान आदि सभी कार्य एक निश्चित व्यवस्था एवं निश्चित प्रणाली के अनुसार होते हैं। अतएव यह स्पष्ट है कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं, या भोग रहे हैं, वह एक अद्वय विराद् सत्ता की विशेष देन है।

यह परिवर्तन काल के अन्तर्गत ही होता है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा भी है—“कालः कलयता महम्”, “कालोऽस्मि लोकश्यकृत् प्रबुद्धः।” यह काल भी सूर्य के वशवती होकर चलता है, “चक्रत परिवर्तन कालः सूर्यवशात् सदा।” अर्थात् भचक्र में भ्रमण करता हुआ सूर्य जब एक चक्र पूरा कर देता है, तो हमने उसे वर्ष की संज्ञा दी है।

इस भचक्र की बारह राशियों के आधार पर बारह मास, एक-एक अंश के समान एक मास में तीस दिन, एक-एक दिन में साठ घड़ी, एक घड़ी में साठ पल, एक पल में साठ विपल, एक विपल में साठ प्रतिपल, इस प्रकार सूक्ष्मातिसूक्ष्म काल-गणना बढ़ती चली जाती है।

महर्षियों ने काल के मुख्यतः पाँच अंग माने हैं—१-वर्ष, २-मास, ३-दिन, ४ लग्न और ५-मुहूर्तं। ये परस्पर उत्तम बली हैं, अर्थात् दोषयुक्त वर्ष को श्रेष्ठ मास ठीक कर देता है, यदि मास दोषयुक्त हो पर दिन बलवान् और श्रेष्ठ हो तो मास का दोष नहीं लगता। इसी प्रकार शुद्ध मुहूर्त होने पर वर्ष मास, दिन या अशुभ लग्न का दोष नहीं लगता। इसीलिए महर्षियों ने समस्त कार्यों में मुहूर्तं-

१. वर्ष मासों दिनं लग्नं मुहूर्तश्चेति पञ्चकम्।

कालस्यागानि मुख्यानि प्रबलान्युत्तरोत्तरम् ॥

लग्नं दिनभवं हन्ति मुहूर्तः सर्वदूषणम् ।

लग्नं शुद्धि मुहूर्तस्य सर्वकार्येषु शस्यते ॥

११

|   |  |
|---|--|
| २५१. वार दोष निवारण १०२                       | २७८. शनि चरण ११४                       |
| २५२. समय शूल १०२                              | २७९. शनि वाहन ११४                      |
| २५३. काल राहु १०२                             | २८०. शनि-दोष-परिहार ११५                |
| २५४. चन्द्रवास १०३                            | २८१. राहु केतु विचार ११५               |
| २५५. तिथि-दोष-परिहार १०३                      | २८२. सर्वोपयोगी मुहूर्त ११६            |
| २५६. वारानुसार ग्राह्य<br>शुभ समय १०३         | २८३. रोग मुहूर्त ११६                   |
| २४७. तारा विचार १०४                           | २८४. रोग निनाड़ी ११६                   |
| २५८. धात नक्षत्र १०४                          | २८५. सर्वकष्ट मुहूर्त ११७              |
| २५९. लग्न समय १०५                             | २८६. रोगशांति उपचार ११७                |
| २६०. होमाद्विति मुहूर्त १०५                   | २८७. औषधि सेवन मुहूर्त ११८             |
| २६१. शूल निवास १०६                            | २८८. शल्य किया मुहूर्त ११८             |
| २६२. संक्रान्ति नाम १०६                       | २८९. आरोग्य स्नान मुहूर्त ११९          |
| १६३. मूलाश्लेषा जन्मकल १०६                    | २९०. शांति कार्य मुहूर्त ११९           |
| २६४. ग्रह कार्यबल १०७                         | २९१. अनुष्ठान मुहूर्त ११९              |
| २६५. रामायण भागवत<br>पुराण कथारंभ मुहूर्त १०७ | २९२. पूर्णाद्विति मुहूर्त ११९          |
| २६६. मशीनीरी चालू करने<br>का मुहूर्त १०७      | २९३. अखिल धार्मिक<br>कार्य मुहूर्त १२० |
| २६७. लग्न कर्त्तव्य १०८                       | २९४. स्वप्न विचार १२०                  |
| २६८. सूर्य विचार १०९                          | २९५. शुभस्वप्न १२०                     |
| २६९. चंद्रविचार १०९                           | २९६. अशुभ स्वप्न १२१                   |
| २७०. चंद्रनिर्वल उपचार १११                    | २९७. अशुभ स्वप्न परिहार १२२            |
| २७१. भौम विचार १११                            | २९८. शुक्र १२२                         |
| २७२. बुद्ध विचार १११                          | २९९. शुभ शुक्र १२२                     |
| २७३. गुरु विचार ११२                           | ३००. अपशुक्र १२३                       |
| २७४. शुक्र विचार ११२                          | ३०१. छींक १२४                          |
| २७५. शनि विचार ११२                            | ३०२. दिशानुसार छींक फल १२५             |
| २७६. बृहद् पनीती ११३                          | ३०३. छींक परिवाद १२५                   |
| २७७. लघु पनीती ११४                            | ३०४. स्वर विज्ञान १२५                  |
|   | ३०५. वारानुसार स्वर-<br>महता १२६       |
|   | ३०६. जानिमे अग्निवास १२६(५)            |

शुद्धि देखने की आज्ञा दी है।

**मुहूर्त क्या है?**

दिन और रात्रि में कुल तीस मुहूर्त होते हैं, इनमें पन्द्रह मुहूर्त दिन में तथा पन्द्रह मुहूर्त रात्रि में होते हैं, अतएव दिनमान को बराबर पन्द्रह भागों में बाँटने से एक मुहूर्त की अवधि ज्ञात हो जाती है।

उदाहरणार्थ दिनमान ३०।१५ है, इसमें पन्द्रह का भाग दिया तो एक इकाई २।१ आई, अर्थात् एक मुहूर्त की अवधि उस दिन २ घटी १ पल है। यह तो स्पष्ट ही है कि एक घटी बराबर चौबीस मिनटों की होती है, तथा एक पल का तात्पर्य चौबीस सैकण्ड होता है। इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरण-मुहूर्त की अवधि ४८ मिनट २४ सैकण्ड स्पष्ट हुई।

इसी प्रकार रात्रिमान को भी पन्द्रह भागों में बाँटने से रात्रि के एक मुहूर्त की अवधि ज्ञात हो जाती है।

### दिवस-मुहूर्त

नीचे दिन के पन्द्रह मुहूर्त, उनके स्वामी तथा मुहूर्त-स्वामियों के नक्षत्र दिये जा रहे हैं। जिस कार्य के लिए जो नक्षत्र स्पष्ट है, उसी नक्षत्र के मुहूर्त में कार्यारम्भ अनुकूल रहता है—

### मुहूर्त संस्था

|    | मुहूर्त स्वामी | नक्षत्र     |
|----|----------------|-------------|
| १  | गिरीश          | आद्रा       |
| २  | भुजग           | इलेषा       |
| ३  | मित्र          | अनुराधा     |
| ४  | पितृ           | मधा         |
| ५  | वसु            | धनिष्ठा ?   |
| ६  | अम्बु          | पूर्वाषाढ़ा |
| ७  | विश्वदेव       | उत्तराषाढ़ा |
| ८  | अभिजित्        | अभिजित्     |
| ९  | विद्याता       | रोहिणी      |
| १० | इन्द्र         | ज्येष्ठा    |
| ११ | इन्द्रानन्द    | विशाखा      |
| १२ | निष्ठाति       | मूल         |
|    | १२             |             |

१३

१४

१५

इसी प्रकार रात्रि-मुहूर्त, स्वामी व संबंधित नक्षत्र स्पष्ट

किया जा रहा है—

### रात्रि-मुहूर्त

|    |              |              |
|----|--------------|--------------|
| १  | शिव          | आद्रा        |
| २  | अजेकपाद      | पूर्वाषाढ़पद |
| ३  | अहिर्बुध्न्य | उत्तराषाढ़पद |
| ४  | पूषा         | रेवती        |
| ५  | अश्विनी      | अश्विनी      |
| ६  | यम           | भरणी         |
| ७  | अग्नि        | कृत्रिका     |
| ८  | घातृ         | रोहिणी       |
| ९  | शशाभूद्      | मृग          |
| १० | अदिति        | पुनर्वंशु    |
| ११ | जीव          | पुष्य        |
| १२ | विष्णु       | श्रवण        |
| १३ | सूर्य        | हस्त         |
| १४ | विश्वकर्मा   | चित्रा       |
| १५ | पवन          | स्वाती       |

### अभिजिन्मुहूर्त

कुछ विद्वान् इसे “विजय मुहूर्त” कहते हैं, जो कि दिन का आठवाँ मुहूर्त होता है।

सूर्य जब ठीक सिर पर हो, अर्थात् मध्याह्न के पौने बारह बजे से साढ़े बारह बजे तक के समय को “अभिजिन्मुहूर्त” या “विजय मुहूर्त” कहा जाता है। ‘नारद पुराण’ ने इस मुहूर्त का समय दोपहर ११-३६ से १२-२५ तक माना है। विद्वानों ने सूर्योदय से बाद के चतुर्थ उत्तर को ‘अभिजित् लग्न’ या “विजय लग्न” माना है।

अभिजिन्मुहूर्त में किये गए कार्य हमेशा सफल होते हैं,

१३

चाहे और कितने ही दोष क्यों न हों। अभिजिन्मुहूर्त समय या 'अभिजित् लग्न' उन समस्त दोषों का नाश कर देता है।<sup>१</sup>

### प्रदोष

चतुर्थी के प्रथम तीन घंटे, सप्तमी के प्रथम साढ़े चार घंटे तथा त्रयोदशी के अंतिम छः घंटे (या दोपहर) का समय प्रदोष कहलाता है।

यह समस्त शुभ कार्यों में वर्जित है।<sup>२</sup>

कुछ विदानों के अनुसार सदैव सूर्यास्त के बाद तीन मुहूर्त (अर्थात् ३ घंटे २४ मिनट) प्रदोष-समय कहलाता है—  
त्रि मुहूर्तः प्रदोषः स्याद् रवावस्तं गते सति ॥

—स्कंद पुराण

### क्षणतिथि

तिथिमान के पन्द्रहवें भाग का क्षणतिथि कहा जाता है। उदाहरणार्थ तिथिमान ६० है, तो पन्द्रह का भाग देने से क्षणतिथिमान चार घटी होगा।

जो तिथि होगी, प्रथम क्षणतिथि भी वही होगी। उदाहरणार्थ अष्टमी को सूर्योदय के बाद प्रथम चार घटी—(१घंटा ३६ मिनट तक) तक अष्टमी क्षणतिथि होगी, फिर नवमी-दशमी आदि।

जिस कार्य के लिए जो तिथि ग्राह्य हो, वह कार्य किसी भी तिथि के 'क्षणतिथि' में भी किया जा सकता है, और जो कार्य वर्जित है, वह 'क्षणतिथि' में भी वर्जित समझना चाहिए।

### संवत्सर

कुल संवत्सर साठ हैं, जिनका क्रमशः नाम इस प्रकार है—

१. दिन मध्यगते सूर्ये मुहूर्ते ह्यभिजित्रभुः ।  
चक्रपादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्तिकृत्ततिः ॥

—ज्योतिष सार संग्रह

२. चतुर्थी प्रथमे यामे सार्द्द्यामे च सप्तमी ।  
यामद्वये त्रयोदश्यां प्रदोषः सर्वधायकः ॥

—पीयूषधारा

|    |           |    |          |    |              |
|----|-----------|----|----------|----|--------------|
| १  | प्रभव     | २१ | सर्वजित् | ४१ | प्लवग        |
| २  | विभव      | २२ | सर्वधारी | ४२ | कीलक         |
| ३  | शुक्ल     | २३ | विरोधी   | ४३ | सौम्य        |
| ४  | प्रमोद    | २४ | विकृति   | ४४ | साधारण       |
| ५  | प्रजापति  | २५ | खर       | ४५ | विरोधकृत्    |
| ६  | अंगिरा    | २६ | नन्दन    | ४६ | परिधावी      |
| ७  | श्रीमुख   | २७ | विजय     | ४७ | प्रमादी      |
| ८  | भाव       | २८ | जय       | ४८ | आनन्द        |
| ९  | युवा      | २९ | मन्मथ    | ४९ | राक्षस       |
| १० | धाता      | ३० | दुर्गुख  | ५० | नल           |
| ११ | ईश्वर     | ३१ | हेमलम्ब  | ५१ | पिगल         |
| १२ | बहुधान्य  | ३२ | विलम्ब   | ५२ | कालयुक्त     |
| १३ | प्रमाथी   | ३३ | विकारी   | ५३ | सिद्धार्थी   |
| १४ | विक्रम    | ३४ | शार्वरी  | ५४ | रौद्र        |
| १५ | वृष       | ३५ | प्लव     | ५५ | दुर्मति      |
| १६ | चित्रभानु | ३६ | शुभकृत्  | ५६ | दुर्द्वभि    |
| १७ | सुभानु    | ३७ | शोभन     | ५७ | रुधिरोद्गारी |
| १८ | तारण      | ३८ | क्रोधी   | ५८ | रक्ताक्षी    |
| १९ | पार्थिव   | ३९ | विश्ववसु | ५९ | क्रोधन       |
| २० | व्यय      | ४० | पराभव    | ६० | क्षय         |

वर्तमान संवत् में १० जोड़कर ६० का भाग देने से जो शेष बचे, उसी के तुल्य संवत् का नाम या संवत्सर जानना चाहिए—

उदाहरणार्थ संवत्  $20\frac{3}{4} + 10 = 20\frac{3}{4} = 20\frac{3}{4} \div 60$ , भागफल ३३, शेष ५६, श्रतः ५६ के संवत्सर यानी २०२६ का नाम क्रोधन या इस वर्ष 'क्रोधन संवत्सर' होगा।

### संवत्सर-स्वामी

संवत्सर में ५ का भाग दो, लिखि में १ जोड़ने से उसके तुल्य संवत्सर-स्वामी समझना चाहिए।

स्वामीक्रम इस प्रकार है—

|   |            |    |             |
|---|------------|----|-------------|
| १ | विद्यु     | ७  | पितर        |
| २ | बूहस्पति   | ८  | विश्वदेवा   |
| ३ | इन्द्र     | ९  | चन्द्र      |
| ४ | वर्षि      | १० | इन्द्रागिनि |
| ५ | विश्वकर्मा | ११ | अश्विनी     |
| ६ | अहिरुद्ध्य | १२ | भग          |

उदाहरणार्थ संवत् २०२६ 'क्रोधन संवत्सर' था, जिसका क्रम ५६ है। ५६ में ५ का भाग दिया, लविष्ट ? हुई, ११ में १ जोड़ा तो १२ हुए, अतः बारहवाँ स्वामी इन्द्र अर्थात् संवत् २०२६ या क्रोधन संवत्सर के स्वामी "भग" सिद्ध हुए।

### संवत्सर-फल

वर्तमान संवत्सर-संख्या को दो से गुणा करो, तुणनफल में से तीन घटाकर ७ का भाग दें, शेष तुल्य संवत्सर-फल समझना चाहिए—

|         |           |   |           |
|---------|-----------|---|-----------|
| ०       | पीड़ा     | १ | दुर्भिक्ष |
| २       | सुभिक्ष   | ३ | मध्यम     |
| ४       | दुर्भिक्ष | ५ | सुभिक्ष   |
| ६ मध्यम |           |   |           |

पूर्व उदाहरण सावत् २०२६ का क्रोधन संवत्सर-क्रम ५६ था।  $56 \times 2 = 112 - 3 = 115 \div 7 =$  भागफल १६ एवं शेष ३, अतः यह संवत्सर मध्यम ही रहेगा।

### ऋतु

बेषादि प्रत्येक हो रखियों पर सूर्य का संक्रमणकाल "ऋतु" कहलाता है। इस प्रकार एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं—१. वसन्त २. ग्रीष्म ३. वर्षा ४. शरद् ५. हेमन्त और ६. शिशिर। इनमें प्रथम तीन ऋतुएँ "दैवी ऋतुएँ" कहलाती हैं और अन्तिम तीन ऋतुएँ "पितर ऋतुएँ" कहलाती हैं।

१. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा। ते देवाऽऋतवः शरद्वेमन्तः शिशिरस्ते पितरः।

१६

—शतपथ ब्राह्मण

सु०-१५४

|         |              |                 |
|---------|--------------|-----------------|
| ऋतुएँ   | सौरमास       | चान्द्रमास      |
| वसन्त   | सीन, सेष     | चैत्र, वैशाख    |
| ग्रीष्म | वृष्ट, मिथुन | ज्येष्ठ, आषाढ़  |
| वर्षा   | कर्क, सिंह   | श्रावण, भाद्रपद |
| शरद्    | कन्या, तुला  | आश्विन, कार्तिक |
| हेमन्त  | वृश्चिक, धनु | मार्गशीर्ष, पौष |
| शिशिर   | मकर, कुम्भ   | माघ, फाल्गुन    |

### अयन

अयन दो हैं—उत्तरायन एवं दक्षिणायन।

१. उत्तरायन (Summer Solstice) इसे सौम्यायन भी कहते हैं, तथा यह देवताओं का दिन माना जाता है। इस अयन में नृतन गृहप्रवेश, उद्यान, देवकार्य, प्रतिष्ठा, यज्ञोऽवीत आदि कार्य करने शुभ माने गये हैं।

२. दक्षिणायन (Winter Solstice) —यह समय देवताओं की रात्रि मानी जाती है। इस अयन में पौढ़प संस्कार एवं मार्गलिक कार्य वर्जित हैं, पर देवों, मातृ, भैरव, देवी आदि का पूजन करने से दोष शान्त हो जाता है।

### मास

चार प्रकार के मास विद्वानों के मतभेदानुसार हैं—

#### १. सौर मास

एक राशि पर सूर्य जितने काल तक ठहरता है, वह सौर मास कहलाता है। सामान्यतः यह सौर मास ३० दिन ६ घंटे ५७ मिनट का होता है। विवाह, उपनयन, पौड़श संस्कारादि का विचार सौर मास के अनुसार ही किया जाता है।

#### चान्द्र मास

शुक्ला प्रतिपदा से अमावस्या तक का समय चान्द्र मास कहलाता है, इसकी अवधि २६ दिन २२ घंटे के लगभग

#### २. वसन्तस्वेतवैशाखो ज्येष्ठाषाढ़ी च ग्रीष्मकौ।

वर्षा श्रावणभाद्राम्यां शरदाश्विन कार्तिकौ।  
मार्गपौषो च हेमन्तः शिशिरो माघफाल्गुनी।

—गोरक्ष संहिता

१७

होती है।

यज्ञादि, श्राद्ध, व्रतोपचास आदि का वाधार चान्द्र मास ही होता है।

### ३. सावन मास

एक दिन-रात में २४ घंटे मानकर ३० दिन-रातों की अवधि को सावन मास कहा जाता है। सम्पत्ति-विभाजन, लेन-देन, ब्याज, प्रायशिक्ति आदि कार्य में इसी मास को प्रधानता दी जाती है।

### ४. नाक्षत्र मास

अश्विनी नक्षत्र से रेती नक्षत्र के अन्त तक के सूर्य-भ्रमण की अवधि को नाक्षत्रमास कहा जाता है। नक्षत्रशांति, जलपूजन आदि कार्यों में इसी मास को प्रधानता दी जाती है।

### क्षय मास, अधिक मास

सौर वर्ष का मान ३६५ दिन १५ घटी ३१ पल ३० विपल तथा चन्द्र वर्षमान ३५४ दिन २२ घटी १ पल २३ विपल है, एतदर्थ इन दोनों में अन्तर १० दिन ५३ घटी ३० पल ७ विपल वा प्रतिवर्ष रहता है। इन दोनों वर्षों के सामंजस्य हेतु हर तीसरे वर्ष एक अधिक मास तथा १४१ वर्षों बाद तथा फिर १६ वर्षों के बाद क्षय चान्द्र मास की व्यवस्था की है।

जिस चान्द्रमास में स्पष्ट सूर्य-संक्रान्ति न हो वह "अधिक मास" तथा जिस चान्द्रमास में दो सूर्य-संक्रान्तियाँ हों वह "क्षय मास" कहलाता है।

अधिकमास और क्षयमास को "मलमास" की सज्जा भी दी गई है।

क्षयमास केवल कार्तिक, मार्गशीर्ष एवं पौष मास में ही होता है, तथा उसी वर्ष अधिक मास भी होता है जोकि फालुन से कार्तिक के बीच होता है—।

### १. क्षयः कार्तिकादि व्रये नान्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिभास द्वयं च'

### मलमास में कार्य

सन्ध्या, पूजन, नित्यकर्म, रोगशान्ति, गर्भधान, पुंसवन, श्राद्ध, सपिण्डीकरण, दैनिक दान, सत्कार, स्नान एवं राज्यकार्य शास्त्रसम्मत है।

### मलमास में वर्जय कार्य

वार्षिक श्राद्ध, कन्यादान, अन्याधान, यज्ञ, तीर्थयात्रा, जलाशय, कूप-निर्माण, प्रतिष्ठा, नामकरण, उपनयन, राज्याभिषेक, व्रतारंभ, व्रतोद्यापन, गृहारंभ, गृहप्रवेश, विवाह, वधुप्रवेश, दुर्गस्थापन-उत्थापन आदि कार्य मलमास में वर्जय है।

### जन्म मास

जन्मदिन से आगे के तीस दिनों तक की अवधि को जन्ममास कहा जाता है। कुछ विद्वान् जिस चैत्रादि मास में जन्म हो, उस मास की पूर्णिमा तक की तिथि-अवधि को 'जन्म मास' संज्ञा देते हैं।

जन्म-मास में चूड़ाकरण, यात्रा, कर्णवेद्ध आदि वर्जित हैं पर जप, दान विवाह एवं शुभ कार्यों के लिए शुभद माना है।

जन्म मास के अन्तर्गत मतान्तर से मांगलिक कार्य सम्पदन के लिए वसिष्ठ ने केवल जन्मदिन, गर्ग ने जन्मदिन से आगे आठ दिन तक, अत्रि ऋषि ने दस दिन तक तथा भूगु ने जन्मपक्ष को ही वर्जित एवं शुभ कार्यों के लिए दूषित माना है।<sup>१</sup>

### पक्ष

प्रत्येक मास में दो पक्ष होते हैं। पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से अमावस्या तक कृष्ण पक्ष एवं अमावस्योत्तर प्रतिपदा से

#### १. (क) स्नानं दानं तपो होमः सर्वमांगल्य वर्द्धनम् ।

उद्धाहरश्च कुमारीणां जन्म मासे प्रशयस्ते ॥

—श्रीपती समुच्चय

(ख) जन्मनि मासि विवाहः शुभदो ।

—पीयुषधारा

#### २. जातं दिनं दूषयते वसिष्ठो, ह्यष्टौ च गर्गो नियतं दशात्रिः ।

जातस्य पक्षं विकलं भागुरिश्च शेषाः प्रशस्ताः खलु जन्ममासः ।

—राजमार्तण्ड

पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष कहलाता है।

शुक्ल पक्ष में समस्त देव-कार्य एवं कृष्ण पक्ष में पितर-कार्य करना ऋष्यादेश है।

एक पक्ष पन्द्रह तिथियों का होता है, पर तिथि में क्षय वृद्धि से सौलह, चौदह या-तेरह दिन का भी पक्ष हो जाता है। जिस पक्ष में दो क्षय तिथियाँ हों, वह पक्ष समस्त शुभ कार्यों के लिए वर्ज्य है।<sup>१</sup>

#### तिथि

अमावस्या को सूर्य चन्द्रमा का संगम होने के बाद जब चन्द्रमा सूर्य से  $12^{\circ}$  दूर चला जाता है, तब तक प्रतिपदा रहती है। इसी प्रकार चन्द्र बढ़ते-बढ़ते जब  $15^{\circ}$  तक पहुँच जाता है, तब पूर्णिमा होती है। फिर चन्द्रमा सूर्य के निकट जाने लगता है, एवं उसकी कलाएँ क्षीण होने लगती हैं, इन्ततोगत्वा अमावस्या तक पहुँचते-पहुँचते वह पूर्णतः सूर्य की राशियों में लिली हो जाता है।

अमावस्या के तीन भेद हैं—

१. सिनीवाली—जो प्रातः से रात्रि पर्यन्त रहे।

२. दर्श—चतुर्दशी जो विद्व हो।

३. कुहू—प्रतिपदा से विद्व।

पूर्णिमा के भी दो भेद हैं—

१. अनुमति—चतुर्दशी से युक्त हो।

२. राका—प्रतिपदा से संबंधित हो।

#### तिथि संज्ञक

इसमें दोनों पक्ष शामिल हैं—

१. नंदा—१, ६, ११

नंदा तिथियों में नवीन वस्त्र पहनना, कृषिकार्य, उत्सव,

घरेलू कार्य तथा नवीन शिल्पारंभ शुभ माना गया है।

१. पक्षस्य मध्य द्वितिथि पतेतां तदा भवेद्रौरव कालयोगः।

पक्षे विनष्टे सकलं विनष्टमित्याहुराचार्यवराः समस्ताः॥

—ज्योतिस्कन्ध

२. भद्रा—२, ७, १२

भद्रा तिथियों में विवाह, उपनयन, आभूषण-कला, वाहन, यात्रादि शुभ है।

३. जया—३, ८, १३

जया तिथियों में सैन्य संचालन, सैन्य संगठन, उत्सव-यात्रा, गृहारंभ आदि शुभ माने गए हैं।

४. रिक्ता—४, ६, १४

रिक्ता तिथियों में क्रैद, शत्रुमर्दन, जहर देना, दूतकार्य, धोखा, आपरेशन आदि शुभ माने गए हैं।

५. पूर्णा—५, १०, १५

विवाह, यज्ञोपवीत, नृप-अभिषेक, उत्सव, आदिकार्य यज्ञादि पूर्णा तिथियों में शुभ माने गए हैं।

#### तिथि-भेद

##### उदयव्यापिनी

जो तिथि सूर्योदय के समय व्याप्त हो उसे उदयव्यापिनी तिथि कहते हैं। ऐसी तिथि उत्सव, विवाह, यज्ञ, प्रतिष्ठादि कार्यों में शुभ मानी गई है।

##### कर्मव्यापिनी

प्रथम पहर के बाद किसी समय समाप्त हो जानेवाली तिथि कर्मव्यापिनी संज्ञक होती है। श्राद्ध, मैथुन, जन्म-मरण आदि में इसी तिथि का उपयोग करना चाहिए।

#### रंध तिथियाँ

किसी भी प्रकार के शुभ कार्य के लिए रंध तिथियाँ चर्जित हैं। ये तिथियाँ दोनों पक्षों की मानी गई हैं—

तिथि

घटी तक

४

८ घटी तक

६

६ घटी तक

८

१४ घटी तक

६

२५ घटी तक

१२

१४

१० घटी तक  
५ घटी तक

## द्वज्य तिथियाँ

कुछ विद्वान् इन्हें 'पर्व तिथियाँ' भी कहते हैं। समस्त शुभ कार्यों में इन तिथियों का प्रयोग निषेध है—

- (क) कृष्ण पक्ष की अष्टमी
- (ख) कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी
- (ग) अमावस्या
- (घ) पूर्णिमा
- (ङ) सूर्य संकांचि की तिथि

## अशुभ तिथियाँ

मांगलिक कार्यों में यथासंभव इन तिथियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए—

- (क) चतुर्थी (कृष्णपक्ष)
- (ख) सप्तमी, अष्टमी, नवमी (कृष्णपक्ष)
- (ग) १३, १४, अमावस्या व शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा

पर देवी-कार्य या नवरात्रि में शुक्ल प्रतिपदा को शुभ माना है।

## शून्य तिथियाँ

समस्त शुभ कार्यों में इन शून्य तिथियों का त्याग ही शास्त्रसम्मत है—

| मास        | पक्ष           | तिथियाँ       |
|------------|----------------|---------------|
| चैत्र      | दोनों पक्ष     | ६             |
| वैशाख      | "              | १२            |
| ज्येष्ठ    | शुक्ल पक्ष १३, | कृष्ण पक्ष १४ |
| आषाढ़      | शुक्ल पक्ष ६,  | कृष्ण पक्ष ७  |
| श्रावण     | दोनों पक्ष     | २, ३          |
| भाद्रपद    | "              | १, २          |
| आश्विन     | "              | १०, ११        |
| कार्तिक    | शुक्लपक्ष १४   | कृष्ण पक्ष ५  |
| मार्गशीर्ष | दोनों पक्ष     | ७, ८          |

२२

पौष दोनों पक्ष ४, ५

माघ शुक्ल पक्ष ५, कृष्ण पक्ष ६  
फाल्गुन शुक्ल पक्ष ३, कृष्ण पक्ष ४

## युगादि तिथियाँ

सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग व कलियुग जिन तिथियों से प्रारम्भ हुआ है, युग तिथियाँ कहलाती हैं। शुभ कार्यों में इनका प्रयोग निषेध है—

- (क) सत्ययुग कार्तिक शुक्ला ६
- (ख) त्रेतायुग वैशाख शुक्ला ३
- (ग) द्वापरयुग माघ कृष्णा १५
- (घ) कलियुग श्रावण कृष्णा १३

## क्षय-वृद्धि तिथियाँ

जो तिथि क्षय या वृद्धिगत हो, उस दिन किये गये समस्त शुभ कार्य उसी प्रकार भस्म हो जाते हैं, जिस प्रकार अग्नि में सूखा इंधन।

## तिथि-स्वामी

जिन तिथियों के जो स्वामी हैं, उन स्वामी देवताओं से सम्बन्धित कार्य उन्हीं से सम्बन्धित तिथियों में करने से पूर्ण फल मिलता है—

| तिथि | स्वामी  |
|------|---------|
| १    | अग्नि   |
| २    | ब्रह्मा |
| ३    | गौरी    |
| ४    | गणेश    |
| ५    | सर्प    |
| ६    | स्कंद   |
| ७    | सूर्य   |

१. केन्द्रे चैत्र त्रिकोणे च शुभो ह्य पञ्चयेषि वा ।

एकोपि बलवांशचापि शून्यतिथ्युडु नाशक ॥

अर्थात्—केन्द्र या त्रिकोण या उपचय स्थान में शुभ एव बलवान् ग्रह हो तो शून्य तिथि-दोष समाप्त हो जाता है।

२३

|    |          |
|----|----------|
| ५  | शिव      |
| ६  | दुर्गा   |
| १० | यम       |
| ११ | विश्वदेव |
| १२ | विष्णु   |
| १३ | कामदेव   |
| १४ | शिव      |
| १५ | चन्द्र   |
| ३० | पितर     |

### तिथियों में करने योग्य कार्य

#### १. प्रतिपदा

प्रतिपदा में मात्र कृष्णा प्रतिपदा को यात्रा, सप्तनयन, विवाह, प्रतिष्ठा या गृहारंभ, प्रवेश, शांतिक कार्य शुभ है।

#### २. द्वितीया

सेनाप्रयाण, सैन्यसज्जा, युद्ध, प्रतिष्ठा, विवाह, आभूषण।

#### ३. तृतीया

संगीत, वाच, कलाकार्य-शिक्षा, अन्तप्राशन, गृहप्रवेश।

#### ४. चतुर्थी

विद्युत से संबंधित कार्य, विजली की दुकान का मुहर्त, वध दूषित कार्य।

#### ५. पञ्चमी

समस्त शुभ कार्य करें, पर क्रृष्ण नहीं देना चाहिए। लेन-देन उधारी वर्ज्य।

#### ६. षष्ठी

युद्धकार्य, गृहारंभ, शुभकार्य। पर पितृकर्म, काष्ठ कर्म एवं यात्रा वर्ज्य है।

#### ७. सप्तमी

विवाह, संगीत, यात्रा, गृहप्रवेश, वध-आमंत्रण, तथा द्वितीया को किये जानेवाले कार्य।

#### ८. अष्टमी

युद्ध, शिल्प, लेखन, सनोरंजन, रत्नपरीक्षा, शास्त्रधारण।

२४

### ६. नवमी

जुबा, मद्य-निर्माण, आखेट।

#### १०. दशमी

२, ३, ५, एवं सप्तमी के कार्य।

#### ११. एकादशी

त्रितोपवास, उपनयन, देवकार्य, गेहूरंभ, गमन।

#### १२. द्वादशी

मांगलिक कार्य, पाणिग्रहण, उपनयन आदि, परन्तु नूतन गृहारंभ या प्रवेश और यात्रा वर्ज्य है।

#### १३. त्र्योदशी

२, ३, ५, ७, १० को किये जानेवाले कार्य।

#### १४. चतुर्दशी

शास्त्रधारण, युद्धादि कार्य। यात्रा वर्ज्य है।

#### १५. पूर्णिमा

विवाह, देवकार्य, मंदिर-प्रतिष्ठा, याज्ञिक शांति आदि।

#### ३०. अमावस्या

पितृकर्म, दान। शुभकर्म वर्ज्य।

#### विषतिथि-घटी

निम्न विषतिथि-घटियों में किसी भी प्रकार का शुभ एवं मांगलिक कार्य पूर्णतः वर्ज्य है, यह समय 'दुष्ट फलदा' कहा जाता है।

| तिथि | घटी से | घटी तक |
|------|--------|--------|
| १    | १५     | १६     |
| २    | ५      | ६      |
| ३    | ८      | १२     |
| ४    | ७      | ११     |

१. विवाह त्रत चूडाशु गृहारंभ प्रवेशयो।

यात्रादि शुभ कार्येषु विज्ञदा विषनाडिकः ॥१॥

—ज्योतिःसार

२५

|           |    |    |
|-----------|----|----|
| ५         | ७  | ११ |
| ६         | ८  | ८  |
| ७         | ९  | ९  |
| ८         | १० | १२ |
| ९         | ११ | ११ |
| १०        | १० | १४ |
| ११        | ३  | ७  |
| १२        | १३ | १७ |
| १३        | १४ | १८ |
| १४        | ७  | ११ |
| १५ एवं ३० | ८  | १२ |

ऊपर घटीमान-तिथि को ६० घटी मानकर दिया है। प्रत्येक विष घटी ४ घटी होती है, अतः तिथिमान के न्यूनाधिक होने पर विषघटी में भी उसी के अनुपात से न्यूनाधिक समझना चाहिए—

उदाहरणार्थ यदि प्रतिपदा ६० घटी हो तो विषघटी उस दिन १५ घटी से १६ घटी तक रहेगी, पर यदि प्रतिपदा ६१ घटी हो तो उस दिन विषघटी १६ घटी से २० घटी तक होगी, या यदि प्रतिपदा ५८ घटी रहेगी, तो विषघटी उस दिन १३ घटी से १७ घटी तक रहेगी।

### विषघटी-दोष-परिहार

कर्मकाल में लग्नकुण्डली बनाने पर यदि चन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोण में रहे, अथवा लग्नेश स्वगृही शुभमित्र इष्ट होकर केन्द्र त्रिकोणस्थ हो तो विषघटी दोष नहीं लगता ।

१. चन्द्रो विषघटी दोषं हन्ति केन्द्रः त्रिकोणः ।  
लग्न विना शुभैष्टः केन्द्रे वा लग्नपस्तथा ॥

—दैवज्ञ मनोहर

विषनाइयुतिथर्तं दोषं हन्ति सौम्यर्क्षणः शशी ।  
मित्रइष्टोऽव्यास्ता स्वीय वर्गस्पो लग्नपो भवेत् ॥

—फल प्रदीप

### वार

वार का प्रारंभ सूर्योदय से ही समझना चाहिए, परन्तु स्नान-सत्यादि में अर्धरात्रि के उपरान्त संकल्प में अग्रिम वार का ही (सूर्योदय के समय होनेवाले वार का) उल्लेख करना चाहिए।

वारों के अधिपति इस प्रकार हैं—

### वाराधिपति

|  |         |
|--|---------|
| वार  | देवता   |
| रविवार   | शिव     |
| सोमवार   | पार्वती |
| मंगलवार  | कातिकेय |
| बुधवार   | विष्णु  |
| गुरुवार  | ब्रह्मा |
| शुक्रवार   | इन्द्र  |
| शनिवार   | काल     |
| विभिन्न देवताओं की पूजा उनके स्वयं के वारों में ही करना शुभ माना गया है। |         |

### वार-दोष

रवि, गुरु और शुक्रवार का प्रभाव रात्रि में नगण्य एवं सोम, मंगल, शनिवार का प्रभाव दिन में नगण्य रहता है। बुधवार अपना फल सर्वदा प्रदर्शित करता है।

### वार-दोष-परिहार

वारों की अशुभता को शुभता में परिवर्तित करने के लिए निम्न प्रयोग शास्त्रसम्मत हैं—

|          |                  |
|----------|------------------|
| रविवार   | ताम्बूल-भक्षण    |
| सोमवार   | चन्दन-प्रयोग     |
| मंगलवार  | पुष्प-प्रयोग     |
| बुधवार   | बुधमंत्र उच्चारण |
| गुरुवार  | शिव-पूजन         |
| शुक्रवार | श्वेत वस्त्रधारण |
| शनिवार   | विप्र-सम्मान     |

## वारों के अनुसार किये जानेवाले कार्य रविवार

यह ध्रुव एवं स्थिरसंज्ञक है। राज्याभिषेक, ललित कला-सीखना, राज्यसेवा, पशुक्रय, औषधि-निर्माण, धातु कार्य, यज्ञादि, मंत्रोपदेश आदि कार्य शुभ माने गये हैं।

### चन्द्रवार

चर एवं चलसंज्ञक। आभूषण-निर्माण, वाटिका-संगीत-नृत्य कलारंभ, धर्म-क्रय-विक्रय, कृषिकार्य आदि शुभ हैं।

### मंगलवार

उग्र एवं कूरसंज्ञक। विष देना, अग्निदाह, संघिविच्छेद, छल करना, असत्य बोलना आदि।

### बुधवार

मिथ एवं साधारण संज्ञक। साहित्यारंभ, संगीत कलारंभ, लेखन-कार्य, पाणिग्रहण, धात्य-संग्रहादि।

### गुरुवार

लघु एवं क्षिप्र। यज्ञ, हवन, प्रतिष्ठा, देवार्चन, नवग्रह-पूजन, धार्मिक कार्य, विद्यारंभ-नवीन वस्त्रधारण, वाहन घर में लाना, गौषधि-संग्रह एवं अलंकार-धारण।

### शुक्रवार

नृत्य-वाद्य-गीत-कलारंभ, स्त्रीसंसर्ग, धन-सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र-भूषण धारण, कृषिकार्य।

### शनिवार

दारुण एवं तीक्ष्ण संज्ञक। अस्त्र-शस्त्र धारण, नवीन गृह-प्रवेश, विषदान, असत्यभाषण, पशुक्रय-विक्रय, काष्ठकर्म आदि-शुभ माने गये हैं।

### वार विषघटी

समस्त शुभ एवं मांगलिक कार्यों में वार विषघटी का त्याग करना चाहिए—

| वार    | घटी से | घटी तक |
|--------|--------|--------|
| रविवार | २०     | २४     |
| सोमवार | २      | ६      |
|        | २८     |        |

|          |    |    |
|----------|----|----|
| मंगलवार  | १२ | १६ |
| बुधवार   | १० | १४ |
| गुरुवार  | ७  | ११ |
| शुक्रवार | ५  | ६  |
| शनिवार   | २५ | २६ |

### वार-त्रिभाजन

दिनमान में ३ का भाग देने से प्रथम भाग पूर्वाह्न, द्वितीय भाग मध्याह्न तथा तृतीय भाग अपराह्न कहलाता है।

पूर्वाह्न में सन्ध्या, देवकार्य, यज्ञादि प्रारम्भ। मध्याह्न में अतिथि-सत्कार, व्यावहारिक कार्य। अपराह्न में षितृकार्य, श्रद्धादि कार्य करने चाहिए।

### यामार्द्ध

दिनमान में आठ का भाग देने से अष्टमांश को यामार्द्ध कहा जाता है। यामार्द्ध में किसी भी प्रकार का शुभ कार्य सर्वथा वर्ज्य है—

| वार         | यामार्द्ध |
|-------------|-----------|
| रविवार      | ४,५       |
| सोमवार      | २,७       |
| भौमवार      | २,६       |
| बुधवार      | ३,५       |
| बृहस्पतिवार | ७,८       |
| शुक्रवार    | ३,४       |
| शनिवार      | १,६,८     |

उदाहरणार्थ दिनमान ३२१ है, इसमें ८ का भाग दिया तो एक इकाई ४। १ अर्थात् ४ घटी १ पल हुई। इस प्रकार रविवार को चौथी तथा पांचवीं इकाई यामार्द्ध कही जायेगी।

### कालवेला-कालरात्रि

जिस प्रकार शुभकार्यों में यामार्द्ध त्याज्य है, उसी प्रकार कालवेला एवं कालरात्रि का भी त्याग करना चाहिए—

| वार    | कालवेला | कालरात्रिवेला |
|--------|---------|---------------|
| रविवार | ५       | ६             |

|          |     |     |
|----------|-----|-----|
| सोमवार   | २   | ४   |
| मंगलवार  | ६   | ३   |
| बुधवार   | ३   | ७   |
| गुरुवार  | ७   | ५   |
| शुक्रवार | ४   | ३   |
| शनिवार   | १,८ | १,८ |

कालवेला में यात्रा करने से यात्रा करने वाले की मृत्यु, विवाह करने से शीघ्र वैधव्य तथा यज्ञोपवीत करने से ब्रह्महत्या लगती है।<sup>१</sup>

### कुलिक, काल, यमकंटक कष्टक

ये चारों ही दुष्प्रभावक हैं, तथा इनका त्याग आवश्यक है—

| वार      | कुलिक | काल | यमकंटक | कष्टक |
|----------|-------|-----|--------|-------|
| रविवार   | १४    | ८   | १०     | ६     |
| सोमवार   | १२    | ६   | ५      | ४     |
| मंगलवार  | १०    | ४   | ६      | २     |
| बुधवार   | ८     | २   | ४      | १४    |
| गुरुवार  | ६     | १४  | २      | १२    |
| शुक्रवार | ४     | १२  | १४     | १०    |
| शनिवार   | २     | १०  | १२     | ८     |

पर कुलिक, काल, यमकंटक एवं कष्टक का दुष्ट प्रभाव रात्रि में नहीं रहता।<sup>२</sup>

### नक्षत्र

नक्षत्र सत्ताइस हैं, पर उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण एवं श्रवण नक्षत्र की पहली ४ घटी लेकर 'अभिजित' नक्षत्र को

१. यात्रायां मरणं काले वैधव्यं पाणिपीडने ।

त्रिते ब्रह्मवधः प्रोक्तः सर्वकर्मसु तं त्यजेत् ॥

२. निधनं प्रहराद्व तु निःस्वत्वं यमकंटके ।

कुलिके सर्वनाशः स्याद् रात्रौवेते न दोषदाः ॥

—जातक दीपक

—पीयूषधारा

माना है, यह नक्षत्र लगभग १६ घटी का होता है, तथा अभिजित् नक्षत्र पर चन्द्रमा (राश्यादि ६-६-४०-० से ६-१०-५३-२० तक) इतना ही रहता है।

| श्रांस० नक्षत्र  | स्वरूप तारासंख्या | स्वामी | ग्रहाधिपत्य  |
|------------------|-------------------|--------|--------------|
| १ अश्विनी        | अश्वमुख           | ३      | अश्विनीकुमार |
| २ भरणी           | योनि              | ३      | यम           |
| ३ ईंश्टिका॒र     | नापितधुर          | ६      | शुक्र        |
| ४ रोहिणी         | शक्ट              | ५      | सूर्य        |
| ५ मृगशिरा        | हिरण्यमुख         | ३      | चन्द्र       |
| ६ आर्द्रा        | मणि               | १      | मंगल         |
| ७ पुनर्वंशु      | गृह               | ४      | राहु         |
| ८ पुष्य          | बाण               | ३      | गुरु         |
| ९ आश्लेषा        | चक्राकार          | ५      | शनि          |
| १० मधा           | भवन               | ५      | बुध          |
| ११ पूर्वाफाललुनी | खाट               | २      | केऽ०         |
| १२ उत्तरा „      | शश्या             | २      | शु०          |
| १३ हस्त          | हाथ               | ५      | सू०          |
| १४ चित्रा        | मोती              | १      | चं०          |
| १५ स्वाती        | मूँगा             | १      | म०           |
| १६ विशाखा        | तोरण              | ४      | रा०          |
| १७ अनुराधा       | बलिभुक्तपुंज      | ४      | वृ०          |
| १८ ज्येष्ठा      | कुण्डल            | ३      | शा०          |
| १९ मूल           | सिंहपुच्छ         | ११     | कु०          |
| २० पूर्वाषाढ़ा   | हाथी दांत         | २      | राधस         |
| २१ उत्तराषाढ़ा   | सिंहासन           | २      | जल           |
| २२ श्रवण         | वामन              | ३      | विश्वेदेवा   |
| २३ धनिष्ठा       | मृदंग             | ४      | विष्णु       |
| २४ शतभिषा        | वृत्त             | १००    | वसु          |
| २५ पूर्वभाद्रपद  | मंच               | २      | वरुण         |
| २६ उत्तरा „      | जुड़वें पुरुष     | २      | अजपाद        |
| २७ रेवती         | मृदंग             | ३२     | अहिरुच्चा    |
|                  |                   | ३१     | पूषा         |

### नक्षत्र संज्ञा

- (१) द्वूत नक्षत्र—रो०, उ० फा०, उ० घा०, उ० भा० ।  
कार्य—प्रत्येक स्थिर कर्म, गृह प्रवेश, बीज बोना, विनायक पूजन, वस्त्र धारण, आभूषण-निर्माण, मित्रता आदि कार्य करने शुभ हैं । इन्हें स्थिर नक्षत्र भी कहा जाता है ।
- (२) चर या चल नक्षत्र—पुनर्वसु, स्वाति, अवण, धनिष्ठा, शतभिषा ।  
कार्य—वाहन, सवारी करना, उपचाटिका, पौधा लगाना, डुकान खोलना, रत्न, विद्यारंभ ।
- (३) उत्र या क्रूर संज्ञक नक्षत्र—भरणी, मधा, पू० फा०, पू० घा०, पू० भा० ।  
कार्य—अग्नि जलाना, शत्रु-मर्दन, यन्त्र-मन्त्र-तंत्र कार्य, पशु-पालन, विषपान ।
- (४) मिथ नक्षत्र—कृतिका, विशाखा ।  
कार्य—अग्नि कार्य, वृषोत्सर्ग, कैद करना, विष, भयंकर कार्य ।
- (५) क्षिप्र नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, इस्त, अभिजित ।  
कार्य—चर नक्षत्र में वर्णित सभी कार्य इसमें किये जा सकते हैं ।
- (६) मृदु नक्षत्र—मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती ।  
कार्य—गीत, ललित कार्य, वस्त्र धारण, अलंकार-सज्जा ।
- (७) तीक्ष्ण नक्षत्र—आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल ।  
कार्य—कलह, मुकदमा, घोड़ों का प्रशिक्षण, बीज बोना, शांति, यज्ञादि कार्य, संगीत शिक्षा, नवीन पोशाक ।
- (८) ऊर्ध्वमुख नक्षत्र—रो०, आ०, पुष्य, उ० फा०, उ० घा०, श्र०, धनि०, शत०, उ० भा० ।  
कार्य—गृह प्रारम्भ, विवाहादि मंगल कार्य, राज्याभिषेक, ध्वजारोहण आदि ।

### (६) ऊर्ध्वमुख नक्षत्र

भ०, कु०, श्ल०, म०, पूषा०, वि०, मू०, पूषा०, पूषा० ।  
कार्य—तालाब-खनन, गड़ा धन निकालना, ज्योतिष अध्ययन प्रारम्भ, शिल्पकला, यात्रा ।

- (१०) तिष्यं मुख नक्षत्र  
अश्विनी, मृग०, पुन०, ह०, चि०, स्वा०, अनु० ज्ये०, ई० ।

कार्य—पशु-ऋग्य-विक्रय, हल चलाना, ललित कार्य, पशु-व्यवहार, यात्रा ।

- (११) अन्ध नक्षत्र  
रो०, पु०, उफा०, विशा०, पूषा०, ध० रे० ।  
कार्य—खोई हृई वस्तु पूर्व दिशा में जायगी तथा शीघ्र मिलेगी ।

- (१२) मध्यलोचन नक्षत्र—  
भ०, आ०, म०, चि० ज्ये०, अश्वि०, पूष भा० ।  
कार्य—खोई या चोरी वस्तु परिचम दिशा की ओर ।  
पता लगने पर भी वस्तु हाथ में न आ सकेगी ।

- (१३) मन्द लोचन नक्षत्र  
अ०, मृग०, श्ल०, ह०, अनु० उषा०, शत० ।  
कार्य—खोई वस्तु उत्तर दिशा की ओर । कठिनता या विलम्ब से वस्तु प्राप्त होगी ।

- (१४) सुलोचन नक्षत्र  
कु०, पुन०, पू० फा०, स्वा०, मू०, श्र०, उ० घा० ।  
कार्य—वस्तु उत्तर दिशा की ओर । पर मिल न सकेगी ।

### नक्षत्र विषघटी

नक्षत्र विषघटी में किया गया प्रत्येक कार्य सर्वथा निष्फल जाता है—

| नक्षत्र              | घटी से | घटी तक |
|----------------------|--------|--------|
| अश्विनी              | ५०     | ५४     |
| भ०, पू०, घा०, उ० भा० | ३४     | २८     |
| कु०, पुन०, म०, रेव०  | ३०     | ३४     |

| रो०                          | ४० | ४४ |
|------------------------------|----|----|
| मू०, वि०, स्वा०, ज्य०        | १४ | १८ |
| आ० हस्त                      | २१ | २५ |
| पुष्य०, पूफा०, चित्रा०, उषा० | २० | २४ |
| आश्ले०,                      | ३२ | ३६ |
| उ० फा०, शत०                  | १८ | २२ |
| अनु०, श्र०, ध०               | १० | १४ |
| मूल                          | ५६ | ६० |
| पू० भाद्र०                   | १६ | २० |

उपर्युक्त मान नक्षत्र को ६० घटी मानकर किया है। नक्षत्रमान न्यूनाधिक होने पर विषघटी भी उसी अनुपात में न्यूनाधिक होगी।

#### मास शून्य नक्षत्र

| मास        | नक्षत्र           |
|------------|-------------------|
| चैत्र      | अरिवनी, रोहिं०    |
| वैशाख      | चि०, स्वा०        |
| ज्येष्ठ    | पुष्य०, उ० षा०    |
| आषाढ़      | पू० फा०, धनि०     |
| श्रावण     | उ० षा० श्र०       |
| भाद्रपद    | शत०, रे०          |
| आर्द्धिन   | पू० भा०           |
| कार्तिक    | कृत्तिका, मधा,    |
| भाग्यशीर्ष | चित्रा, विशाखा    |
| पौष        | आद्र०, अरिव० हस्त |
| माघ        | श्रवण, मूल        |
| फाल्गुन    | भरणी, ज्येष्ठा    |

#### पंचक नक्षत्र

धनिष्ठा का उत्तरार्द्ध, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती ये पाँच नक्षत्र (समूह) पंचक कहलाते हैं।

पंचक नक्षत्रों में समस्त शुभकार्य, गृहप्रवेश, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतकर्म, वस्त्रधारण, तृण-संचय, लकड़ी काटना, गृहारम्भ आदि त्याज्य हैं।

#### ५४ नक्षत्र

किसी भी प्रकार के दोष एवं अशुभ का परिमार्जन पुष्य नक्षत्र से हो जाता है।<sup>१</sup> चाहे चन्द्राक्षीण हो, तारा-बल न भी हो, पुष्य नक्षत्र होने से यह दोष भी नहीं लगता।<sup>२</sup> यहाँ तक कि धण्डम चन्द्रमा का दोष भी पुष्य हर लेता है।<sup>३</sup> मुहूर्त दीपिका के अनुसार तो किसी भी प्रकार का दोष व्याप्त ही नहीं होता, यदि मुहूर्त में पुष्य नक्षत्र भी हो। परन्तु विवाह आदि में पुष्य नक्षत्र लेने का पूर्णतः निषेध है।<sup>४</sup>

रविवार को पुष्य—मंत्रसिद्धि, औषधि प्रयोग के लिए शुभ।

गुरुवार को पुष्य—व्यापारिक कार्यों के लिए श्रेष्ठतम्।

शुक्रवार को पुष्य—उत्पातकारक, विघ्नकर्ता।

चन्द्र, भीम शुध, शनि को पुष्य—रेष्ठ।

नवमी गुरुवार को पुष्य—विषकारक।

ज्येष्ठ मास में पुष्य—व्यर्थ।

मार्गशीर्ष में पुष्य—हानिप्रद।

#### जन्म नक्षत्र

जन्म के समय जो नक्षत्र हो, वह नक्षत्र अन्नप्राशन, उपनयन, विवाह, राज्याभिषेक, यात्रा आदि में निषेध है।<sup>५</sup>

१. सिंहा यथा सर्वं चतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुड्नाम।
२. पार्षदिवे युते हीने चन्द्र तारा बलेऽपि च। पुष्ये सिद्ध्यन्ति सर्वाणि कार्याणि मंगलानि च ॥—मुहूर्त गणपति पुष्यः परकृतं हन्ति न तु पुष्यकृतं परः। पौषं यद्धृष्टमोऽपिन्दुः पुष्यः सर्वाणि साधक ॥
३. समस्त कर्मोचित कालपुष्यो पुष्यो विवाहे मद मूर्च्छात्वात ॥ —ज्योतिःप्रकाश

—ज्योतिर्विदाभरण

×

विवाहमेकं परिहर्य सिद्ध्यं सर्वाणि कार्याणि करोतु सिध्यै।

४. बालान्मुखतौ ब्रतवन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलु जन्मधीष्यणम्। शुभत्वनिष्टं सततं विवाह-सीमन्त-यात्रादिषु मंगलेषु ॥

जन्मनक्षत्र से २५वाँ तथा २७वाँ नक्षत्र भी शुम कार्यों के लिए पूर्णतः वर्जित हैं।

### योग

योग दो प्रकार के हैं—नैसर्गिक तथा तात्कालिक। नैसर्गिक योगों का क्रम अपरिवर्तित रहता है, जबकि तात्कालिक योग वार्त-तिथि-नक्षत्रादि के संयोग से बनते हैं।

### नैसर्गिक योग

ये सत्ताईस हैं, तथा इनका क्रम सुनिश्चित है। नीचे योग, उसका स्वामी तथा फल स्पष्ट किया जा रहा है—

| क्र० सं० | योग         | स्वामी     | फल   |
|----------|-------------|------------|------|
| १        | विष्णुभं    | यम         | अशुभ |
| २        | प्रीति      | विष्णु     | शुभ  |
| ३        | आयुष्मान्   | चन्द्र     | शुभ  |
| ४        | सौभाग्य     | ब्रह्मा    | शुभ  |
| ५        | शोभन        | गुरु       | शुभ  |
| ६        | अतिगण्ड     | चंद्र      | अशुभ |
| ७        | सुकर्मा     | इन्द्र     | शुभ  |
| ८        | धूति        | जल         | शुभ  |
| ९        | शूल         | सर्प       | अशुभ |
| १०       | मण्ड        | अरिन       | अशुभ |
| ११       | वृद्धि      | सूर्य      | शुभ  |
| १२       | ध्रुव       | भूमि       | शुभ  |
| १३       | व्याघात     | वायु       | अशुभ |
| १४       | हृष्ण       | भग         | शुभ  |
| १५       | वज्र        | वरुण       | अशुभ |
| १६       | सिद्धि      | गणेश       | शुभ  |
| १७       | व्यतिपात    | रुद्र      | अशुभ |
| १८       | वस्त्रियान् | कुबेर      | शुभ  |
| १९       | परिव        | विश्वकर्मा | अशुभ |
| २०       | सिद्ध       | मित्र      | शुभ  |
| २१       |             | कार्तिकेय  | शुभ  |

३६

|    |         |              |      |
|----|---------|--------------|------|
| २२ | साध्य   | सादित्री     | शुभ  |
| २३ | शुभ     | लक्ष्मी      | शुभ  |
| २४ | शुक्ल   | पावर्ती      | शुभ  |
| २५ | ब्रह्मा | अश्विनीकूमार | शुभ  |
| २६ | ऐन्द्र  | पितर         | अशुभ |
| २७ | वैधृति  | दिति         | अशुभ |

### व्यतिपात

उपर्युक्त योगों में व्यतिपात या व्यतिपात अत्यन्त दुर्दर्श उपद्रवकारी योग है। समस्त मांधालिक कार्यों में सर्वथा निषेधीय यह योग है।

### वैधृति

यह भी व्यतिपात की तरह ही अशुभ एवं विघ्नकर्ता है।

### प्रथ्य

निम्न योग भी शुभकार्यों में सर्वथा वज्र्य हैं :

- (क) परिघ योग का पूर्वार्द्ध ।
- (ख) विष्णुभं की प्रथम तीन घटी ।
- (ग) वज्र की प्रथम तीन घटी ।
- (घ) व्याघात की प्रथम नौ घटी ।
- (ङ) शूल की प्रथम पाँच घटी ।
- (च) गड़ की प्रथम छः घटी ।
- (छ) अतिगण्ड की प्रथम छः घटी ।

### विशेष

(१) यदि किसी दिन वैधृति, व्यतिपात, भद्रा या कोई अशुभ योग हो, पर उसी दिन असृत योग भी बनता हो तो अशुभ योगों का नाश हो जाता है।<sup>१</sup>

(२) भद्रा मंगलवार, शनिवार, व्यतिपात, जन्मनक्षत्र आदि दोष मध्याह्न के पश्चात् नहीं लगता ।<sup>२</sup>

१. यदि विष्टिवर्तीपातो दिनं चाप्यशुभं भवेत् ।  
हन्यतेऽमृत योगेन भास्करेण तमो यथा ॥ —राजमार्त्यं
२. विष्टावगारके चैव, व्यतीपाते शनैश्चरै ।  
निघने जन्मनक्षत्रे मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥

—श्रीपति व्यवहार निर्णय

३७

(३) यदि कोई कुयोग हो, पर उसी दिन सुयोग भी हो जाय, तो कुयोग दोष समाप्त हो जाता है।<sup>१</sup>

(इसके अतिरिक्त आनन्दादि अट्टाइस योग, ककचादि तात्कालिक योग विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये जा रहे हैं, पाठकों को इसके लिये सुबोध पॉकेट बुक्स दिल्ली द्वारा प्रकाशित मेरी पुस्तक “सुबोध प्रारंभिक ज्योतिष” का अध्ययन करना चाहिए)

#### त्याज्य योग

(१) एकम को उत्तराधाढ़ा, द्वूज को अनुराधा, तीज को उ०-षाठ, पाँचम को मध्या, छठ को रोहिणी, सातम को हस्त या मूल, आठम को पू० भा०, नवम को कृत्तिका, यारस को रोहिणी, बारस को आश्लेषा एवं तेरस को स्वाती या चित्रा पूर्णतः वज्र्य माना गया है।

(२) पंचमी को हस्त नक्षत्र एवं रविवार  
षष्ठी को मृगशिरा व सोमवार  
सप्तमी को अश्विनी व भौमवार  
अष्टमी को अनुराधा व बुधवार  
नवमी को पुष्य व गुरुवार  
दसमी को रेवती व शुक्रवार  
एकादशी को रोहिणी व शनिवार का संयोग पूर्णतः शुभ कार्यों के लिए वज्र्य है

(३) गृहप्रवेश में भौमवार तथा अश्विनी के संयोग से सिद्धियोग। यात्रा में शनि रोहिणीजन्य सिद्धि-योग सर्वथा वर्जित है।<sup>१</sup>

१. अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेती भवतो यदि ।  
आयोगो हन्यते तत्र सिद्धियोगः प्रवर्तते ॥

—राजमार्तण्ड  
अयोगे सुयोगेऽपि चेत्प्यात्तदानीययोगं निहस्तेषं सिद्धिः ॥  
—मु० चिन्ता०

२. भौमाश्विनी प्रवेशे च प्रयाणे शनि रोहिणीम् ।  
गुरु पुष्यं विवाहे च सर्वथा परिवर्जयेत् ॥ —राजमार्तण्ड

#### करण

करण ग्यारह होते हैं, जिनके नाम क्रमशः बृ, बालव, बौसव, तंतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुनि, चतुष्पद, नाथ तथा विष्टुघ्न हैं, इनमें प्रथम सात करण चरसंजक तथा शेष चार रिष्टरसंजक हैं। इनमें प्रथम सात करणों में शुभ कार्य तथा अन्तिम चार करणों में पितृ कार्य करना ऋषयदेश है।

#### भ्राता

समुद्र-मन्थन के समय जब गरल पान कर शिव ने हुंकार भरी एवं अपने शरीर पर दृष्टि डाली, तो उनके दृष्टि-आधात से गर्दंभ मुख, तीन चरण, सप्त भुजा, काला वर्ण, लम्बे व टेढ़े दाँत, प्रेतवाहन तथा मुख से अग्नि उगलती हुई देवी प्रकट हुई, जिसे देवों ने ‘भ्राता’ के नाम से संबोधित किया।

#### भ्रातावास

| चन्द्रराशि   | भ्रातावास | भ्रातामुख | फल      |
|--------------|-----------|-----------|---------|
| ४, ५, ११, १२ | मृत्युलोक | सम्मुख    | शुभफलद  |
| १, २, ३, ८   | स्वर्गलोक | द्वच्चमुख | सामान्य |
| ६, ७, ८, १०  | पाताललोक  | अधोमुख    | अनिष्ट  |

#### भ्राता दिशा

| तिथि | दिशा     |
|------|----------|
| ३    | ईशान     |
| ४    | पश्चिम   |
| ७    | दक्षिण   |
| ८    | अग्निकोण |
| १०   | वायव्य   |
| ११   | उत्तर    |
| १४   | पूर्व    |
| १५   | नैऋत्य   |

#### कल

जिस दिशा में भ्राता हो, उस दिशा की ओर यात्रा करना वर्जित है।

## भद्रा अंग

| घटी | भद्रा अंग | फल          |
|-----|-----------|-------------|
| ५   | मुख       | कार्यनाश    |
| १   | गदंन      | मृत्यु      |
| ११  | वक्षःस्थल | द्रव्यनाश   |
| ४   | नाभि      | कलह         |
| ६   | कमर       | बुद्धिनाश   |
| ३   | पुच्छ     | कार्यसिद्धि |

## भद्रासंज्ञा

कृष्ण पक्ष की भद्रा को "वृश्चिकी" तथा शुक्ल पक्ष की भद्रा को "सर्पिणी" कहा जाता है।

## विशेष

- यदि दिन की भद्रा रात्रि को, और रात्रि की भद्रा दिन तक रहे तो भद्रा-दोष नहीं रहता।<sup>१</sup>
- मीन संक्रान्ति में भद्रा-दोष नहीं लगता।<sup>२</sup>
- मध्याह्न के बाद भद्रा-दोष शान्त रहता है।

## जन्म राशि

पाणिग्रहण संस्कार, यात्रा-मांगलिक कार्य तथा गोचर, विचार में जन्मराशि चित्तनीय है।

## नाम-राशि

देश, ग्राम, गेहारंभ, युद्ध, वादविवाद, नीकर रखना, व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मंत्रसिद्धि आदि के लिए नाम-राशि से ही विचार करना चाहिए।

## संक्रान्ति

एक राशि पर संक्रमणकाल (सूर्य काल) को संक्रान्ति कहते हैं। एक वर्ष में बारह संक्रान्तियाँ होती हैं। सूर्य संक्रान्ति के पूर्व १६ घटी और बाद में १६ घटी तक संक्रान्ति

- रात्रिभद्रा यदन्ह स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि।  
न तत्र भद्रा दोषः स्यात् साभद्रा भद्रदायिनी ॥ —पीयूषधारा
- भद्राय भद्रा न शंभोर्जंपे भीनराशि योगस्तथाप्यर्चने।  
होमकाले शिवायास्तमा तद्भुवः साधने सर्वकालोऽथमेशेतयो ॥

पृष्ठकाल कहा जाता है।

|                                     |            |  |
|-------------------------------------|------------|--|
| महारेष                              | संक्रान्ति | पृष्ठकाल संक्रान्तियों के निम्न पुष्ट काल हैं- |
| १० घटी                              | पूर्व      | पुष्ट  |
| १६ घटी                              | पूर्व      | १६ घटी पश्चात् ।                               |
| मिथुन                               |            | १६ घटी पश्चात् ।                               |
| कर्क                                |            | ३० घटी पूर्व ।                                 |
| सिंह                                |            | १६ घटी पूर्व ।                                 |
| कन्या                               |            | १६ घटी पश्चात् ।                               |
| तुला                                |            | १० घटी पूर्व एवं १० घटी पश्चात् ।              |
| वृश्चिक                             |            | १६ घटी पूर्व ।                                 |
| धनु                                 |            | १६ घटी पश्चात् ।                               |
| मकर                                 |            | ४० घटी पश्चात् ।                               |
| कुम्भ                               |            | १६ घटी पूर्व ।                                 |
| मीन                                 |            | १६ घटी पश्चात् ।                               |
| सूर्य-संक्रान्ति में दानादि शुभ है। |            |  |

## चन्द्रमा

चन्द्रमा नित्य ही मार्गी एवं उदित रहता है। कृष्णपक्ष की त्रयोदशी चतुर्दशी को चन्द्रमा वृद्ध, अमावस्या को मृत एवं शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को बाल अवस्था में रहता है।

## चन्द्र गोचर फल

| जन्म      | अन्नप्राप्ति |
|-----------|--------------|
| दूसरे भाव | वित्त-नाश    |
| तीसरे "   | द्रव्य-लाभ   |
| चौथे "    | कमर-रोग      |
| पांचवें " | कार्य-नाश    |
| छठे "     | धन-लाभ       |
| सातवें "  | द्रव्य-लाभ   |

- रवे: संक्रमण राशि संक्रान्तिरिति कथ्यते।  
सान दान जप श्राद्धः होमाद्विषु महाफलम् ॥
- पुरुषार्थं चिन्तामणि

|             |            |
|-------------|------------|
| आठवें भाव   | मृत्यु     |
| नवें „      | राज्य-भय   |
| दसवें „     | सुख        |
| ग्यारहवें „ | लाभ        |
| बारहवें „   | रोग-वृद्धि |

### शुभचन्द्र

गर्भधान, राज्याभिषेक, अन्नप्राशन, विवाह, जनेऊ, धात्रा, दान, व्रतोपवास आदि में द्वादश चन्द्र शुभ माना गया है।<sup>१</sup>

### जन्मचन्द्र

यात्रा, युद्ध, विवाह, गृह प्रवेश एवं क्षीर कर्म, ये पांच जन्मचन्द्र को वर्जित हैं।<sup>२</sup>

### स्त्री चन्द्र बल

विवाह, रजीदर्शन, गर्भधान तथा प्रसवपूर्व कर्म में स्त्री के नामराशि-चन्द्र से विचार करना चाहिए, एवं अन्य समस्त कार्यों में पति के नाम से ही विचार करना चाहिए।<sup>३</sup>

### चन्द्र-दिशा

| दिशा               | नाम दिशा | फल   |
|--------------------|----------|------|
| मेष सिंह, धनु      | पूर्व    | शुभ  |
| वृष, कन्या, मकर    | दक्षिण   | अशुभ |
| मिथुन, तुला, कुम्भ | पश्चिम   | शुभ  |
| कर्क, वृश्चिक, मीन | उत्तर    | शुभ  |

गर्भधाने जन्मकालेऽभिषेके मौनिजबन्धने  
पाति रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशमः शुभः ॥

—दैवज्ञ कल्पद्रुम

२. जन्मगः फलदशचन्द्रः पंचकर्मेषु वर्जयेत् ।  
यात्रा युद्ध विवाहेषु प्रवेशे क्षीर कर्मणि ॥

—फलित

विवाहकार्यं कुम्भप्रतिष्ठा नर्भप्रतिष्ठा वनिता विशुद्धी ।  
यात्रानि कार्याणि श्रुत्यस्य इत्यै पत्थी विहीनं प्रमदात्यमशुद्ध्या ॥

—राज मार्तण्ड

### चात्रधात्र

| जन्मराशि           | वर्ण  | वाहन | फल             |
|--------------------|-------|------|----------------|
| मेष, सिंह, वृश्चिक | रक्त  | हाथी | युद्ध          |
| वृष, कर्क, तुला    | श्वेत | बैल  | सिद्धिदायक     |
| मिथुन, धनु, मीन    | पीला  | अश्व | लक्ष्मीप्रदायक |
| कन्या, मकर, कुम्भ  | काला  | महिष | भयदाता         |

जीलोक्य में चन्द्रवास

तिथि को पांच से गुणाकर १ जोड़कर योगफल को ३ से भाग दें, शेष ० बचे तो मृत्युलोक में, १ बचे तो स्वर्गलोक में तथा २ बचे तो पाताललोक में जानना चाहिए।

### फल

मृहनिर्माण, कूपखनन, यज्ञ, कृषि, कार्य, विद्यारंभ यात्रादि में पातालस्थ चन्द्रमा वर्ज्य है।

स्वर्ग व मृत्युलोक में चन्द्र शुभ एवं पाताल लोक में अनिष्टकर माना गया है।

### धात्र चन्द्र

|          |                   |                  |
|----------|-------------------|------------------|
| जन्मराशि | धात्रराशि (पुरुष) | धात्रराशि स्त्री |
| मेष      | मेष               | मेष              |

|         |       |         |
|---------|-------|---------|
| वृष     | कन्या | धनु     |
| मिथुन   | कुम्भ | धनु     |
| कर्क    | सिंह  | मीन     |
| सिंह    | मकर   | वृश्चिक |
| कन्या   | मिथुन | वृश्चिक |
| तुला    | धनु   | मीन     |
| वृश्चिक | वृष   | मिथुन   |
| धनु     | मीन   | कन्या   |
| मकर     | सिंह  | वृश्चिक |
| कुम्भ   | धनु   | मिथुन   |
| मीन     | कुम्भ | कुम्भ   |

विवाह, अन्न, तीर्थयात्रा, यात्रा एवं शुभ कार्यों में धात्र-चन्द्र का विचारन करें, पर कुमारी-पूजन, वृद्ध, राज्यसेवा

विद्या, वाहन धारि में धात चन्द्र का विचार चितनीय है।  
शुरु शुक्रार्थ में वज्र्यं कार्यं

गृहारंभ, कूपखनन, ब्रतोद्यापन, वधू-आगमन, यज्ञ, दान, आद्, श्रावणी कर्म, त्रिपिण्डी आद्, वर्षोत्सर्व, देवप्रतिष्ठा, दीक्षा, मंत्रोपदेश, विवाह, यज्ञोपवीत, तीर्थयात्रा, संन्यासग्रहण, राज्याभिषेक आदि।

### सिंहस्थ गुरु

सिंह राशिगत गुरु जब सिंह के नवांश में (अर्थात् १३-२० से १६-४० अंश तक) हो तो विवाहादि कार्य वर्ज्य हैं।<sup>१</sup>

'मुहूर्तं चिन्तामणि' में मध्य के चार तथा पूर्वी फालगुनी के प्रथम चरण पर गुरुणोचर को ही वज्र्यं माना है। "मध्यादि पंचपादेषु गुरुः सर्वत्र निदितः।"

जो कार्यं सिंहस्थ गुरु में वज्र्यं है, वही शुक्र के लिए भी वर्जनीय है।

### भू-रुदन

मास की अंतिम घड़ी, वर्ष का अंतिम दिन, अमावस्या, होलिका तथा प्रत्येक मंगलवार को भू-रुदन होता है। अतः प्रत्येक शुभ कार्यं भू-रुदन में वर्ज्य है।

### भू-हास्य

पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, गुरुवार, पुष्य, श्रवण नक्षत्रों में पृथिवी हँसती है। अतः प्रत्येक शुभ-कार्यं में यह समय अनुकूल होता है।

१. तीर्थयात्रा विवाहान्प्राशनोपनयनादिषु,  
मांगल्य सर्वकार्येषु धात चन्द्रं न चितयेत् ।

युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा,  
राजसेवा वाहनादौ धातचंद्रं विवर्जयेत् ॥

—पीयूषधारा

२. सिंहराशी तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः ।  
सर्वं देशेष्वयं त्याज्यौ दम्पत्योनिधनप्रदः ॥

—राजमार्तण्ड

### भू-शयन

(क) सूर्य-संकान्ति से ५, ७, ६, १५, २१, तथा २४वें -दिन परती शयन करती है।

(ख) सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ६, १३, १६ तथा २६वें नक्षत्र में पृथिवी शयन करती है।

इषि, हवन समस्त शुभ कार्यों में भू-शयन काल वर्ज्य है।

### भू-रजस्वला

(क) सूर्य-संकान्ति से १, ५, १०, ११, १६, १८ तथा १९वें दिन भूमि रजस्वला होती है।

(ख) पंचमी को भौमवार, षष्ठी को रविवार, सप्तमी को शुक्रवार हो तो इससे आगे तीन दिनों तक पृथिवी रजस्वला रहती है।

समस्त शुभ कार्यों, प्रतिष्ठा, यज्ञादि से भू-रज-समय त्याज्य है।

### देव-शयन

आषाढ़ शुक्ला ११ से कातिक शुक्ला ११ तक देव-शयन करते हैं, अतः इस अवधि में गृहनिर्माण, गृहारंभ, विवाह, यज्ञोपवीत, दान, यात्रा, यज्ञादि कार्य, देव-प्रतिष्ठा आदि त्याज्य है।

### धर्मिनदास

शुक्ला प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक गणना कर योग में १ जोड़ सूर्यवार से गणना कर वार-संख्या जोड़ें, तथा इस संख्या को ४ से भाग दें, शेष ० बचे तो अग्नि पृथिवी पर १ बचे तो आकाश में, दो बचे तो पाताल में तथा तीन बचे तो पृथिवी पर जानें।

फल—पृथिवी पर धर्मिनदास सुखकर, आकाश में प्राण-ताया तथा पाताल में धननाश फल देती है।

इमादि कार्यों में इसका विचार करना चाहिए। पर विवाहादि जन्मदिन, यात्रा, पुत्रोत्पत्ति, दुर्गा-सम्बन्धी यज्ञकार्य भी धर्मिनदास का विचार नहीं करना चाहिए।

### धोड़श संस्कार

पृथिवी ने निम्न सोलह संस्कार माने हैं—

१. गमधारान, २. पुंश्वन, ३. सीमन्तोल्यन, ४. जातकर्म,

५. नामकरण, ६. निष्कमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चूडाकरण,  
९. यज्ञोपवीत, १०, ११, १२, १३, चतुर्वेद व्रत, १४. समावर्तन,  
१५. विवाह, १६. अन्त्येष्टि ।

बब आगे के पृष्ठों में प्रमुख मुहूर्तों का विवेचन दिया जा  
रहा है—

### १. नवीन वस्त्र धारण मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, १२, १५।  
वार—बुध, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र—अ०, रो०, पुन०, पु० पू० फा०, उ० भा०, ह०,  
चि०, स्वा०, वि०, अनु०, रे०।

#### टिप्पणी

विवाह, यज्ञ, अनुष्ठान, संवत्सरारंभ, राज्यप्रदत्त  
वस्त्रालकार, विशेषोत्सव, तथा शादि में विना मुहूर्त के भी  
वस्त्र पहने जा सकते हैं ।

### २. रजस्वला स्नान मुहूर्त

तिथि—१ (कृष्णपक्ष) २, ३, ५, ७, १०, १२, १५, दोनों पक्ष।  
वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,  
अनु०, ध० रे०।

#### टिप्पणी

रजस्वला-स्नान तीन दिनों के बाद ही होना चाहिए,  
क्योंकि इससे पहले वह शुद्ध नहीं होती ।

१. विवाहे च यज्ञे तथा वत्सरादी,  
तृपेणापि दत्त मुदायच्च वस्त्रम्।  
शमशाने विशेषोत्सवे शादि १५, १६,  
युधिष्ठिये दिनादावथो धारणीयम् ॥ — वृहज्योतिसार
२. प्रथमेऽहीं चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मानात्की।  
तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहीं शुद्धति ॥

—मनु०

४६

### ३. सीमान्तोन्नयन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०।

वार—४० म० गु०

नक्षत्र—मृग०, पुन०, पु०, ह०, मू० श०।

नक्षत्र—१, ३, ५, ७, ९, ११

#### टिप्पणी

गर्भधारण के छठे या आठवें मास में जब मासाधिपति  
निर्वाच हो या भस्त हो, तब यह विवि सुरक्षा-हेतु की जाती है।  
मुहूर्त के दिन स्त्री चन्द्रबल प्रबल होना बावश्यक है।

गर्भधारण से प्रत्येक मास के अधिपति निम्न प्रकार होते हैं—

|             |        |
|-------------|--------|
| १. गर्भ मास | शुक्र  |
| २. "        | मंगल   |
| ३. "        | गुरु   |
| ४. "        | सूर्य  |
| ५. "        | चन्द्र |
| ६. "        | शनि    |
| ७. "        | बुध    |
| ८. "        | लग्नेश |
| ९. "        | चन्द्र |
| १०. "       | सूर्य  |

### ४. विष्णु पूजा मुहूर्त

तिथि—२, ७, १२ (शुक्र पक्ष)।

वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र—रोहिणी, पृथ्य, श्रवण।

#### टिप्पणी

गर्भ के आठवें महीने में गर्भरक्षण-हेतु शंख-चक्र-गदा-  
पथधारी विष्णु की पूजा कर स्वर्ण-प्रतिमा का दान दिया  
जाता है।

#### ५. पितृ गृह जाते का मुहूर्त

तिथि—१ (कृष्ण पक्ष) २, ३, ५, ६, १०, (शुक्ल पक्ष) १५ ।

वार—चन्द्र, गुरु, शुक्र ।

नक्षत्र—अश्विन, कृ, रो०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, चि०,  
स्वा०, वि०, अनु०, श०, घनि०, रे० ।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, जब लग्न शुद्ध हो ।

#### टिप्पणी

प्रसव से पूर्व जब स्त्री पतिगृह से पिता के घर जाती है या अकारण ही पीहर जाय, तब इस मुहूर्त का उपयोग आवश्यक है ।

भद्रा, व्यतिपात, रिक्ता-तिथि तथा पत्नी के चन्द्रबल को प्रमुखता दें ।

#### ६. षष्ठी पूजन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १०, १२ (या जो भी पांचवां दिन हो) ।

वार—रवि, मंगल, शनि को छोड़कर ।

#### टिप्पणी

पुत्र-जन्म के पांचवें दिन को रात्रि को 'जीवन्ती देवी, की शोषणोविचार पूजा की जाती है । इसे षष्ठी पूजन कहते हैं, कुछ विद्वान् षष्ठी देवी को 'कात्यायनी देवी' भी कहते हैं । (षष्ठं कात्यायनीतिथि—मा० पु०) इस पूजन में सूतक-दोष नहीं लगता । कहीं-कहीं १४वें दिन, २१वें दिन या ३१वें दिन भी ऐसी पूजा की जाती है ।

#### ७. सूतिक्षा-स्नान (सूर्य-पूजन) मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३, १५ ।

वार—सूर्य, मंगल, गुरु ।

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृग०, उत्तरा ३, ह०, चि० स्वा०,  
अनु०, रे० ।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ६ ।

#### टिप्पणी

प्रथम गृतिका-स्नान पुत्रजन्म के सातवें या नवें दिन होता है ।

#### ८. नामकरण संस्कार मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) ।

वार—चौ०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अश्विन, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,  
स्वा०, अनु० श०, घ०; रे० ।

लग्न—२, ४, ६, ७, ६ ।

चान्द्रमा—२, ३, ५, ६ ।

#### टिप्पणी

जीवन में स्थाति, यश, सम्मानादि नाम पर ही मिलता है, जहाँ नाम अत्यन्त सौच-विचारकर रखना चाहिए । पिंतू-कुलपूर्ण मातृकुल की तीन पीढ़ी तक का नाम बालक को न दे ।

नामकरण जन्म से १०, १२, १६, १८, २०, २२ या ३०वें दिन कन्या का, तथा १, ३, ५, ७, १०, ११ या १३वें दिन पुरुष का करना चाहिए ।

प्रकारान्तर से विप्र का १० या १२वें दिन, क्षत्रिय का १३वें दिन, वैश्य का १६वें या २०वें दिन तथा शूद्र का ३०वें दिन नामकरण करना चाहिए ।

नामकरण पिता, या कुलवृद्ध करें ।<sup>१</sup> उत्तराभिमुख पिता वैठ, उज्ज्यवल वस्त्र पहन कुलदेव का स्मरण कर नामकरण करे ।<sup>२</sup>

पुरीया, व्यतिपात, श्राद्ध, ग्रहण तथा निर्बल चन्द्र के दिन नामकरण रास्कार न करे । चर लग्न भी न ले ।

यदि तीन कन्याजन्म के बाद पुत्रजन्म या तीन पुत्रजन्म के बाद पुत्राजन्म हो तो "त्रिशोष" शान्त कर देना चाहिए ।

१. पिता कुर्यादन्यो वा कुलवृद्धः

२. पुत्र जन्मनि यज्ञे च तथा संक्रमणे रवे ।

३. त्रीष्विष्व दर्शने स्नानं प्रस्तावं नान्यथा निशि ॥

—१० चि०

—वसिष्ठ

### ६. जल-पूजन सुहृत्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, ६, ११, १२, १५ (शुक्र) ;  
वार—च०, बु०, गु० !

नक्षत्र—मृग०, पुन०, पु०, ह०, अनु०, श्र० ।

#### टिप्पणी

पुत्रजन्म के एक मास बाद या २६ दिनों बाद जलपूजन होता है। इसमें पुत्र-माता वापी, कूप, तड़ाग पर जाकर जल-पूजन करती है।

जलपूजन में श्राद्ध-पक्ष-दिन, क्षयमास, चंत्र, पौष, तथा कुण्डोग का त्याग करना चाहिए।<sup>१</sup>

### १०. दुर्घटान सुहृत्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, १२, १५ (शुक्र) ।

वार—च०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, ह०, चि०, अनु०, श्र०, ध०, रे० ।

लग्न—२, ६, ४, ६, ७, ६, १२ ।

#### टिप्पणी

जन्म के २१वें या ३१वें दिन माता के स्तनपान के अतिरिक्त धात्री स्तनपान करावे या गौदुर्घटान करावे।

शंख में गौदुर्घट लेकर भी पान कराया जाता है। इस मुहूर्त में राहुमुख, योगिनीवास एवं रुद्रवास का भी विचार करना चाहिए—

### राहुमुख विचार

#### वार

सूर्य, गुरु

भगल

बुध, शनि

चंद्र, शुक्र

#### राहुमुख-दिशा

पूर्व

पश्चिम

उत्तर

दक्षिण

१. पुनर्वसु द्वये हस्ते मृग मूलानुराधयो ।  
श्वे गुरी बुधे चन्द्रे सत्तियो जलपूजनम् ॥  
गुरी शुक्रे चर्तगे चैत्रे पौषे वा मलमासके ।  
मासपूर्वो विश्वदा हे न कुर्यात् जलार्जनम् ॥ — मुहूर्त गणपति

जिस ओर राहुमुख हो, उस दिशा की ओर बालक का शिर रखकर दुर्घटान नहीं कराना चाहिए।

#### योगिनीवास

#### तिथि

१,६

२,१०

३,११

४,१२

५,१३

६,१४

७,१५

८,२०

#### योगिनीवास-दिशा

पूर्व

उत्तर

अग्नि

नैऋत्य

वायव्य

पश्चिम

दक्षिण

ईशान

दुर्घटान के समय योगिनी वाई और रहे।

#### रुद्रवास

सूर्योदय से १-१ घटी पर्यन्त रुद्र क्रमशः पूर्व, उत्तर, अग्नि, नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य, ईशान दिशा में रहता है। एक दिन-रात में रुद्रवास-क्रम तीन बार हो जाता है।

दुर्घटान-समय रुद्र-सम्मुख न हो।

### ११. दोलारोहण (भूला) सुहृत्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १५ (शु) ।

वार—च०, बु०, गु० ।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृ०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०, रे० ।

#### टिप्पणी

जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ या ३२वें दिन प्रथम बार भूले में सुलाया जाता है।<sup>१</sup>

### १२. निष्क्रमण (घर से बाहर जाने का) सुहृत्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, ६, १२, १३, १५ (शु) ।

वार—च०, बु०, गु०, शु० ।

१. दोलौक्तमि सुपर्यक जननि द्वा सुवातिनी ।  
योगिनायी हरिर्ध्यत्वा स्वापयेत्प्राक् शिरः शिशुम् ॥

नक्षत्र—अश्विनी, मृग, रोहिणी, पुनर्षु, पुष, हस्त, धूम।

लग्न—२, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०।

#### टिप्पणी

बालक के प्रथम बार घर से बाहर जाने को निष्क्रमण कहते हैं, यह मुहूर्त १२वें दिन या तीसरे महीने होना चाहिए।<sup>१</sup>

सर्वप्रथम देवालय जाकर प्रजार्चन करे, ब्राह्मणों से सुभाषीष ले, फिर सर्वप्रथम वच्चे को पितृकुल के किसी स्वजन के घर ले जावे।

#### १३. कच्छा बंधन (वस्त्र धारण) मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ११, १३, १५ (शुक्र पक्ष)।

घार—बुध, गुरु, शुक्र।

\* नक्षत्र—अ०, रोहिणी, मृग, पुनर्षु, पुष, मूर्ख, उत्तरा, चित्र, स्वा० विं, अनु० रेण०।

#### टिप्पणी

बालक को सर्वप्रथम काले डोरे की करघनी पहनावे, एवं फिर पैरों में कच्छा पहनावे।<sup>२</sup>

#### १४. भूम्योपवेशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १४ (दोनों पक्ष)।

घार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र—अ०, रेण०, मृग०, पुष्य०, उत्तरा०, हृषी०, अनु० अभिं०।

लग्न—२, ५, ८, ११।

#### टिप्पणी

जन्म से पांचवें महीने में, चर लग्न में, मंगल बली में वाराह भगवान् की पूजा करके बालक को सर्वप्रथम जमीन पर बिठाना चाहिए।

बिठाने से पूर्व निम्न मन्त्र का उल्लेख करना चाहिए—

१. तुर्ये निष्क्रमणं मासि यात्रोक्त दिवसे स्मृतम्।  
जन्मतो द्वादशाहे वा कुर्यान्मगलपूर्वकम्॥ —मु० ग०
२. कच्छाबन्धः सिते पक्षे सुदिने करपचके।  
ध्रुवक्षेत्रदिवि युग्मेऽशिष्पित् पौष्णेन्दुवासरे॥ --गणक मंडन

५२

रथीनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शिशुम् ।

आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ॥

#### जीविका शान

इसी दिन बालक के सामने अस्त्र-शस्त्र, पुस्तक, दवात, लैखनी, घरन, रवर्ण, चाँदी, मशीन, मोटर, कल-पुर्जे, विद्युत-धूपकारण आदि रखें। बालक सर्वप्रथम जिस वस्तु का स्पर्श करे एवं कालान्तर में उसकी जीविका का साधन होगा, ऐसा तामाज्ञा चाहिए।

#### १५. अन्नप्राशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १२, १३, १४, १५ (शुक्र पक्ष)।

घार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र—अ०, रोहिणी, मृग, पुनर्षु, उत्तरा०, हृषी०, चित्र, स्वा०,

अनु०, श्रू०, धू०, शू०, रेण०।

लग्न—२, ३, ४, ५, ७, ६, १०।

#### टिप्पणी

जन्म से ६, ७, ८, १०, या १२वें महीने में बालक को पहली बार अन्न खिलाया जाता है, इसे अन्नप्राशन कहते हैं।

दिन का पूर्वार्द्ध, चन्द्रबल आवश्यक है तिथिक्षय एवं राशि वर्णित है।

#### १६. कर्णधेन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२।

घार—चंद्र, बुध, गुरु।

नक्षत्र—अश्विनी, मृग, पुनर्षु, पुष, हृषी०, अनु०, श्रू०, रेण०।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ८।

#### टिप्पणी

जन्म से १२ या १६वें दिन अथवा छठे या सातवें मास के कर्णधेन होना चाहिए।

बालक को पूर्वार्द्धमुख बिठाकर बालक का पहले दाहिना फिर धार्या, तथा कन्धा का पहले धार्या तथा फिर दाहिना काणीसौंदर्य किया जाना चाहिए।

रथणकार द्वारा या सौभाग्यवती स्त्री द्वारा सूची से

५३

कर्णद्वेदन होना चाहिए ।<sup>१</sup>

तीसरे दिन गर्म जल से कर्णधोवन हो ।

#### १७. कन्या-नासिका-वेद मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, १५ (शुक्र वक्ष)

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, म०, पुन०, पु०, उ० ३, हस्त०, चि०, स्वा०  
अनु०, श०, ध०, रे० ।

#### टिप्पणी

कर्णवेद के दिन या मास में कन्या की नासिका का द्वेदन  
होना चाहिए ।<sup>१</sup>

#### १८. जन्मदिन (वर्ष दिन) मुहूर्त

जिस तिथि को जन्म हो, वर्ष के पश्चात् उसी तिथि को  
वर्षगांठ मनानी चाहिए । प्रातः मंगल स्तान करवाकर सुसज्जित  
वस्त्राभूषणों से सुसज्जित कर गणपति कुल-देवता का पूजन करे ।

जन्मदिन में तिल-प्रयोग वायुवर्द्धक है ।<sup>१</sup> इसी दिन  
आम्रपत्रों की १०८ आहुतियाँ आरोग्यवर्धक एवं आयुर्वर्धक  
कही गई हैं ।

जन्मदिन को हजामत, यात्रा, स्त्रीसंग, कलह, मांसभक्षण,  
हिंसा आदि वर्जित है ।

#### १९. चूड़ाकर्म (क्षौर कर्म) मुहूर्त

मास—चं०, वैशाख, आषाढ़ (शुक्र ११ से पूर्व) ।

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १२, १४, १५ (शुक्र) ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

१. सौवर्णी राजपत्रम्, राजती विप्रवैश्ययो ।

शूद्रस्य त्वायसी सूची मध्यामाष्टांगुलात्मिका ॥

२. कर्णदेघोवत्तमे शस्तं कन्याया द्वाणवेधनम् ।

शुत्रराजलपस्वातो पूर्वान्हे शुक्ल पक्षके ॥

—मुहूर्त गणपति

३. तिलोदर्ती, तिलस्नायि तिलहोमो तिलप्रदः ।

तिलभुक् तिलवाणी च षट्तिली नावसीदति ॥

नक्षत्र—अश्विं०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, स्वा०, अनु०, श०,  
भ०, रे० ।

#### टिप्पणी

भास्म से १, ३, ५, ७, या विषम वर्षों में उत्तरायण सूर्य  
में कुल-गरम्परा के अनुसार चौल कर्म होना चाहिए ।

कुष विद्वानों के अनुसार क्षौर कर्म ब्राह्मणों को रविवार,  
क्षत्रियों की मंगल, तथा वैश्यों एवं शूद्रों को शनिवार का प्रयोग  
करना चाहिए ।<sup>१</sup>

दक्षिणायण, देवशयन, निर्बल चन्द्रमासुक्ते अन्त में, संध्या,  
शत्रि या गुद्र-समय में यह कार्य न करें ।

मास प्रसूता या रजस्वला हो, तब भी यह कर्म नहीं  
करना चाहिए ।

क्षीण चन्द्र होने पर मृत्यु, क्षीण मंगल हो तो शस्त्राधाता,  
शनि ही तो पंगु, सूर्य हो तो ज्वर होता है ।

#### २०. अक्षरारंभ मुहूर्त

मास—उत्तरायण रवियुक्त मास ।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२ (शुक्र) ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अश्विं०, आद्रा०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, अनु०,  
उर्य०, रे० ।

लघ्न—२, ३, ६, ६ ।

#### टिप्पणी

सर्वप्रथम गणपति सरस्वती का पूजन कर गुह-पूजन करे,  
तथा घृताहुति (१०८ वार) दे, फिर पूर्वाभिमुख गुरु के सामने  
बैठकर अक्षरारंभ करे ।

विप्र ५वें वर्ष, क्षत्रिय ६ या द वें वर्ष तथा वैश्य-शूद्र को  
इत्वे वर्ष अक्षरारंभ का आदेश है ।

१. भाषग्रहाणं वारादो, विप्राणां शुभदं रवे ।

क्षत्रियाणां भासासूनोर्विट् शूद्राणां शनो शुभम् ॥

—ज्योतितिवन्ध

## २१. विद्यारंभ मुहूर्त

मास—उत्तरायण रवि ।

तिथि—२, ३, ५, ७, ९, ११, १२, १५ ।

वार—सूर्य०, गुरु०, शुक्र० ।

नक्षत्र—अश्विं०, मृ०, आ०, पुन०, पु०, इले०, पूर्वो० ३, ह०, चि०, अ०, ध०, श० ।

### टिप्पणी

ब्रद्रा त्याज्य है ।

सामान्य अक्षर सीखने के पश्चात् कुलविद्या या जीविकोपार्जन हेतु जो सीखा जाता है, उसे विद्यारंभ कहते हैं ।

## २२. यज्ञोपवीत मुहूर्त

यज्ञोपवीत संस्कार को कहीं उपनयन, कहीं व्रतबन्ध और कहीं मौन्जबन्धन के नाम से भी पुकारा जाता है । ब्राह्मण इसीलिए द्विज कहलाने का अधिकारी है कि एक बार वह गर्भजन्म लेता है, एवं दूसरी बार जनेऊ धारण करने पर ब्राह्मण जन्म लेता है ।

### यज्ञोपवीत काल

ब्राह्मण ५ या दर्शे वर्ष में, क्षत्रिय ६ या ११वें वर्ष में, तथा वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार ८ या १२वें वर्ष में होना चाहिए ।

८ से १६वें वर्ष में ब्राह्मण का, ११ से २२ तक क्षत्रिय का, तथा १२ से २४ वर्ष के बीच वैश्य का यज्ञोपवीत मध्यम फलद होता है ।<sup>१</sup>

### मास

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन । पर ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य, तथा आषाढ़ मास में विप्र-

१. विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं गर्भज्जनेवस्तिमे,  
वर्षे वाप्यथ पञ्चमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे ।  
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशो वत्सरे ।  
कालेऽप्य द्विगुणे गते निगदितं गौणं तदाहुरुंधाः ॥

—मुहूर्त चिन्तामणि

यज्ञोपवीत वर्ज्य है । जन्ममास भी त्याज्य समझना चाहिए, पर जरूरत पड़ने पर जन्मदिन से दस दिन छोड़कर अन्य दिनों में संस्कार किया जा सकता है । “निर्णय सिन्धु” के अनुसार जन्मपद्म छोड़कर आगे पक्ष में या पिछले पक्ष में यज्ञोपवीत हो सकता है ।

जन्ममासे तिथी भे च विपरीत दले सती ।

क्षार्यं मंगलमित्याहुर्गंभार्गव शौनकाः ॥

### नक्षत्र

हुस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रो०, आ०, स्वा०, पुन०, अ०, ध०, श०, मू०, मृ०, रे०, चि०, अन०, तीनों पूर्वी तथा आद्रा ।

पक्ष—षुक्ल पक्ष उत्तम तथा कृष्ण पक्ष मध्यम ।

तिथि—२, ३, ५, १०, ११, १२ (षुक्ल), १, २, ३, ४, ५ (कृष्ण) ।

समय—मध्याह्न पूर्व ।

दार—दै०, दु०, गु०, श० ।

विशेषतः ब्राह्मण गुरु-शुक्र, क्षत्रिय सूर्य-मंगल, वैश्य बुध तथा शुद्र शनिवार को यज्ञोपवीत दें ।

लग्न—२, ३, ५, ६, ६ ।

गुरु-शुक्र स्व या उच्च राशिस्थ, मूलत्रिकोणस्थ या केन्द्रत्रिकोणस्थ हो तो विशेष शुभ माना गया है ।

### शाखेश

ऋग्वेदी ब्राह्मण

गुरु

यजुर्वेदी "

शुक्र

सामवेदी "

मंगल

अथर्ववेदी "

बुध

यज्ञोपवीत लग्नकुण्डली में शाखेश का प्रबल होना

अत्यावश्यक है ।

१. जन्ममास निषेद्धपि दिनादि दश वर्जयेत् ।  
आरज्ञ जन्म दिवसाच्छुभाः स्युस्तिथ्योऽपराः ॥

—राजमातृण्ड

## नक्षत्र-वेध

अब सप्त शलाका यंत्र दिया जा रहा है। चक्र में जिस नक्षत्र में यज्ञोपवीत हो, तब ठीक उसके सामने के नक्षत्र पर कोई ग्रह नहीं होना चाहिए, अन्यथा उस नक्षत्र का वेध हो जाता है। उदाहरणार्थ यदि पृथ्वी नक्षत्र को यज्ञोपवीत दिया जा रहा हो तो उसके सामने के नक्षत्र ज्येष्ठा पर कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

यज्ञोपवीत-मुहूर्त में नक्षत्र-वेध देखना परमावश्यक है।<sup>१</sup>

## सप्त शलाका वेध यंत्र

| कृ०   | रो०   | मृग०  | आ०    | पु०   | पु०   | श्लेष्म |
|-------|-------|-------|-------|-------|-------|---------|
| भ०    | ..... | ..... | ..... | ..... | ..... | म०      |
| अ०    | ..... | ..... | ..... | ..... | ..... | पू०फा०  |
| रे०   | ..... | ..... | ..... | ..... | ..... | उ०फा०   |
| उभा०  | ..... | ..... | ..... | ..... | ..... | ह०      |
| पूभा० | ..... | ..... | ..... | ..... | ..... | च०      |
| शत०   | ..... | ..... | ..... | ..... | ..... | स्वा०   |
| ध०    | ..... | ..... | ..... | ..... | ..... | वि०     |
| श्र०  | अभि०  | उषा०  | पूषा० | मू०   | ज्ये० | अनु०    |

## त्रिवल

मुहूर्त से पूर्व बटुक का त्रिवल देख लेना चाहिए। बालक की जन्मराशि से सूर्य, गुरु एवं चन्द्रबल का विचार परमावश्यक है। इन तीनों में से एक भी हीन बली हो तो बटुक का सर्वनाश हो जाता है।<sup>२</sup>

## रोगपञ्चक

गत तिथि में लग्न मिलाकर ६ से भाग दें, शेष ५ बचें तो रोगपञ्चक समझें। यह तिथि त्याज्य है।

१. कर्णवेधे विवाहे च व्रते पूसवने तथा।  
प्राशनेचाद्य चूदायां विद्वमृक्षं परित्यजेत् ॥ —दीपि०
२. वणीधिष्ठे बलोपेते उपनीतक्रिया हिता।  
सर्वेषां वा गुरी चन्द्रे सूर्ये च बलशातिनी ॥

## हीगवाण

फिसी राशि के ६, १८, २७वें अंश पर सूर्य हो तो हीगवाण होता है, अतः वह दिन भी त्याज्य समझें।

## सूर्य-चन्द्र गुरु शुद्ध

| दर का सूर्य   | दोनों का चंद्र               | कल्पा का गुरु  | फल              |
|---------------|------------------------------|----------------|-----------------|
| ३, ६, १०, ११  | १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, | २, ५, ७, ८, ११ | शुभ             |
| १, २, ५, ७, ८ | अस्त या क्षीण                | १, ३, ६, १०    | मम(पूज्य स्थान) |
| ४, ८, १२      | ४, ८, १२                     | ४, ८, १२       | अवशुभ           |

यज्ञोपवीत एवं विवाह-मुहूर्त में शुभ सूर्य-चन्द्र-गुरु ही लेने चाहिए, सम ग्रह हो तो पूजा करने से दोष मिट जाता है, पर अशुभ ग्रहों का समावेश तो सर्वथा वर्ज्य है।

## अपवाद

(१) गुरु-सूर्य-चन्द्र की ब्राह्मण, हुगुनी, धत्रिय तिगुनी, वैश्य तिगुनी पूजा करे, तो गुरु-चन्द्र-सूर्य-दोष मिट जाता है।<sup>३</sup>

(२) कुछ भर्तों के अनुसार बटुक १४ साल से बड़ा एवं कल्पा १५ साल में बड़ी हो जाय, तो ४, ८, ८ १२वाँ गुरुदोष भी नहीं लगता। हाँ, गुरु पूजा द्विगुनी आवश्यक है।<sup>४</sup>

(३) यदि सूर्य मेष राशि पर तथा गुरु वर्क राशि का ही, तथा ४, ८, १२वें होने पर भी इनका दोष नहीं रहता।<sup>५</sup>

(४) चैत्र मास में गुरु निर्वल होने पर भी उपनयन-तीक्ष्णार में दोष नहीं लगता; इसमें सूर्य मीन राशिगत ही हो।

१. सदा सपर्या द्विगुणातिदुर्बल शस्ता गुरावादि भुवामपादी।  
तथा नृपाणां त्रिगुणा विशां वा चतुर्गुणात्मीय वलिक्रियाही।
- ज्योतिविदाभरण

२. ब्रूते जन्मत्रिकारिस्थो जीवोऽपिष्टोऽचन्तास्फृत् ।  
शुभोऽतिकाले तुष्टिप्रयत्नस्थो द्विगुणात्मात् ॥ —निर्णय सिन्धु
३. द्वितीय पुत्रांकगत प्रभाकर-त्रयोदशाहात्परतः शुभप्रदः ॥
४. गोषराष्टक वर्गम्यां यदि शुद्धिर्न लभ्यते ।  
तदोपनयनं कार्यं चैत्रे मीनगते रवौ ॥

(५) सिंह और मकर राशि पर गुरु में उपनयन सर्वथा त्यज्य है ।

(६) माता रजस्वला होने पर पुत्र का यज्ञोपवीत सर्वथा वर्ज्य है ।

#### उपनयनकर्ता

उपनयन माता-पिता अपने हाथों से ही दें, उनके न होने पर भाई-भीजाई, दादा-दादी या चाचा-चाची अथवा पितृकुल का कोई सदस्य न हो ।

#### उपनयन में निषेध

कृष्णपथ की छढ़ी से अमावस्या तक तिथि, प्रदोष, अनध्याय, शनिवार दोपहर के बाद का समय, तथा गलग्रह-समय सर्वथा त्यज्य करे ।

#### २३. वेदारंभ मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२ ।

वार—बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चिं०, स्वा० अनु०, श्र०, ध०, रे० ।

लम्न—३, ६, ६, १२ ।

#### २४. विवाह-मुहूर्त

जीवन का सर्वश्रेष्ठ संघं विवाह है, जिसमें पति-पत्नी दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है । चाहे कितने ही धन-धान्य, गाय, घोड़े, राज्यश्री आदि से सम्पन्न कुल हो, किर भी तिम्न दशकुलों का त्याग कर देना चाहिए—

हीनक्रियं निष्पुरुषं निश्चन्दो रोमशार्शसम् ।

क्षयामया व्यपस्मारिश्वितृ कुष्ठिं कुलानिच ॥ मनु०

अर्थात्—सल्किया से हीन, सत्पुरुषों से हीन, वेदविहीन, शरीर पर लम्बे-लम्बे रोम रखने वाला, बवासीर, क्षय, दमा,

१. पिता पितामहो भ्राता ज्ञातयो गौत्रजग्रजा ।

उपनयनेऽधिकारी स्यात् पूर्वाभावे परः परः ॥ — पीयुषधारा

२. प्रत्युद्धाहो नैव कार्यो नैकस्मै दुहितृद्वयम् । —ज्योतिर्निबन्ध

३. नैवेक जन्ययोः पुंसोरेक जन्येतु कन्यके । —नारद पुराण

६०

लाली, आमाशय, मिरणी, श्वेत कुष्ठ और गलित कुष्ठयुक्त पुल की कान्धा या वर स्वीकार नहीं करना चाहिए ।

पत्नी कौरी हो ?

अव्यंगांगीं सौम्यनाम्नी हंसवारण गामिनीय् ।

तनुलोककेश दशनां मृद्धंगी मुद्दहेत्स्वयम् ॥ मनु०

अर्थात्—जिसके सरल मृद्ध सौम्य अंग हों, जिसका नाम शुचर हो, हस या हथिनी के समान चाल हो, सूक्ष्म भूरे रोम हों, बाल और दाँत चमकीले हों, तथा कोमलांगी सलज्ज कन्या के साथ विवाह करना शुभ है ।

#### निषेध

एक ही वर को दो कन्याएँ न दें, और न दो सहोदर भाइयों को सहोदरा कन्याएँ दें तथा द्रव्य लेकर कन्या देना भी पापवर्धक है ।

#### विवाह-समय

अष्टवर्षा भवेद् गीरी नववर्षा च रोहिणी ।

दशवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥

माता चंव पिता तस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ।

अरस्ते नरकं यान्ति द्वित्वा कन्या रजस्वलाम् । —मनु०

अर्थात्—लड़की अठ वर्ष में गोरी, नवे वर्ष में रोहिणी तथा धर्षावें वर्ष में कन्या कहलाती है । माता-पिता तथा बड़ा भाई यदि रजस्वला कन्या देखता है, तो वे नरक में पड़ते हैं ।

#### अष्टकूट

वरकन्या के विवाह-पूर्व आठ बातों पर विचार किया जाता है । ये अष्टकूट कहलाते हैं—

घर्णी वश्यं तथा तारा यौनिश्च महमैत्रकम् ।

गण मीत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणधिका ॥—गु० चिं०

अर्थात्—(१) वर्ण, (२) वश्य, (३) तारा, (४) योनि,

(५) पह-मैत्री, (६) गण-मैत्री, (७) भकूट तथा, (८) नाडी, चैताठ अष्टकूट कहलाते हैं ।

अल्पेनाधि हि शुल्केन पिता कन्या ददाति य ।

रीरवै वहुवर्षाणि पुरोषं मूत्रमश्नुते ॥—आ० स्म०

६१

## १. वर्णविचार

राशि

४, ८, १२  
१, ५, ६  
२, ६, १०  
३, ७, ११

अब वर्णगुण-चक्र पर ध्यान दें—

वर्ण

ब्राह्मण  
क्षत्रिय  
वैश्य  
शूद्र

वर

| वर्ण     | ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र |
|----------|----------|----------|-------|-------|
| ब्राह्मण | १        | ०        | ०     | ०     |
| क्षत्रिय | १        | १        | ०     | ०     |
| वैश्य    | १        | १        | १     | ०     |
| शूद्र    | १        | १        | १     | १     |

वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्चस्तरीय या अधिल होने पर एक गुण मिलता है।

वैश्य

वैश्य

राशि

चतुष्पद १, २, धनु का उत्तरार्द्ध, मकर का पूर्वार्द्ध  
मानव ३, ६, ७, धनु का पूर्वार्द्ध, ११  
जलचर ४, मकर का उत्तरार्द्ध, १२  
वनचर ५

इनमें सर्वश्रेष्ठ मानव, फिर जलचर, फिर वनचर, फिर चतुष्पद एवं सबसे अधिम कीट है।

इसी प्रकार अन्य अष्टकूटों के बारे में भी विचार करें।  
इनमें ग्रह-मौत्री (पंचधा मौत्री) सबसे प्रमुख है—

वर्णवैर योनिवैर गणवैरं नृदूरकम् ।

दुष्टकूट भवं सर्वं ग्रह-मौत्रेण नश्यति ॥

—फलित नवरत्न संग्रह

अर्थात्—वर्णवैर, योनिवैर, गणवैर, दुष्टकूट आदि दोष तब नहीं लगता, जब कि ग्रह-मौत्री हो।

ग्रह आपस में कौन किसका शुभ है, कौन किस ग्रह का

६२

मित्र है, और कौन-कौन ग्रह परस्पर न शत्रु हैं और न मित्र, इन्हें आप निष्मांकित तालिका से समझने का प्रयास करें।

## ग्रह-मौत्रीचक्र

| ग्रह  | सूर्य | चंद्र                 | मंगल  | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   |
|-------|-------|-----------------------|-------|-------|-------|-------|-------|
| ग्रह  | चंद्र | सूर्य                 | सूर्य | सूर्य | बुध   | बुध   | बुध   |
| मंगल  | मंगल  | बुध                   | चंद्र | शुक्र | चंद्र | शनि   | शुक्र |
| गुरु  | गुरु  | गुरु                  | गुरु  | मंगल  | मंगल  | गुरु  | गुरु  |
| बुध   | बुध   | मं०, गु०,<br>शु०, श०, | शुक्र | मंगल  | शनि   | मंगल  | गुरु  |
| गुरु  | गुरु  | शनि                   | गुरु  | शनि   | गुरु  | गुरु  | गुरु  |
| शुक्र | शुक्र | बुध                   | बुध   | शुक्र | सूर्य | सूर्य | सूर्य |
| शनि   | शनि   | चंद्र                 | चंद्र | शुक्र | चंद्र | चंद्र | मंगल  |

## गण-विचार

वर-कन्या का एक ही गण हो तो विवाह उत्तम, देव मानव ही तो उत्तम, देव-राशस हो तो मध्यम एवं मानव-राशस ही तो अधिम समझता चाहिए।

गणा

नक्षत्र

देवगण—३०, इले०, म०, चि०, वि०, ज्य०, मू०, घ० श०।

मनुष्यगण—८०, रो०, आ०, पूफा०, पूषा०, उफा०, उषा०।

राक्षणगण—८०, मृग०, पुन०, पू०, ह०, स्वा०, अनु०, श्र०, ऐ०।

ये गण मात्र विवाह हेतु ही वर-कन्या के नक्षत्रों से समझने चाहिए। पर ग्रह-मित्रता मिल जाने पर कन्या के राशस गण का दोष नहीं व्यापता।

१. सुष्टुप्त योनि शुद्धि ग्रह सत्यं गुणत्रयम् ।

सुष्टुप्त, तम सद्भावे कन्या रक्षो गणा शुणा ॥

—ज्यो० नि०

### राशि होषः

(१) एक ही राशि (वर-कन्या की) सर्वोकृष्ट कहलाती है, पर वर-कन्या दोनों के नक्षत्र-वरण एक ही नहीं होने चाहिए।<sup>३</sup>

### द्विर्दिश

(१) जब वर की राशि से कन्या की राशि वारहवीं या दूसरी हो तो 'द्विर्दिश' योग होता है, जो कि सर्वथा त्याज्य है।

(२) केवल सिंह कन्या राशि के दम्पति हों तो द्विर्दिश योग नहीं लगता, एवं शुभ होता है—

समं भं द्विर्दिशके द्वितीय ।  
सहितं श्रेष्ठं त्रिया युधरि ॥

(३) वर की राशि से कन्या की राशि ग्यारहवीं या तीसरी हो तो श्रेष्ठ होती है, इसे "विरेकादश" योग कहते हैं—

एकराशी महाप्रीतिश्चतुर्थं दशमे सुखम् ।  
तृतीयेऽकादशे वित्तं सुप्रजा सम सप्तके ॥ —ज्यो० नि०

### चतुर्थं दशमं

इसमें दोनों की राशियाँ परस्पर चतुर्थ-दशम होती हैं, जो कि शुभ हैं। पर कुछ विद्वानों के अनुसार तुला मकर, वृष्णि-सिंह, मेष-कर्क, मिथुन-मीन, धनु-कन्या, तथा कुम्भ वृश्चिक 'चतुर्थं दशमं' दारिद्र्य सूचक हैं।

### नवम-पंचम

यदि वर राशि कन्या राशि से परस्पर नवम-पंचम हो तो सन्तान-हानि होती है।

### षड्बट्टक

वर-कन्या की राशियाँ परस्पर छठे-आठवें हो तो षड्बट्टक-योग होता है, जो कि दुर्भाग्यसूचक है।

१. गणदाषो योनि दोषो वर्णदोषः षड्बट्टकम् ।

चत्वारि नैव दुर्घन्ति राशि मैत्री यदा भवेत् ॥

२. एकराशी शुभोद्वाह एकमांशे मृतिप्रदः ।

—बृहज्ज्योतिषसार  
—मार्तण्डवल्लभ

पर गतान्तर से निम्न षड्बट्टक शुभ एवं अशुभ है—

|             |               |
|-------------|---------------|
| शुभ         | अशुभ          |
| वृष-वृश्चिक | वृष-धनु       |
| मिथुन-मकर   | कर्क-कुम्भ    |
| मिह-मीन     | कन्या-मेष     |
| तुला-यूष    | वृश्चिक-मिथुन |
| धनु-कर्क    | मकर-सिंह      |
| कुम्भ-कन्या | मीन-तुला      |

### सम सप्तक

दोनों वर-कन्या परस्पर यदि समस्पतक हों यानि पति की राशि से कन्या की राशि सातवीं हो तो वह समस्पतक काहलाती है जो कि सर्वश्रेष्ठ कहलाती है। पर कर्क-मकर तथा सिंह-कुम्भ का समस्पतक विष के समान त्याग देना चाहिए।<sup>४</sup>

नाड़ी

आधि नाड़ी—अ०, आ०, पुन०, उफा०, ह०, ज्य०, मू०, श०  
पूभा० ।

मध्य—भ०, म०, पु०, फा०, चि०, अनु०, पू०, षा०, ध०,  
उ०, भा० ।

अन्त्य—ह००रो०, इले० म०, स्वा०, वि०, उ० षा०, श०, रे० ।

(१) एक ही नाड़ी पति-पत्नी की हो तो वह अशुभ है।  
(२) दोनों की आधी नाड़ी हो तो विवाह के पश्चात् विरोध, दोनों की मध्य नाड़ी हो तो विवाह-पश्चात् मृत्यु तथा दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य-दुःख भोगना पड़ता है।

### षष्ठ्याद

(१) नाड़ी-दोष में केवल मध्य नाड़ी एकता ही त्याज्य है।<sup>५</sup>  
(२) यदि राशि एक हो पर नक्षत्रभेद हो, या नक्षत्र एक हो

मकरे कक्षे चंच कुम्भे सिंहे तथैव च ।  
चरणर्ण सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत् ॥

निधनं मध्यनाहयांच दम्पत्यीनेव पार्शवयो ।

—ज्योतिर्निबन्ध  
—ज्योतिःप्रकाश

- पर राशि भेद हो तो नाड़ी-दोष नहीं लगता।
- (३) कृ० रो०, मृग०, आ०, पुर्य०, ज्ये०, श्र०, उ०, भ० और रेवती नक्षत्रों में से ही वर-वधू के नक्षत्र हों नाड़ी-दोष नहीं लगता।
  - (४) क्षत्रियकुल के लिए नाड़ी-दोष देखना आवश्यक नहीं।
  - (५) यदि वर-कन्या की राशि का स्वामी गुरु, गुरु या इसमें से कोई ग्रह हो तो नाड़ी-दोष नहीं लगता।
  - (६) नाड़ी-दोष होने पर महामृत्युञ्जय जप करने से दान्त हो जाता है।<sup>१</sup>
  - (७) ब्राह्मणों को नाड़ी-दोष, क्षत्रियों को वर्ण-विचार, वैदों को गण-विचार तथा शूद्रों को योनि-शुद्धि-विचार विद्या तथा विचारणीय है।<sup>२</sup>

### गुण विचार

वर्ण अष्टकूट आदि की गणनानुसार कुल गुणों की संख्या ३६ होती है। वर-कन्या के गुणों या गणों की संख्या १२ से २० तक सामान्य, २१ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ज्ञानश्रेष्ठतम् होता है। ज्योतिर्निकन्ध में लिखा है :

गुणं धाडशभिनन्द्य मध्यभा विश्विस्तथा।

श्रेष्ठं विशद्गुणं यावत्परतस्तुतमोत्पाम् ॥

पर मेलापक में १८ गुणों से अधिक की प्राप्ति उचित एवं ग्राम समझी गई है।<sup>३</sup>

१. रोहिण्यार्दा मृगेन्द्राग्निपुष्ट्यं श्रवण पौष्णभम् ।  
अहिर्बुंध्यक्षंमेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते ॥ —ज्योतिर्शिचन्तामणि
२. दोषानुपत्तये नाड्या मृत्युञ्जय जपादिकम् ।  
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तप्येत् कांचनादिना ॥

३. नाड़ीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये ।  
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ॥ —शीघ्र बोध
४. एककं वृद्धितो ज्येष्ठा वर्णदीनां गुणाः क्रमात् ।  
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके ॥ —मुहूर्तं गणपति

६६

३० सा

### मंगल विचार

वर-वधू मेलापक में मंगल विचार सर्वोपरि महत्व रखता है। यदि (बार या कन्या की) जन्मकुण्डली श्रवण चन्द्रकुण्डली के लगनशुरुर्णि सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में मंगल स्थित हो तो वह विनाशकारी होता है—

वग्ने व्यये च पाताले, जामिने चाष्टमे कुजे ।  
काणा भर्तु विनाशाय, भर्ती कन्या विनाशत् ॥

—मुहूर्तं संग्रह

लग्नाद्विद्योर्वा यदि जन्मकाले महीसुतो वा शनि राहु केतवः ।  
व्ययाद्वितुर्णि प्रथमे कलत्रे कन्या वरं हन्ति वरद्वच कन्याम् ॥

### उपवाद

तिथि स्थितिर्णि होने पर मंगल-दोष नहीं रहता—

- (१) यदि १, ४, ७, ६, १२वें भाव में शनि हो तो उसका मंगल-धौषध शान्त हो जाता है।<sup>४</sup>
- (२) बलदान गुरु शुक्ल-लग्न या सप्तम भाव में हो तो भौम-दोष नहीं रहता।
- (३) शनि भौमोद्यवा करिचत्पापो वा तादृशो भवेत् ।  
तेष्वैव भवनेष्वैव भौम दोष विनाशक्त् ॥

यदि कन्या की कुण्डली में जहां मंगल हो, वर की कुण्डली में वही कोई प्रबल पापमह हो तो भौम-दोष नहीं रहता। इसी प्रकार वर से वधू के बारे में भी समझें।

- (४) वृक्षी, नीज, अस्त, अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल १, ४, ७, ६, १२वें भाव में हो तब भी मंगल दोष नहीं रहता।
- (५) राशि मैत्रै यथायाति गणैर्यं वा यदा भवेत् ।

अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ॥

अथाति राशि मैत्री हो, गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हों, तो भौम-दोष नहीं रहता।

- (६) यदि वर की कुण्डली में छठे स्थान में मंगल, सातवें भाव में राहु तथा धाठवें भाव में शनि हो तो, कन्या की

१. यामिते च यदा सौरिलोने वा हिंसुके तथा ।

२. वैष्णवी वैष्णव भौम दोषो न विद्यते ॥ —मुहूर्तं संग्रह  
६१०

- कुण्डली में मंगल दोष रहने पर भी उसका प्रभाव रंचमात्र भी दूषित नहीं होता ।<sup>१</sup>
- (७) वर कन्या दोनों की कुण्डलियों में मंगल-दोष हो तो दोनों में से किसी को मंगल-दोष नहीं रहता ।<sup>१</sup>
- (८) मेष राशि का मंगल लग्न में, या वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थ भाव में, या मकर राशि का सातवें या कक्ष राशि का आठवें, या धनु राशि का मंगल बारहवें भाव में हो तो मंगल-दोष नहीं लगता ।<sup>१</sup>
- (९) निम्न योग होने पर भी मंगल दोष नहीं रहता ।<sup>१</sup>
- (क) दूसरे भाव में चन्द्र शुक्र हो ।
- (ख) मंगल पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो, या साथ में हो ।
- (ग) केन्द्र भाव (१, ४, ७, १०) में राहु हो ।
- (घ) मंगल तथा राहु कहीं पर भी साथ में बैठे हों ।
- (१०) केन्द्र में चन्द्रमा या चन्द्र-मंगल युति हों तो भी भीम-दोष नहीं रहता ।
- (११) केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप-ग्रह हों, तब भी मंगल दोष नहीं लगता । अतः मंगल विचार अत्यन्त सूक्ष्मता एवं सावधानीपूर्वक करना चाहिये ।

#### विष कन्या

(१) २, ७, १२ तिथि हो, रवि, शनि या मंगलवार हो, तथा कृतिका, आश्लेषा या शतभिषा नक्षत्र हो, ऐसे योग में जन्म लेनेवाली कन्या विषकन्या कहलाती है ।

१. षष्ठे च भवने भीमोराहुः सप्तम सम्भव ।
२. अष्टमे च यदा सौरि तस्या भार्या न जीवति ॥—ज्योतिष सार “कजे वा तादृशीद्वयो” —मुहूर्तं गणपति
३. अजे लने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे । द्यूते मृगे कर्किचाष्टी भीम दोषी न विद्यते ॥ —मु० पा०
४. न मंगलो चन्द्र भुगु द्वितीये न मंगली पश्यति यस्य जीव । न मंगली केन्द्रगते च राहूर्तं मंगली मंगल राहु योगी ॥ —मुहूर्तं दीपक

६५

भद्रा तिथिर्यथाश्लेषा शतभिषा कृतिका तथा ।

मंदर श्विवारेषु विषकन्या प्रजायते ॥ —ज्यो० नि०

(२) वृषभ ग्रह लग्न में, एक पापग्रह दशम भाव में, तथा दो शारणह पष्ठभाव में हों तो विषकन्या कहलाती है ।

(३) लग्न में एक कुरु ग्रह व एक सौम्यग्रह हो ।

परिहार— १. लग्न या चन्द्र से सप्तम भाव का स्वामी शुभग्रह हो तो विषकन्या-दोष मिट जाता है ।

२. याविश्यादि त्रिं कृत्वा वैधव्य विनिवृत्तये ।

अद्वत्थाभिदि रुद्राह्य दद्यातां विरजीवने ॥

२५. विवाहे ग्रहाणं रेखाप्रद स्थान

नीचे विवाहरेखा साधन या विश्वा साधन दिया जा रहा है—“लग्न शुभं विवाहे स्याद् दशविशेषकाधिकम्” के अनुसार बीस रेखा मिलनी शुभ कहलाती है—

रेखा प्रद स्थान

| सूर्य | चंद्र | मूर्ति | बुध | वृद्धि | शुक्र | शनि | रात्रि | ग्रह |
|-------|-------|--------|-----|--------|-------|-----|--------|------|
| ३     | २     | ५      | १   | १      | १     | ३   | ३      | ३    |
| ६     | ३     | ६      | २   | २      | २     | ६   | ६      | ८    |
| ८     | ११    | ११     | ३   | ३      | ४     | ८   | ८      | ११   |
| ११    |       |        | ४   | ४      | ५     | ११  | ११     |      |
|       |       |        | ५   | ५      | ६     |     |        |      |
|       |       |        | ६   | ६      | १०    |     |        |      |
|       |       |        | ६   | ६      | ११    |     |        |      |
|       |       |        | १०  | १०     |       |     |        |      |
|       |       |        | ११  | ११     |       |     |        |      |
| स्थान |       |        |     |        |       |     |        |      |
| ३॥    | ५     | ११॥    | २।  | ३।     | २।    | १॥  | १॥     | १॥   |

२६. वारदान मुहूर्त

दैर्य-कन्या विवाह से पूर्व वर के पिता तथा कन्या के पिता संगार्दि के लिए जा मिलते हैं, उसे ‘वारदान’ कहते हैं— तिथि— २, ३, ५, ७, ८, ९, १०, १२, १४, १५ (शुक्ला) ।

वर— चंद्र, शुक्र, गुरु ।

६६

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, उत्तरा ३, ह०; चि०, स्वा०, अनु०,  
श्र० घ० रे०।

### २७. वर-तिलक-मुहूर्त

जब सगाई निश्चित हो जाती है, तब कन्या पक्ष के लोग  
वर के तिलक करने को जाते हैं, तथा भेट देते हैं—  
तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, कृ०, रो०, पूर्वा० ३, उत्तरा ३।

भद्रा, गण्डान्त, गुरु-शुक्र अस्त, निर्बल चन्द्र-त्याज्य है।

### २८. विवाह-दोष

विवाह मुहूर्त निकालने के लिए निम्नलिखित इकीस  
दोष विचारणीय हैं—

|                     |                 |                    |
|---------------------|-----------------|--------------------|
| १. उदयास्त          | २. पंचाग शुद्धि | ३. मासान्त         |
| ४. षड् वर्ग         | ५. अष्टमस्थ भौम | ६. त्रिविधगण्डान्त |
| ७. पष्ठभावस्थ शुक्र | ८. कर्तरी दोष   | ९. चंद्र दोष       |
| १०. विष घटी         | ११. मुहूर्त दोष | १२. वार दोष        |
| १३. ग्रहण           | १४. विद्ध ग्रह  | १५. पाप नक्षत्र    |
| १६. नवाश दोष        | १७. पातक        | १८. वैधृति         |
| १९. लक्षा           | २०. वैधृत       | २१. व्यतिपात       |

### २९. विवाह योग-तथ्य

जीवे विवाह-सम्बन्धी मुहूर्त स्पष्ट करने से पूर्व जानकारी  
स्पष्ट की जा रही है—

१. भाई के विवाह के छः पहीनों के भीतर बहिन या  
बहिन के विवाह के छः महीनों के भीतर भाई का विवाह निषेध  
है। पर संवत् बदल जाय, और इस छीच छः मास से भी कम  
समय हुआ हो तो भी विवाह हो सकता है।<sup>१</sup>

२. दो भाई या दो बहिनों का एक-साथ विवाह भी  
शास्त्र के विरुद्ध है।<sup>२</sup> पर कुछ विद्वानों के अनुसार दो अलग-

१. न सहज सुतोद्वाहोऽव्याधें शुभे। —मु० चि०

२. एक मातृजयोरेक वत्सरे पुरुष स्त्रियो। —मु० सं० द०

अलग-चरी में मण्डप बनाकर सगे भाई-बहिनों या भाइयों का  
विवाह किया जा सकता है।

बायान के पश्चात्, गत तीन पीढ़ी तक के यदि किसी  
सदस्य की मृत्यु हो जाय, तो एक मास के पश्चात् विवाह-  
शास्त्रसम्मत है।<sup>३</sup> यदि कन्या या वर के माता-पिता, बड़े  
भाई या बड़ी बहिन की मृत्यु हो जाय, तो एक वर्ष के बाद  
विवाह उचित है।<sup>४</sup> 'नारद संहिता' के अनुसार पिता की मृत्यु  
के बाद १ वर्ष, माता की मृत्यु के बाद ६ मास, स्त्री की मृत्यु  
के बाद तीन मास, पुत्र की मृत्यु के बाद दो मास, सम्बन्धी की  
मृत्यु के बाद एक महीना छोड़कर विवाह किया जा सकता है।

दण्डिणायण, देवशयन काल, क्षयमास अधिक मास, गुरु-  
शुक्रासा, शय वृद्धि तिथि, सिंह मकरस्थ गुरु, श्राद्ध, व्यतिपात  
आदि काल में विवाह-मुहूर्त निषेध है।

### ३०. गौधूलि वेला

'मुहूर्त चिन्तामणि' के अनुसार गौधूलि-वेला की महत्ता  
सर्वपरि है, चाहे नक्षत्र, तिथि, करण, वार, नवांश, योग  
अष्टमस्थान दोष या जामित्र-दोष भी हो, पर गौधूलि वेला में  
इनका दोष अत्म हो जाता है, लग्नशुद्धि भी आवश्यक  
नहीं है, और ज्ञ मुहूर्त शुद्धि की—

नास्या पूर्खं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता,  
नी वारो न च लवविधिनों मुहूर्तस्य चर्चा।

नी वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,  
गौधूलि: रा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता ॥

गौधूली वेला कब मानी जाय, इसके लिए उल्लेख है—

१. वध्वा वरस्पापि कुलेत्रि पुरुषं नाशं व्रजेत्कश्चन निश्चयोत्तरम्  
मासैतरं तत्र विवाह इष्यते शान्त्याथवा सूतक निर्गमेऽपरै ॥

—मुहूर्त चिन्तामणि

२. वाग्दानानन्तरं यत्र कुलयोः यस्य चिन्मृतिः ।  
तदा संवसरादूर्ध्वं विवाहः शुभदो भवेत् ॥

—निर्णय सिन्धु

वदा नास्तंगतो भानुर्गेघृल्यां पूरितं नभः ।  
सर्वं मंगलं कार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥  
वधस्तित्पूर्वमध्युद्धर्वं घटिकावन्तु गोरजः ।  
सःकालो मंगले श्रेयान् विवाहादौ शुभप्रदः ॥  
निदावे त्वर्धविम्बेऽज्ञे पिण्डीभूते हिमागमे ।  
मेघकाले तु पूर्णस्ते प्रीवतं गोधूलिकं शुभम् ॥

अर्थात् सूर्यास्त न हुआ हो, तथा लौटती हुई गायों के खुर से उड़ी रज से गगन आच्छादित हो रहा हो, । वह मंगलमय गोधूलि वेला है । सूर्य के विभव के आवे भाग को जब क्षितिज छिपा लेता है, उससे पूर्व के १२ मिनट गोधूलि वेला कही जाती है । कुछ विद्वान् सूर्यास्त पूर्व १२ मिनट और सूर्यास्त के बाद के १२ मिनट इस प्रकार इन २४ मिनटों को गोधूलि वेला कहते हैं ।

वर्जित

१. जब गोधूलि लग्न से दर्वें मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र में कोई ग्रह हो, और १, ६ या दर्वें चन्द्र हो तो वह गोधूलि समय दोषयुक्त होता है ।<sup>१</sup>

२. गोधूलि लग्न से १,६ दर्वें चन्द्र होने से कन्या के लिए तथा, १,७,८ वें मंगल होने से वर के लिए प्राणघातक होता है ।

३. यदि चन्द्र, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र में से कोई गोधूलि लग्न से ६, दर्वें हो अथवा लग्न में चंद्र हो तो गोधूलि-लग्न वर्ज्य है ।<sup>१</sup>

४. कुलिक, क्रान्ति साम्य या १,६, दर्वें चन्द्र हो गोधूलि-लग्न दूषित हो जाता है ।<sup>१</sup>

१. अष्टमे जीव भोमी च बुधश्च भार्गवोष्टमे ।  
लग्ने षष्ठाष्टगश्चन्द्रो गोधूली नाशकस्तथा ॥
२. पष्टेष्टमे मूर्तिगते शाशांके, गोधूलिके मृत्युमुरीति कन्या ।  
कुजेष्टमे मूर्तिगतेऽयवास्ते वरस्य नाशं प्रवदन्ति गर्णः ॥
३. षष्ठाष्टमे चन्द्रज चन्द्र जीवे क्षोणीसुवै वा भृगुनन्दने वा ।  
मूर्तो च चन्द्रे नियमेन मृत्युर्गे लिकं स्यादित वर्जनीयम् ॥
४. कुलिकं क्रान्ति साम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशि ।  
तदा गोधूलिकस्याज्य पंच दीर्घश्च दूषितः ॥

५. पंचम श्वाव या नवमभाव में शनि हो ।

६. शनिवार की गोधूलि-वेला सूर्यास्त के बाद ही शुभ मानी है ।

७. गुरुवार की सूर्यास्त के बाद को गोधूलि-वेला त्याज्य है ।

८. सूर्योदयकालीन लग्न से सातवाँ लग्न गोधूलि-लग्न कहलाता है ।

### ३१. पुनर्विवाह मुहूर्त

मास- ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, पौष, फालगुन, वैशाख ।  
तिथि- २, ३, ४, ५, १०, १२, १३ (शुक्लपक्ष) ।

वार- सू०, बु० श० ।

नक्षत्र- अ० कृ०, आ०, पुन०, पु०, श्ल०, पूर्वा० ३, चि०, र० ।  
टिप्पणी

निम्न स्तर परी स्त्रियाँ पति की मृत्यु के बाद दूसरा पति खुललेती हैं, तथा उसे विवाह कर लेती हैं, इसे पुनर्विवाह कहते हैं ।

गुरु, शुक्रात, तथा क्षीण चन्द्रमा त्याज्य करे ।

### ३२. विवाह मुहूर्त

मास- दैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, पौष, माघ, फालगुन ।  
तिथि- १ (कृ.) २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १४, (शु.) ।

वार- सभी वार ।

नक्षत्र- रो०, मृ०, म०, उ० ३, ह०, स्वा०, अन०, र० ।  
टिप्पणी

गुरु, शुक्रात, तिहस्य गुरु, भद्रा, चन्द्रक्षय वर्जित है ।

### ३३. वैदिका-मुहूर्त

तिथि- २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, २१, ११, १४, १५ (शु.) ।  
वार- सभी ।

नक्षत्र- कृ०, रो०, मृ०, आ०, पु०, पूर्वा० ३, श्र०, अन०, ध०, र० ।

### टिप्पणी

विवाह में यजकार्य-हेतु वेदी निर्माण एक आवश्यक कृत्य है, यह ४ हाथ परिमित लम्बी-चौड़ी एक हाथ ऊँची और क्रमशः पूर्व की ओर ढालू हो। वेदी के चारों ओर ४ स्तम्भ (या छूटिया) रोपे जाते हैं। इन स्तंभों में प्रथम स्तंभ निम्न सूर्य राशियों में संबंधित दिशा में रोपे।<sup>१</sup>

|            |             |
|------------|-------------|
| सूर्य राशि | दिशा        |
| २, ३, ४    | अग्निकोण    |
| ५, ६, ७    | ईशान कोण    |
| ८, ९, १०   | वायु कोण    |
| ११, १२, १  | तैत्रत्यकोण |

### ३४. वधूप्रवेष-मुहूर्त

मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष फलग्रन्थ।

तिथि—२, ३, ४, ५, ६, ८, १०, ११, १३, १५ (शुक्ल)।

दात्र—चं०, बु०, गु० शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, म०, तु०, उत्तरा ३, ह० चि०, स्वा०, अनु०, ज्य०, श०, अ०, ध०, र०।

लग्न—स्थिर।

### टिप्पणी

विवाह के बाद प्रथम बार पतिगृह जाने को वधूप्रवेश या वधू-आगमन कहा जाता है। विवाह तिथि, भद्रा, व्यतिपात, गुरु शुक्रास्त, क्षीण चन्द्र वर्जित है।

विषम दिनों में, विषम मासों में या विषम वर्षों में वधू-प्रवेश शुभ है।

सर्वथा नवीन गृह में वधूप्रवेश ल्याज्य है।

### ३५. प्रथम पाक कर्म मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ६, ८, १२, १३, १५ (शु)।

दात्र—चं०, बु०, गु०, शु० श०।

- मीन सरोवर सिंह, घर वृषे वदी थाय।  
तीन तीन मास गमन करे सर्प करे सिणगार॥

नक्षत्र—कृ०, रो०, म०, प० ३, वि० अनु०, अ०, ध०, र०।  
लग्न—२, ५, द, १०, ११।

### टिप्पणी

सुखल में आने के बाद वधू को प्रथम बार पाक कार्य दिया जाना ही उपत्त-मुहूर्त कहलाता है।

३६. प्रथम युवति संभोग मुहूर्त  
तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ७, ६, १३, १५ (शु)।

दात्र—चं० बु०, गु० शु० श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, म०, प०, अनु०, प०, अ०, ध०, र०।

लग्न—१, ५, ७, ६, ११

वन्द्र—प्रबल हो।

### ३७. वस्त्र-निर्माण मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५।

दात्र—स०, च०, म०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—म०, रो०, उ० ३, चि०, अ०, र०।

### टिप्पणी

हाथ करघा, मिल, कॉटन मिल छपाई आदि वस्त्र सजा या वस्त्र निर्माण हेतु उपर्युक्त मुहूर्त का उपयोग करना चाहिए।

३८. वस्त्र धोने की दुकान मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १३, (दोनों पक्ष)

दात्र—चं०, म०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, पुन०, प०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०।

### टिप्पणी

धोवी की दुकान का मुहूर्त भी यह है।

३९. चमड़ का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १०, १२, १५ (दोनों पक्ष)।

दात्र—स०, श०।

१. रेवती रोहिणी चित्रानुराधामृगोत्तरे।

शनि हिंद्वा कुविंदानां तन्तुभिः पट्ट साधनम् ॥ —मुहूर्तगणपति

नक्षत्र—कृ०, मू०, श्ले०, म०, पूर्वा० ३, चि०, वि०, अनु०,  
ज्य०, रे०।

#### टिप्पणी

नई जूते की दुकान खोलना, बमड़ा रंगना, चमड़े से  
संबंधित वस्तुओं की दुकान खोलना या नये जूते पहिनने से  
सम्बन्धित।

४०. सुगन्धित द्रव्य मुहूर्त  
तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ दोनों  
पक्ष।

संवत्सारंभ एवं दीपावलि भी।

वार—चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, मू०, रो० पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, अनु०,  
श्र०, ध०, रे०।

#### टिप्पणी

इत्र, चन्दन, अगर फूल आदि की दुकान से संबंधित।

४१. भूषण-रत्न-मुहूर्त  
तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२,  
१३, १४।

वार—बु० गु० श०।

नक्षत्र—अ०, कृ०, रो०, मू०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०,  
स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

#### टिप्पणी

सोने-चाँदों की दुकान, जवाहरात, बने-बनाये आभूषण बेचना  
आदि की दुकानों के लिए।

४२. नौकरी करने का मुहूर्त  
तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, १३, १५।

वार—बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, मू०, पु०, चि०, अनु०, रे०।

#### टिप्पणी

१०, ११वें० सू०, म०, शुभ है, लग्न से १, २, ४, ७, १०  
११वें भाव में शुभग्रह होना आवश्यक है।

सूर्य ५, १४, २३वें अंश पर हो तब नृपवाण कहलाता है  
अतः नृपवाण का भी त्याग करना चाहिए।

४३. सवारी (वाहन) लाने का मुहूर्त  
तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ (शु०)।  
वार—चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, मू०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, श्र०, ध०,  
शत० रे०।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ८, १२ राशिन्लग्न।

#### टिप्पणी

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गणना करते हुए  
प्रथम ३ नक्षत्रों में—नेष्ट

|       |   |          |
|-------|---|----------|
| ४-६   | " | "        |
| ७-९   | " | "        |
| १०-१२ | " | श्रेष्ठ  |
| १३-१५ | " | "        |
| १६-१८ | " | नेष्ट    |
| १९-२१ | " | "        |
| २२-२४ | " | "        |
| २५-२७ | " | श्रेष्ठ। |

४४. नौकर रखने का मुहूर्त

तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, १३ (शु०)।

वार—सू०, मू०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, गू०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०,  
शै०।

#### टिप्पणी

नौकरके जन्म-नक्षत्र से भालिक के जन्म-नक्षत्र तक  
गिने यदि।

|                |             |
|----------------|-------------|
| ३-नक्षत्रों तक | अर्थलाभ     |
| ४-६            | विनाश       |
| ७-९            | धनधान्य-मुख |
| १३-१८          | दारिद्र्य   |

१६—२०      „      प्राणभय  
 २१—२४      „      शुभ  
 २५—२६      „      पीड़ा  
 २७      „      घनलाभ  
 २८      „      नाश।

#### ४५. लौकाचालन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ११, १३ (शुब्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, म०, पूर्वा ३, ह०, अनु०, श०, ध०।

लग्न—कक्ष, मकर।

#### टिप्पणी

नौका की घोड़पोषचार पूजा कर स्वस्तिवाचन के साथ उसे जल में उतारना चाहिए।

#### ४६. शस्त्र-निर्माण-मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ५, ७, १०, १२, १३ (शु०)।  
कार—सू० मं० श०।

नक्षत्र—भ०, कू०, आ०, श्ल०, पुन०, पु०, पूर्वा ३, ज्य०, म००,  
श०, र०।

#### टिप्पणी

शस्त्र निर्माण करना, या बने-बनाये शस्त्र बेचने की दुकान हेतु।

#### ४७. शशु-ताड़न मुहूर्त

तिथि—३, ४, ६, १३, १४।

वार—सू०, म०, श०।

नक्षत्र—भ०, आद्रा, श्ल०, म०, पू० ३, ज्य०, म०।

#### टिप्पणी

लग्न १, ५, ८, १०, ११, शुभ है। लग्न में कर प्रह जरूरी है। शशु पर मुकदमा चलाने या उसे पीटने के लिए उपर्युक्त मुहूर्त श्रेयस्कर है।

#### ४८. मादक वस्तु मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२ (शु०) १५।

वार—चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—भ०, आ०, श्ल०, ज्य०, म०, र०।

#### टिप्पणी

शराब, गांजा, भाँग, तम्बाकू आदि की दुकान खोलने के लिए।

#### ४९. वात्य-प्रयोग मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ८, १०, १३ (शु०)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु० श०।

नक्षत्र—अ०, मृग०, उत्त०, श०, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, ध०  
ध० र०।

#### टिप्पणी

तबला, सितार, सारंगी, ग्रामोफोन, रेडियो आदि वाद्ययंत्रों की दुकान खोलने के लिए।

#### ५०. शत्रु-संघि (राजीनामा) मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ८, १०, १२, १३।

वार—दं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—पुष्य, मध्या, पू०, फा०, अनु०।

#### टिप्पणी

लग्न शुभ है।

#### ५१. पशु क्रप-विक्रय मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ६, ७, ८, ११, १२, १३ (शु०)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, मृग०, उ०, ह०, चि०, ज्य०, व०, र०।

#### ५२. पशीपालन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, १२ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, आद्रा०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०,

स्वा०, अनु०, ध०, र०।

### ५३. मन्त्रसाधन मुहूर्त

तिथि—४, ६, ८, ९, ११, १४, (दोनों पक्ष की) ।

वार—सू०, चं०, बु० गु०, शु० ।

नक्षत्र—भ०, आ०, म०, मू० ।

लग्न—५/११ हो ।

### टिप्पणी

संकान्ति, दीपमालिका, होलिका, दुर्गाष्टमी, ग्रहण का दिन नवरात्रि भी शुभ है ।<sup>१</sup>

### ५४. नूपश्रयाण मुहूर्त

तिथि—३, ५, ८, १०, १३ (शु०) ।

वार—गु०, शु० ।

नक्षत्र—अश्विं०, मू०, पुन०, पु०, ह०, अनु०, अभिं०, श०, ध०, रे० ।

### टिप्पणी

राजाओं के लिए या रानी जहाँ भी जावे, विशेषतः यात्रा या शुभ कार्य के लिए जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त देख लें ।

प्रतिपदा, द्वितीया, रिक्ता तिथि, त्रिपुष्कर, चन्द्रदोष में यात्रा निवेद्य है ।

### ५५. नगर प्रवेश मुहूर्त

तिथि—२, ७, १२ ।

वार—सू०, श० ।

नक्षत्र—कृ०, वि०, उषा० पूर्भा० ।

### ५६. भल्ल क्रिया (कसरत) मुहूर्त

तिथि—३, ५, ८, १०, १३, १५ (दोनों पक्ष)

वार—सू०, चं० गु०, शु० ।

नक्षत्र—भ०, इले०, म०, पू० ३, उच्च०, मू० ।

लग्न—३, ६, ७, ८, ११ ।

१. मध्याह्न भरणी सूले मृगेऽं तबुधे छटे ।  
शुद्धाष्टके भृगौ तुङ्गे वीर वेताल शाष्वत् ॥

—मुहूर्त गणपति

सु०—१५४

### टिप्पणी

सूर्य मंगल केन्द्र में हों तो शुभ है ।

५७. द्याज लेन-देन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३ (दोनों पक्ष) ।

वार—सू०, चं०, गु०, शु० श० ।

नक्षत्र—भ०, कृ०, इले०, पू० ३, वि० ।

लग्न—२, ५, ८ ।

### टिप्पणी

केन्द्र, द्वारे भाव तथा त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें में पापग्रह शुभ है ।

५८. भूमि के क्रय-विक्रय का मुहूर्त

तिथि—२, ५, ६, १०, ११, १५ (दोनों पक्ष) ।

वार—गु०, शु० ।

नक्षत्र—मू०, पुन०, इले०, म०, वि०, अनु०, स०, रे० ।

लग्न—३, ५, ८ ।

### टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें में पापग्रह होना शुभ है ।

५९. वाणिज्य कर्म प्रारंभ का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष) ।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०, श० ।

नक्षत्र—अ०, रो०, मू०, पुन०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु० ।

भ०, ध०, पू०, भा०, रे० ।

### टिप्पणी

लग्न में चन्द्र-शुक्र हो । द्वें १२वें भाव में पापग्रह न हो । २, १० ११वें भाव में शुभग्रह हो ।

नाभराशि से चन्द्र प्रवल हो ।

भूरुद्धिनि को यह मुहूर्त वर्जित है ।<sup>१</sup>

१. मासान्तीलि संकान्ति वर्षात्मे च हुताशनी ।

अमायी भौमवारे च रोदति पंचदिनानि भूः ॥

### ६०. होटल खोलने का मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु)।  
वार—सू०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, उत्तरा ३, स्वा०, वि०, रे०।  
निर्बल चन्द्र, वैधृति, ग्रहण, व्यतिपात वर्जित है।

### ६१. हल चलाने का मुहूर्त

तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।  
वार—सू०, चं०, बु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०,  
स्वा०, वि०, अनु०, ये०, सू०, श्र०, घ०, रे०।

### टिप्पणी

लग्न २, ३, ६, ८, १२ हो। पापग्रह निर्बल हो। चन्द्र-  
शुक्र बली हों तो शुभ है।

भू-रजस्वला दिन में वर्जित है।<sup>१</sup>

भू-शयनकाल भी निषेष है।<sup>२</sup>

### ६२. बीज बोने का मुहूर्त

तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, (दोनों पक्ष)  
वार—सू०, चं०, बु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०,  
स्वा०, वि०, अनु०, रे०।

### टिप्पणी

बीज बोने के लिए सूर्य नक्षत्र से ३ नक्षत्र तक शुभ  
उसके बाद १६ नक्षत्र तक अशुभ एवं बाद के ८ नक्षत्र तक शुभ  
माना गया है।

### ६३. सिंचाई मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों  
पक्ष)।

वार—चं०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उ० ३, चि०, स्वा०, वि०,

१. संक्रान्ति से १, ५, १०, ११, १६, १८ वाँ दिन।

२. सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ६, १२, १६, २६ वाँ चन्द्रकर्ष।

### अनु०, पू०, भा०, रे०।

६४. खलिहान का मुहूर्त  
तिथि—३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।  
वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—आ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०,  
स्वा०, वि०, अनु०, रे०।  
टिप्पणी

भू-स्कै, शू-हास्य, एवं भू-रजस्वला दिन वर्जित है।

६५. अनाज काटने का मुहूर्त  
तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।  
वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—आ०, भ०, म०, कृ०, रो०, मृ०, आ०, पुन०, पु०, श्ल०,  
म०, पु० ३, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, ज्य०,  
म०, अ०, श०, रे०।

६६. चूँड़ी-धारण मुहूर्त  
तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु)।  
वार—सू०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, उत्त० ३, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, रे०।  
चूँड़ी चक्र

सूर्य-नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनो,  
प्रथम ३ नक्षत्र तक—नेष्ट

|    |    |         |
|----|----|---------|
| ४  | ५  | नेष्ट   |
| ६  | ६  | श्रेष्ठ |
| १० | ११ | नेष्ट   |
| १२ | १८ | श्रेष्ठ |
| १८ | २० | नेष्ट   |
| २१ | —  | श्रेष्ठ |
| २२ | २४ | श्रेष्ठ |
| २५ | २७ | नेष्ट   |

१. भूवभिन्नपदा मूलं रोहिण्युत्तरफलगुनी।  
विशाला वारुणं चैव धान्यानां रोपणे वराः ॥ —राज मार्तण्ड  
८३

### टिप्पणी

देवशायन, गुरु-शक्तारत, धनु मीन संक्रान्ति आदि वार्जत हैं।

प्रथम बार चूड़ा पहनने का मुहूर्त भी यही है।

६७. बंटवारा करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पृ०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, श०, ध०, श०, रे०।

लग्न—शुभ। केन्द्र में शुभ ग्रह हो।

६८. व्रतोद्यापन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पु०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु० श०, ध०, रे०।

चन्द्र बलवान् हो। गुरु शुक्रोदय हो।<sup>१</sup>

### टिप्पणी

एकादशी, पूर्णिमा, या भागवत अथवा किसी भी प्रकार के व्रतोद्यापन हेतु।

६९. यज्ञ-अनुष्ठानादि मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १०, १५, (दोनों पक्ष)।

वार—च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पु०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श०, ध०, श०, रे०।

### टिप्पणी

भू-शयन, भू-रजरवला, भू-हास्य एव भू-रुदन वर्जित हैं।  
लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ८, १२वाँ हो। दशम भाव में सूर्य,  
चतुर्थ भाव में चंद्र एव लग्न में गुरु शुभ हैं।

१०. नास्ति स्त्रीनां पृथग् यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम् ।

भर्तृशुश्रुष्यैवैता लोकानिष्टान् व्रजान्त हि ॥ — स्कन्दपुराण

गुरु शुक्र प्रबल मार्गी व उदय हो।

यज्ञान का चंद्र प्रबल व शुभ हो।

७०. यन्त्र-तंत्र-प्रयोग मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, मृ०, उ० फा०, ह०, चि०, श०।

टिप्पणी—चन्द्रबल प्रबल हो।

प्रीति, सिद्धि, साध्य, शुभ, शोभन, आयुषमाल् योगों में शुभ है।<sup>२</sup>

७१. आपरेशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १५ (शुभ)।

वार—सू०, मृ०, ग०।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पु०, ह०, स्वा०, अनु०, ज्यै०, श्र०, श०।

टिप्पणी

४, १४ तिथियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं।

७२. रोगमुक्त स्नान मुहूर्त

तिथि—४, ६, १४।

वार—सू०, मृ०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, भ०, कृ०, मृ०, आ०, पु०, पू० ३, ह०, चि०, वि०, अनु०, मू०, श०, रे०।

लग्न—१, ४, ७, १०।

टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में पापग्रह शुभ है। भ्राता वैष्णवि व्यतिपात शुभ।

७३. दीक्षा मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२ (शुक्ल पक्ष), २ ३, ५

(कृष्ण पक्ष)।

वार—सू०, च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पु०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०,

हस्त में श्य मृग पृष्ठव्रुत्तरा।

धृष्टि धौष्ण शुभ योग सौरस्यदा ॥

स्वा०, वि०, अनु०, मू०, श०, रे०।  
टिप्पणी

तेरह तिथियों का पक्ष क्षयमास वर्जित है।  
वैशाख, श्रवण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष माघ, फाल्गुन शुभ है।

२, ३, ४, ५, ७, ८, १२ लग्न शुभ है।  
केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो। पापग्रह वर्जित है।

७४. गोद लेने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, मू०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, यु०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, घ०।

टिप्पणी

बालक व गोद लेनेवाले व्यक्ति दोनों के अन्द्र शुभ। प्रबल हों।

७५. संन्यासधारण मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ८, १०, १२ (दोनों पक्ष)

वार—चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—रो० उत्तरा ३।

टिप्पणी—

६ठे तथा १२वें भाव में शुक्र हों तो शुभ है। पापग्रह बलहीन हो।

बिद्वानों के अनुसार ३, ६, ११वें शनि, ६, १२वें शुक्र तथा गुरु केन्द्र में हो तो अधिक उत्तम है।

७६. राज्याभिषेक मुहूर्त

मास—चैत्र के अतिरिक्त उत्तरायण सूर्य के मास।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३, (शुक्र)। (कृ)।

वार—सू०, श०, गु०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मू०, पु० उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०,

१. मृतराज न कालस्य नियमोऽन् विधीयते।  
तुपाभिषेकः कर्तव्यो देवज्ञेन पुरोधसा ॥

—दैवज्ञ मनो हर

८६

ज्यै०, थ०, रे०।

लग्न—स्थिर या २, ३, ५, ७, ८ राशि का।

टिप्पणी

राजा की मृत्यु के बाद बिना मुहूर्त के भी तत्काल राजगद्दी ग्रहण कर लेनी चाहिए, तथा राज्यकार्य सम्पादन करना चाहिए। तत्पश्चात् शुभ मुहूर्त देखकर राज्याभिषेक करा ले।

जिसका राज्याभिषेक हो रहा हो उसकी जन्म-लग्न-राशि से भी ३, ६, १०, ११वाँ लग्न शुभ है। पापग्रह ३, ६, ११वें तथा शुभ ग्रह अन्य स्थानों विशेषतः केन्द्र त्रिकोण में हो।

कुछ विद्वानों के अनुसार सूर्य ३, ६, ६, ११, चन्द्र १, ६, ८, १२वें स्थान के अतिरिक्त स्थान में होना आवश्यक है।

मंगल ६ठे, गुरु १, ४, ५, ६, ११वें, शुक्र ५, १०वें तथा शनि ३, ११, १२वें हों तो राजा कीतिवान् चिरायु एवं राजक्षमीयुत यशस्वी हो।

७७. खड्ग धारण मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, (शु)।

वार—सू०, मू०, श० श०।

नक्षत्र—पु०, पुन०, पू० फा०, उ० ३, ह० चि०, स्वा०, ज्यै०,

रे०।

लग्न—१, २, ५, ७, १०, ११ राशि से।

७८. संधि-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ८, १२, १३ (शु)।

वार—चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—पु०, म०, पू० फा०, अनु०।

लग्न—शुभ अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट।

टिप्पणी

भद्रा कुयोग व क्षीण चन्द्र वर्जित है।

मुकुदमे में बादी-प्रतिवादी के बीच व्यावहारिक तौर पर मनमुटाव के बाद समझौता संधि ही कहलाती है।

८७

### ७६. लघु उद्योग मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, (शुक्र)।

वार—सू०, चं०, बू०, गु०, श०।

नक्षत्र—अश्विं, रो०, मृ०, पू० पुष्य०, उत्तरा ३, ह०, च०,  
स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, पू० भा०, रे०।

लग्न—कुंभ लग्न के अतिरिक्त कोई भी लग्न हो। केन्द्र त्रिकोण  
शुभ ग्रहों से युक्त हो।

### टिप्पणी

छोटे पैमाने पर व्यापार या कुशीर उद्योग आदि के  
लिए।

### ८०. वृहद व्यापार मुहूर्त

तिथि—२, ५, ७, १२, १३, (शुक्र) १, (कृ),

वार—बू०, गु०, श०।

नक्षत्र—पू०, उत्तरा ३, ह०, च०।

व्यापार प्रमुख की चन्द्र शुक्र भी देख लेनी चाहिए,  
तथा दशा अन्तर्देशा का भी विचार कर लेना चाहिए।

### ८१. बहीखाता प्रारंभ मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (शुक्र),

वार—सू०, चं०, बू०, गु०, श०।

नक्षत्र—अश्विं, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, च०,  
अनु०, श्र०, ध०, रे०।

लग्न—१, ३, ४, ६, ७, ८, १० राशि लग्न।

### टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में पापग्रह न हो, तथा लग्न पर कूर ग्रहों  
की दृष्टि न हो।

विजया दशमी, दीपावलि, अक्षय तृतीया, नवरात्रस्थापन  
दिवस आदि दिन बिना मुहूर्त के भी श्रेष्ठ हैं।

चतुर्मसि एवं गुरु शुक्रास्त पूर्णतः वर्जित हैं।

### ८२. संपत्ति विभाजन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३ (शु०)।

वार—सू०, चं०, बू०, गु०, श०।

नक्षत्र—अश्विं, रो०, मृ०, उत्तरा ३, ह०, च०, अनु०  
श्र०, ध०, रे०।

लग्न—२, ३, ४, ७, ८, ११ राशि।

### ८३. आवेदन-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, १०, १३ (शुक्र) १ (कृ)।

वार—सू०, चं०, गु०, श०।

नक्षत्र—अश्विं, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, श्र०, ध०,  
श०, रे०।

### टिप्पणी

किसी पद के लिए, कार्यसिद्धि हेतु या किसी व्यावहारिक  
कार्य के लिए उपर्युक्त मुहूर्त पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

यह ध्यान रहे कि उस दिन प्रार्थी का चन्द्र बलवान हो,  
शुभ हो तथा लग्नेश भी सशक्त हो।

### ८४. नौकरी प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, ६, १०, १२, १३, १५ (श०)  
१ (कृ)।

वार—चं०, गु०, श०, श०।

नक्षत्र—अश्विं, रो०, मृ०, पु०, उत्तरा ३, ह०, च०,  
अनु०, श्र०, रे०।

### टिप्पणी

लग्नेश प्रबल हो, तथा लग्न में चन्द्र या शुक्र हो। शनि  
६, ८, ११ वें हो। गुरु सप्तम में रहे तो श्रेष्ठ होगा।

नृप बाण का परित्याग करें।

### ८५. कोल्हू प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, ६, १२, १३ दोनों पक्ष।

वार—चं०, बू०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, पुन०, पु०, ह०, च०, अनु०, रे०।

### टिप्पणी

तेल की धाणी, या सुगंधित तेल बनाने के लिए भी  
उपयोगी।

**६६. नाई की दुकान मुहर्त**  
 तिथि—२, ३, ४, तिथि को छोड़कर कोई भी तिथि।  
 वार—चं०, बु०, गु०, शु०।  
 नक्षत्र—अश्विं०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, श्र०,  
 ध०, रे०।

**६७. सुनार की दुकान मुहर्त**  
 तिथि—२, ३, ४, ११ तिथि छोड़ कर कोई भी तिथि।  
 वार—सू०, चं०, बु०, गु०, श०।  
 नक्षत्र—अश्विं०, कृ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०,  
 श०, रे०।  
 लग्न—स्थिर।

**६८. लुहार की दुकान मुहर्त**  
 तिथि—८, ९, ११, छोड़कर कोई भी तिथि।  
 वार—म०, श०, श०।  
 नक्षत्र—भ०, कु०, रो०, आ०, चि०, स्वा०, अनु०, रे०।  
 लग्न—२, ५, ७, ८, ११ राशि।

**६९. काठ की दुकान का मुहर्त**  
 वार—सू०, चं०, बु०, गु०।  
 नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, चि०,  
 अनु०, ज्य०, श०, ध०, श०, रे०।  
 लग्न—स्थिर।

**७०. मिठाई की दुकान का मुहर्त**  
 तिथि—४, ७, ८, ९, ११ छोड़कर कोई भी तिथि।  
 वार—सूर्यवार छोड़कर।  
 नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, अनु०, रे०।

**७१. चमड़े (जूते) की दुकान का मुहर्त**  
 वार—बुधवार त्याज्य।  
 नक्षत्र—कृ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, अनु०, श०, ध०,  
 रे०।

६०

लग्न—स्थिर।

**६२. गुप्तधर कार्य मुहर्त**  
 तिथि—२, ३, ४, ५, ७, १०, १२ दोनों पक्ष।  
 वार—म०, श०।  
 नक्षत्र—भ०, कु०, आ०, इल०, म०, पूर्व ३, ज्य०, वि०।

**६३. तबादले के बाद ड्यूटी जाँदून मुहर्त**  
 तिथि—२, ३, १०, ११ छोड़कर कोई भी तिथि।  
 वार—सू०, चं०, बु०, छोड़कर।  
 नक्षत्र—अश्विं०, मधा, मूल, ज्येष्ठा, शत०, छोड़कर।  
 लग्न—स्थिर।  
 टिप्पणी—चन्द्र प्रबल हो।

**६४. प्रकाशन खोलने का मुहर्त**  
 तिथि—२, ३, ५, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल)।  
 वार—बु०, गु०, शु०।  
 नक्षत्र—अश्विनी, भ०, कृ०, रो०, वि०, अनु० श०, ध०, रे०।  
 लग्न—स्थिर।  
 टिप्पणी

गुरु-शुक्रास्त न हो। चन्द्र शुद्ध प्रबल एवं अनुकूल हो।  
 पुस्तक विक्रेता, पुस्तक प्रकाशन, छापाखाना लगाना, अखबार  
 निकालना, बुक स्टाल आदि के लिए उपयोगी।

**६५. चुनाव में खड़े होने का मुहर्त**  
 तिथि—२, ३, ५, ६, १०, १२, १५ शुक्ल पक्ष।  
 वार—चं०, बु०, गु०, शु०।  
 नक्षत्र—अ०, रो०, उत्तरा ३, रे०।  
 लग्न—चर लग्न।  
 टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो, तथा ३, ६, ११वें पाप  
 ग्रह हों। लग्नेश एवं चन्द्र प्रबल हो, तथा दोनों को पापग्रह  
 न देख रहा हो।

चतुर्थ भाव तथा चतुर्थेश बली हो, या चतुर्थेश लग्नेश का  
 संबंध हो।

६१

## ६६. संसद में जाने का मुहूर्त

टिप्पणी

संसद में जाने के लिए “चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त” ही योग्य है, पर लग्न स्थिर होना चाहिए, तथा लग्नेश प्रबल होना चाहिए।

## ६७. मन्त्र पद पर शपथ मुहूर्त

तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल)।

वार—मं०, शु०, वृ०, श०।

नक्षत्र—मू०, आ०, म०, चि०, अनु०, मू०, उ० ३, ध०, श०।

लग्न—स्थिर।

टिप्पणी

लग्न प्रबल हो। लग्नेश, चन्द्र, तथा सूर्य शुभ भावों में हों। चतुर्थ बली हो, तथा वैधृत, व्यतिपात भद्रा आदि का त्याग हो।

## ६८. बाग लगाने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १५ दानों पक्ष।

वार—सू०, बृ०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मू०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, अनु० श०, र०।

टिप्पणी

लग्न में जलचर राशि हो। गुरु-शुक्रास्त न हो, तथा भू-रजस्वला, भू-स्वन, भू-हास्य, भू-शयन का त्याग करें।

## ६९. फिल्म प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ८, ६, १२ (शुक्ल पक्ष), १५ (कु)।

वार—बृ०, गु०, श०। शुक्रवार विशेष।

नक्षत्र—पुन०, पु०, पूर्वो० ३, चरणी।

लग्न—चर राशि।

टिप्पणी

लग्नेश, चन्द्र एवं शुक्र ग्रह प्रबल हों। शुक्र यदि लग्न या चतुर्थ में हो तो विशेष शुभ। केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह। लग्न पर पापग्रहों की दृष्टि न हो।

६२

## १००. फिल्म प्रदर्शन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १२, १५ (शु०)

वार—बृ०, गु०, श०।

नक्षत्र—पुन०, पु०, पूर्वो० ३, भरणी, रेती।

लग्न—स्थिर।

## १०१. भवन निर्माण मुहूर्त<sup>१</sup>

मास—वैशाख, श्रावण, कात्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन।<sup>२</sup> मास का चयन द्वारमुख के अनुसार करना आवश्यक है। पूर्व, पश्चिम द्वारमुख हो तो श्रावण, भाद्रपद, माघ, फाल्गुन। उत्तर-दक्षिण द्वारमुख हो तो वैशाख, ज्येष्ठ, कात्तिक, मार्गशीर्ष।

पक्ष—भवन-निर्माण मुहूर्त में शुक्ल पक्ष ही ग्राह्य है।<sup>३</sup>

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल पक्ष)<sup>४</sup>

कुछ विद्वानों ने ५, ६, १०, ११ तिथियाँ वर्जय मानी हैं।

अर्थनाशो भवेत्पट्ट्यामेकादश्यां विघमेनम्।

पञ्चम्यां चौरभीतिः स्याद दशम्यान्तु नृपाद भयम्।

पौर्णिमास्यां चार्यनाशो भार्यनाश्तथैव च ॥ ज्यो० सा० सं०।

## त्याज्य तिथियाँ

द्वार दि ।

पूर्व दिशा

पश्चिम

उत्तर

दक्षिण

## त्याज्य तिथियाँ

१५, कृष्ण १ से ६ तक

३०, शुक्ल १ से ६ तक

कृष्ण ६, १०, ११, १२, १३, १४

शुक्ल ६, १०, ११, १२, १३, १४

१. गृहस्थस्य किया: सर्वा न सिद्ध्यन्ति गृहं बिना ।

परगेहे कृताः सर्वाः श्रोतः स्मार्तकियाः शुभाः ॥

निष्फलाः स्युतंतस्तासां भूभीशः फलमश्नुते ॥ —भविष्यपुराण

२. सौम्याः फाल्गुन वैशाख माघ श्रावण कात्तिकाः ।

मासाः स्युग्रं हनिमणिं पुत्रपौत्रघनप्रदाः ॥ —नारद पुराण

३. शुक्लपक्षे भवेत्सौम्य कृष्णे तस्करतो भयम् ॥

४. द्वितीया पंचमी मुख्यास्तृतीय षष्ठिका तथा ।

सप्तमी दशमी चैव द्वादश्यैकादशी तथा ॥

—ग० मा०

६३

मासशून्य पक्ष, गलग्रह तिथियों का भी त्याग जरूरी है।  
वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

नक्षत्र—रो०, मृग० पुन०, पु०, उत्तरा०, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, श० रे०।

पंचक त्याज्य है।

योग—विष्णव, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतिपात, परिध, वैधति योग त्याज्य है।

फरण—बव, तैतिल, गर, वणिज, शकुनि, तथा किस्तुधन।

लग्न—२, ३, ५, ६वाँ, लग्न (राशि लग्न)। ३, ६, ११वें पापग्रह हो।

तन्द्र त्रिकोण में सौम्य ग्रह हो।

दशम भाव में सबल ग्रह हो।

#### टिप्पणी

गृहनिमाणि के समय गृहपति की राशि से सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र बलवान् होने चाहिये, यदि—

| सूर्य निर्बल हो तो— | स्वामीनाश  |
|---------------------|------------|
| चंद्र               | स्त्री नाश |
| गुरु                | सुख नाश    |
| शुक्र               | प्रथ्य नाश |

#### विशेष—

यदि ब्राह्मण (गृहकर्ता) हो तो गुरु-शुक्र विशेष लगवान् हों।

” क्षत्रिय ” ” सूर्य भीम ” ”

” वैश्य ” ” चन्द्र बुध ” ”

” शूद्र ” ” शनि ” ”

गुरु-शुक्रास्त, चैत्र, शुक्ल, देवशयन, आषाढ़, ज्येष्ठ, माघ मास, वृद्धिक कुम्भ लग्न, अग्निपंचक, अग्निबाण, भू-दश्यन, भू-हास्य, भू-रजस्वला, भू-रुदन, शूल, गण्ड, व्याघात, व्यतिपात,

१. आदित्य भौम वज्रास्तु सर्ववारां: शुभावहा।

प्रसादेऽयोद्यमेवस्यात्कूपवापीषु चैव हि॥—मरस्य पुराण

२. गत तिथि में लग्न मिलाकर ६ का भाग देने से शेष २ बचे तो अग्निपंचक (अग्निभयकारक) होता है।

वैधूति योग, पंचक आदि त्याज्य हैं।

स्वाती-अनुराधा-रेवती नक्षत्र में शनि हो या शनिवार हो, हस्त-पुष्टि-रेवती में मंगल हो या मंगलवार हो तो नक्षत्र एवं वार दोनों ही त्याज्य हैं।

#### नींव खोदने की दिशा—

|        |          |         |         |           |
|--------|----------|---------|---------|-----------|
| देवालय | १२, १, २ | ३, ४, ५ | ६, ७, ८ | ६, १०, ११ |
|--------|----------|---------|---------|-----------|

|         |         |          |           |         |
|---------|---------|----------|-----------|---------|
| गृहारंभ | ५, ६, ७ | ८, ६, १० | ११, १२, १ | २, ३, ४ |
|---------|---------|----------|-----------|---------|

|       |            |         |         |         |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| जलाशय | ११, ११, १२ | १, २, ३ | ४, ५, ६ | ७, ८, ९ |
|-------|------------|---------|---------|---------|

|       |         |         |          |           |
|-------|---------|---------|----------|-----------|
| विवाह | २, ३, ४ | ५, ६, ७ | ८, ६, १० | ११, १२, १ |
|-------|---------|---------|----------|-----------|

|      |          |         |        |           |
|------|----------|---------|--------|-----------|
| दिशा | अग्निकोण | ईशानकोण | वायव्य | नैऋत्यकोण |
|------|----------|---------|--------|-----------|

गृहारंभ के विशेष योग

१. मीन का शुक्र लग्न में हो, या कर्क का गुरु चतुर्थ भाव में हो या, तुला का शनि एकादश भाव में हो तो वह घर प्रवल धनदायक होता है।

२. कर्क लग्न में चन्द्र गुरु केन्द्र में तथा अन्यग्रह स्व या उच्च हो तो ऐसे समय में बना भक्तान प्रारब्धियों को ही मिलता है।

३. शुक्र लग्न में, सूर्य ११वें, तथा बुध १०वें हो तो घर कल्याण-कारी होता है।

#### राहुमुख

|               |         |           |          |         |
|---------------|---------|-----------|----------|---------|
| राहु मुख दिशा | आग्नेय  | नैऋत्य    | वायव्य   | ईशान    |
| सूर्य राशि    | २, ३, ४ | ११, १२, १ | ८, ६, १० | ५, ६, ७ |
| शुभ दिशा      | नैऋत्य  | वायव्य    | वशान     | आग्नेय  |

राहुमुख से पृष्ठवर्ती दिशा में घर की नींव खोदनी प्रारम्भ करनी चाहिए।

#### सर्पमुख विचार

| सर्पशिर दिशा | पूर्व   | पश्चिम  | उत्तर   | दक्षिण   |
|--------------|---------|---------|---------|----------|
| मास          | भाद्रपद | फाल्गुन | ज्येष्ठ | मागशीर्ष |
|              | आश्विन  | चैत     | आषाढ़   | पोष      |
|              | कार्तिक | वैशाख   | श्रावण  | माघ      |

नाग के शिर में भवननिर्माण स्वामी नाशक, पीठ की ओर पुत्र-स्त्रीमारक, पुच्छ की तरफ अर्थनाश तथा वक्षस्थस्त्र में क्षेम-६५

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १४, १५ (शुक्ल)  
सामान्यतः जिस देवता के लिए जो तिथि निर्धारित है,  
उस तिथि को उस देव की प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, श०, श०।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,  
स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, श०, रे०।

लग्न—२, ३, ६, ९, १२।

स्थिर लग्न विशेष शुभ है।

### टिप्पणी

देवशयन, मलमास, गुरुशुक्रास्त, निर्बल चन्द्र वर्जित है।

### शिववास

शिवलिंग-स्थापनः में उपर्युक्त मुहूर्त शुभ है पर शिववास  
व फल विचार कर लेना चाहिए—

तिथि को दुगुनी कर ५ जोड़ दें तथा ७ का भाग दें, शेष  
के अनुसार निम्न प्रकारे शिववास समझें—'

| शेष | शिववास    | फल           |
|-----|-----------|--------------|
| १   | कैलाश     | सुखलाभ       |
| २   | गौरी सह   | संपत्तिलाभ   |
| ३   | वृषभ पर   | सिद्धिदायक   |
| ४   | सभा में   | संताप, पीड़ा |
| ५   | भोजन पर   | दुःख         |
| ६   | रमण में   | कष्ट         |
| ०   | इमशान में | मृत्यु       |

वार के अनुसार देवस्थापन से निम्न फल होता है—

रविवार देवता उग्र रहता है

सोमवार क्षेमदायक

मंगलवार अग्निदायक

बुधवार वरदायक

१. तिथि च द्विगुणं कृत्वा बागै संयोजयेत् ।

सप्तमिश्च हरेद्भागं शिववास समुद्देशेत् ॥

गुरुवार

शुक्रवार

शनिवार

उग्र एवं कूर देवता की स्थापना रविवार को ही करनी चाहिए :

१०६. वास्तु शान्ति-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—चं०, बु० गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,  
स्वा०, अनु०, श०, श्र०, ध०, रे०।

लग्न—कोई भी हो, पर लग्न से १, २, ४, ५, ७, ९, १०,  
११वें भावों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें भावों में  
पापग्रह हों।

### टिप्पणी

अग्निवास, चन्द्रबल, भद्रा विचार कर लेना चाहिए,  
पर 'हवन चक्र शोधन' आवश्यक नहीं है।<sup>१</sup>

गृह बन जाने पर उसमें रहने के पूर्व यज्ञादि धार्मिक  
कार्य हो 'वास्तु शान्ति' कहलाती है।

१०७ नूतन गृहप्रवेश

मास—वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, श०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,  
स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे०।

लग्न—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२ राशि लग्न।

वर्जित—दण्डा, रिक्ति शून्य तिथियाँ, अमावस्या, द्वादशी  
व शुक्रवार योग, अष्टम लग्न, भद्रा, चर लग्न, धनु, कुम्भ  
व मीन संकान्तियाँ।

१. विवाह यात्रा व्रत वास्तु यज्ञ चौलोपवीत ग्रहणे युगादी।

तथा च दुर्गचिंत संविधाने न वह्नि चक्रं परिचिन्तनीयः ॥

### वामार्क विचार

गृहप्रवेश में वामार्क विचार परमावश्यक है।

| द्वार दिशा—पूर्व  | पश्चिम        | उत्तर           | दक्षिण        |
|-------------------|---------------|-----------------|---------------|
| सूर्याविष्ठित भाव |               |                 |               |
| ८, ६, १०, ११, १२  | २, ३, ४, ५, ६ | ११, १२, १, २, ३ | ५, ६, ७, ८, ९ |

उदाहरणार्थ यदि पश्चिम दिशा में मुख्य द्वार हो तो नूतन गृहप्रवेश-समय में लग ऐसा लेना चाहिए जब कि सूर्य २, ३, ४, ५, या ६ठे भाव में स्थित हो।

### दिशा-तिथि विचार

यदि मुख्य द्वार पूर्व में हो तो ५, १०, १५ तिथियाँ श्रेष्ठतम होती हैं।

यदि मुख्य द्वार पश्चिम में हो तो २, ७, १२, तिथियाँ श्रेष्ठ हैं

|   |       |   |          |   |
|---|-------|---|----------|---|
| " | उत्तर | " | ३, ८, १३ | " |
|---|-------|---|----------|---|

|   |        |   |          |   |
|---|--------|---|----------|---|
| " | दक्षिण | " | १, ६, ११ | " |
|---|--------|---|----------|---|

### भद्रा विचार

गृहप्रवेश मुख्यद्वार से करना चाहिए, उस समय भद्रा सम्मुख या वामस्थ नहीं होनी चाहिए।

### टिप्पणी

नूतन गृहप्रवेश मंगलाचरण के साथ वाद्यध्वनि करते हुए करना चाहिए, तथा सर्वप्रथम कुलदेव-पूजा एवं अग्रेजों का सम्मान करना चाहिए तथा ब्राह्मणों को प्रसन्न करना चाहिए। धार्मिक कार्यसम्पन्न भी जरूरी है।

### १०८. यात्रा-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (दोनों पक्ष)।

वार—चं०, गु० शु०।

नक्षत्र—अ०, म०, पुन०, पु० ह०, अनु०, श०, घ०, द०।

ज्ञन—५, ६, ७, ८, १०, ११, १२।

### टिप्पणी

पंचक में यात्रा वर्जित है।

### मास शूल विचार

#### सूर्य राशि

२, ३, ४

५, ६, ७

८, ९, १०

११, १२, १

#### मास शूल दिशा

पूर्व

दक्षिण

पश्चिम

उत्तर

जिस दिशा में मास-शूल हो, उस दिशा में यात्रा करना शुभ नहीं माना गया है।

### घात मास-तिथि

|      |         |          |
|------|---------|----------|
| राशि | घात मास | घात तिथि |
|------|---------|----------|

|     |         |          |
|-----|---------|----------|
| मेष | कार्तिक | १, ६, ११ |
|-----|---------|----------|

|     |            |           |
|-----|------------|-----------|
| वृष | मार्गशीर्ष | ५, १०, १५ |
|-----|------------|-----------|

|       |       |          |
|-------|-------|----------|
| मिथुन | आषाढ़ | ३, ७, १२ |
|-------|-------|----------|

|      |     |          |
|------|-----|----------|
| कर्क | पौष | २, ७, १२ |
|------|-----|----------|

|      |         |          |
|------|---------|----------|
| सिंह | ज्येष्ठ | ३, ८, १३ |
|------|---------|----------|

|       |         |           |
|-------|---------|-----------|
| कन्या | भाद्रपद | ५, १०, १५ |
|-------|---------|-----------|

|      |     |          |
|------|-----|----------|
| तुला | माघ | ४, ९, १४ |
|------|-----|----------|

|         |        |          |
|---------|--------|----------|
| वृद्धिक | आश्विन | १, ६, ११ |
|---------|--------|----------|

|     |        |          |
|-----|--------|----------|
| घनु | श्रावण | ३, ८, १३ |
|-----|--------|----------|

|     |       |          |
|-----|-------|----------|
| मकर | वैशाख | ४, ६, १४ |
|-----|-------|----------|

|      |       |          |
|------|-------|----------|
| कुंभ | चैत्र | ३, ८, १३ |
|------|-------|----------|

|     |        |           |
|-----|--------|-----------|
| मीन | फालगुन | ५, १०, १५ |
|-----|--------|-----------|

घाततिथि घातवारं घातनशेत्रमेव च।

यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञं रन्यकमंसु शोभनम् ॥

### घोगिनी

|      |      |
|------|------|
| तिथि | दिशा |
|------|------|

|      |       |
|------|-------|
| १, ६ | पूर्व |
|------|-------|

|       |       |
|-------|-------|
| २, १० | उत्तर |
|-------|-------|

|       |        |
|-------|--------|
| ३, ११ | आग्नेय |
|-------|--------|

|       |        |
|-------|--------|
| ४, १२ | नीऋत्य |
|-------|--------|

|       |        |
|-------|--------|
| ५, १३ | दक्षिण |
| ६, १४ | पश्चिम |
| ७, १५ | वायव्य |
| ८, ३० | ईशान   |

यात्रा में योगिनी वामभाग या पृष्ठभाग में होनी चाहिए; आवश्यकता पड़ने पर तिथि की ६ घण्टी छोड़कर यात्रा करने से योगिनी-दोष नहीं रहता ।

### वार दिक्षूल

|       |        |
|-------|--------|
| वार   | दिशा   |
| च० श० | पूर्व  |
| च० ग० | अग्नि  |
| ग०    | दक्षिण |
| स० श० | नैऋत्य |
| स० ग० | पश्चिम |
| म०    | वायव्य |
| म० ब० | उत्तर  |
| ब० श० | ईशान   |

दिग्गुल वाये तथा पीठ में शुभ होता है ।

### वार-दोषनिवारण

|        |      |
|--------|------|
| सूर्य  | घी   |
| चन्द्र | दूध  |
| मंगल   | गुड़ |
| बुध    | तिल  |
| गुरु   | दही  |
| शुक्र  | यव   |
| शनि    | उरद  |

वारदोष होने पर संबंधित वस्तु या वस्तुओं से बने पदार्थ को खाकर यात्रा करना शुभ होता है ।

### समय-शूल

|            |        |
|------------|--------|
| प्रातः     | पूर्व  |
| मध्याह्न   | दक्षिण |
| गोधूलि     | पश्चिम |
| अर्धरात्रि | उत्तर  |

उपरिलिखित समय में संबंधित दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए ।

### काल राहु

|       |        |
|-------|--------|
| वार   | दिशा   |
| सूर्य | उत्तर  |
| चंद्र | वायव्य |
| मंगल  | पश्चिम |
| बुध   | नैऋत्य |
| गुरु  | दक्षिण |
| शुक्र | अग्नि  |
| शनि   | पूर्व  |

ईशान कोण में काल राहु नहीं जाता । काल राहु दाहिने शुभ, अन्यत्र अशुभ होता है ।

### चन्द्रवास

|             |        |
|-------------|--------|
| राशि चन्द्र | दिशा   |
| १, ५, ६     | पूर्व  |
| २, ६, १०    | दक्षिण |
| ३, ७, ११    | पश्चिम |
| ४, ८, १२    | उत्तर  |

सम्मुख एवं दाहिने चन्द्र शुभ होता है, अन्य दिशा की ओर चन्द्र हो तो यात्रा दा त्याग करना चाहिए ।

### तिथि-दोष-परिहार

|      |        |
|------|--------|
| तिथि | भक्ष्य |
| १    | पुष्प  |
| २    | चावल   |

|    |           |
|----|-----------|
| ३  | घृत       |
| ४  | दही       |
| ५  | अन्न      |
| ६  | स्वर्ण जल |
| ७  | गुड़      |
| ८  | नीबू      |
| ९  | जल        |
| १० | गौमूत्र   |
| ११ | यव        |
| १२ | खीर       |
| १३ | गुड़      |
| १४ | केसर      |
| १५ | मूंग      |
| ३० | त्याज्य   |

### धारानुसार ग्राह्य शुभ समय

|          |                 |
|----------|-----------------|
| रवि      | सूर्योदय काल    |
| मंगल     | भोजन काल के बाद |
| शनि      | उपाकाल          |
| अन्य वार | किसी भी समय     |

### तारा विचार

जन्म-नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर ६ से भाग दें,  
क्षेत्र १ बचे तो जन्म, २ संपत्ति, ३ विपत्ति, ४ क्षेत्र, ५ प्रत्यरि,  
६ साधक, ७ वध, ८ मैत्र, ९ अतिमित्र होता है।  
१, ३, ५, ७वाँ तारा अशुभ तथा त्याज्य है।

### धात नक्षत्र

|       |         |
|-------|---------|
| राशि  | नक्षत्र |
| मेष   | मधा     |
| वृष   | हस्त    |
| मिथुन | स्वाती  |
| कर्क  | अनुराधा |

|         |          |
|---------|----------|
| सिंह    | शूल      |
| कन्या   | श्रवण    |
| तुला    | शतभिष्ठा |
| वृश्चिक | रैवती    |
| धनु     | भरणी     |
| मकर     | रोहिणी   |
| कुंभ    | आर्द्रा  |
| मीन     | आश्लेषा  |

धात नक्षत्रों में यात्रा करना शुभ नहीं माना गया है।

### विशेष

(१) मृगशिरा, पुण्य, हस्त तथा श्रवण, इन नक्षत्रों में यात्रा शुभ है, फिर चाहे अन्य सभी व्यवस्थाएँ अशुभ हों, फिर भी उनका दोष नहीं रहता।

(२) जब मनोबल प्रबल हो, तब यात्रा प्रारम्भ कर देनी चाहिए, फिर तिथि-वार-नक्षत्र किसी का दोष नहीं रहता।<sup>१</sup>

(३) उचित यात्रामुहूर्त में प्रस्थान असम्भव हो तो “प्रस्थान” कर देना चाहिए।<sup>२</sup>

प्रस्थान में ब्राह्मणों को यज्ञोपवीत, क्षत्रियों को शस्त्र, वैश्य को शहद तथा शूद्रों को आँवला या नारियल रखना चाहिए।<sup>३</sup>

स्वगृह से निकट यात्रा-दिशा में किसी संबंधी के घर प्रस्थान-सामग्री मुहूर्त-समय में रख दे, फिर यात्रा करते भग्न घर से निकल वह सामग्री ले आगे चला जाय, पुनः घर न लौटे। प्रस्थान ३ दिन के बाद निष्कल हो जाता है।

१. शुभं वाप्यशुभं वापि तिथि योगादिकंचयत् ।  
लब्ध्वा मनोबलं तत्र प्रयाणं शुभद स्मृतम् ॥
२. सुमुहूर्ते स्वयं गमनासम्भवे प्रस्थानं कार्यम् ।
३. प्रस्थाने ब्राह्मणादीनां यज्ञसूत्रमथायूधम् ।  
माघ्वा मल फलं प्रशस्त वृद्धिकारणम् ॥

### लग्न-समय

|         |        |
|---------|--------|
| राशि    | घटी पल |
| मेष     | ३—४५   |
| वृष     | ४—१६   |
| मिथुन   | ५—५    |
| कर्क    | ५—४१   |
| सिंह    | ५—४२   |
| कन्या   | ५—३१   |
| तुला    | ५—३१   |
| वृश्चिक | ५—४२   |
| घनु     | ५—४१   |
| मकर     | ५—५    |
| कुम्भ   | ४—१६   |
| मीन     | ३—४५   |

### १६०. होमाहुति मुहूर्त

#### टिप्पणी

सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो, उससे चन्द्र नक्षत्र तक गिरे, तथा तीन-तीन नक्षत्रों का एक श्रिक बना लें, उसमें—

|   |   |           |
|---|---|-----------|
| पहला श्रिक्   | — | सूर्य का  |
| दूसरा „   | — | बुध का    |
| तीसरा „   | — | शुक्र का  |
| चौथा „  | — | शनि का    |
| पाँचवाँ „   | — | चन्द्र का |
| छठा „   | — | मंगल का   |
| सातवाँ „  | — | गुरु का   |
| आठवाँ „   | — | राहु का   |
| नवाँ „  | — | केतु का   |
| होम के दिन का नक्षत्र (या चन्द्र नक्षत्र) जिस श्रिक् में पड़ेगा, उसी ग्रह के मुख में होमाहुति पड़ती है। |   |           |
| खल या द्रुष्टग्रह के मुख में होमाहुति शुभ नहीं होती।  |   |           |

### ११०. मूल-निवास

आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन और माघ में मूल का निवास स्वर्ग में होता है, श्रावण, कार्तिक, चैत्र और पौष में भूमि पर, फाल्गुन, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष और वैशाख में मूल पाताल लोक में रहता है।

### १११. संक्रान्ति नाम

धनु, मिथुन, कन्या तथा मीन की संक्रान्ति का नाम 'घट-घीति मुखा' है, तुला, मेष की संक्रान्ति का नाम 'विषुव' है, तथा सिंह, वृश्चिक, वृष और कुम्भ संक्रान्ति का नाम 'विष्णुपदा' है।

### ११२. मूलाश्लेषा जन्मफल

मूल के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता का नाश।

" द्वितीय " " माता "

" तृतीय " " धन "

" चतुर्थ " " समस्त सुख प्राप्त होता है।

आश्लेषा के पहले चरण में जन्म हो तो सुखदायक।

" दूसरे " " धननाश।

" तीसरे " " माता का नाश।

आश्लेषा के चौथे चरण में जन्म हो तो पिता का नाश।

मूल आश्लेषा की शान्ति करने से उपर्युक्त दोष-निवृत्ति हो जाती है।

### ११३. ग्रह-कार्यबल

किस कार्य में किस ग्रह का बल विशेष देखना चाहिए—

सूर्य राज्य कार्य

चन्द्र समस्त शुभ कार्य

मंगल संग्राम, मुकदमा

बुध विद्याभ्यास, परीक्षा

गुरु विवाह-उत्सव

शुक्र यात्रा

लौह कार्य, दीक्षा

राहु  
केतु

पापकर्म  
कूर कर्म

#### ११४. रामायण भागवत्, पुराण कथारंभ मुहूर्त टिप्पणी

गुरु के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिरें—

१ से १६ नक्षत्र तक अर्थला

१७ से २४,, तक मृत्यु

२५ से २७,, तक मोक्षप्रद

पक्ष—शुक्ल पक्ष।

वार—चन्द्र, बुद्ध, गुरु।

तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५  
(शुक्ल पक्ष) १ (कृष्ण पक्ष)।

भद्रा, व्यतिपात कुयोग वर्जित है।

११५. मध्यीनरी आलू करने का मुहूर्त  
तिथि—१, ७, ८, ८, के अतिरिक्त सभी तिथियाँ।

वार—गु०, शु०, श०, सूर्य०।

नक्षत्र—अश्विं०, हृ०, चिं०, अनु०, पु०, धनि० ज्ये० पुन० रे०।  
लग्न—स्थिर लग्न।

#### ११६. लग्न कर्त्तव्य

नीचे विभिन्न लग्नों से संबंधित शुभ करणीय कार्य  
दिये जा रहे हैं।

मेष

राज्यतिलक, यात्रा, समझौता, नवीन वस्त्र पहनना,  
आभूषण धारण, जमीन खोदना, कूर पाप एवं साहसिक  
कार्य।

वृष

कृषि-कार्य, कुआँ जलाशय आदि का निर्माण, विवाह-  
कार्य, मांगलिक कृत्य, गृहारंभ, स्थिर कार्य, गृहप्रवेश, दुकान  
प्रारम्भ करना; यशु खरीदना, बेचना या दान देना आदि।

मिथुन

कामकला, विज्ञानकार्य, युद्ध, शिल्प, शुभकार्य, राज्या-  
भिषेक।

कर्क

जलाशय-निर्माण व प्रतिष्ठा, कूप, बावड़ी, सरोवर आदि  
से सम्बन्धित कार्य, शांतिकार्य, चित्रकारी, लेखनकार्य।

सिंह

रस, गन्ना इत्य आदि से सम्बन्धित कार्य, वस्तु-क्रय-  
विक्रय, हाट लगाना, दुकान करना, राज्य सेवा, नौकरी करना,  
आभूषण बनाना तथा समस्त शुभ कार्य।

कन्या

विद्यारंभ, गहने पहनना, चर कार्य, स्थिर कार्य, दवाई  
बनाना, शिक्षा, विवाहादि समस्त मांगलिक कार्य।

तुला

कृषि कार्य, यात्रा, व्यापार, विवाह, यज्ञोपवीत, पशुपालन  
तथा पीतल की धातु से सम्बन्धित कार्य।

वृश्चिक

राज्याभिषेक, शुभ कार्य, स्थिर कार्य, नौकरी डूबूटी  
जॉइन करना, गोपनीय कार्य, विषादि से सम्बन्धित कार्यादि।

धनु

विवाह-यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य, पशुपालन, पशु-  
क्रय-विक्रय, चर कार्य।

मकर

कृषिकार्य, पशु क्रय-विक्रय, अस्त्र-शस्त्रनिर्माण, बारूद  
से सम्बन्धित कार्य, जलयान, तालाब-कूपादि खनन, आवागमन।

कुम्भ

कृषि, व्यापार, नौकानयन, जलयात्रा, व्यापार, भूमि-  
सम्बन्धित कार्य, अस्त्र-शस्त्रनिर्माण।

मीन

यज्ञोपवीत, विवाहादि, राज्यतिलक, वस्त्र-अलंकार बनाना-

पहनना आदि शुभ कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ ।

#### ११७. सूर्य विचार

सूर्य—यह ग्रहराज है । गोचर में यह राशि आने से ध्येय दिन पूर्व ही फल देने लग जाता है । सूर्यधिष्ठित राशि से छठे स्थान पर कोई ग्रह हो तो सूर्य विद्ध होता है, फलतः निष्प्रभाव हो जाता है । सूर्य-बल में यह विचार रखना आवश्यक है ।

पर शनिश्चर सूर्य का ही पुत्र है । अतः शनि-सूर्य में परस्पर वेद नहीं होता ।

#### दोष-परिहार

सूर्य-दोष हो तो 'आदित्य हृदयस्तोत्र' पढ़ें व सूर्यार्थ दें । दान, रक्त वस्त्र, लाल कमल, गेहूँ, गुड़ ।

जपसंख्या—७००० ।

मंत्र—ओं हां हौं हौं सः सूर्याय नमः ॥

रत्न—मार्णिक्य रत्न, सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें ।

#### ११८. चन्द्र विचार

चन्द्रमा स्त्रीग्रह तथा मार्गी है । पूर्ण चन्द्र सौम्य तथा क्षीण चन्द्र पापग्रह माना जाता है । चन्द्रमा के शुभ व विद्धस्थान निम्न है—

| शुभ स्थान | विद्ध स्थान |
|-----------|-------------|
| १         | ५           |
| ३         | ६           |
| ६         | १२          |
| ७         | १           |
| १०        | ४           |
| ११        | ८           |

बुद्ध, चन्द्रमा का पुत्र है । अतः बुध का वेद चन्द्रमा को नहीं होता । किसी भी मुहूर्त में चन्द्रबल का विचार सर्वप्रथम है, क्योंकि मुहूर्त में तिथि को १ गुण, नक्षत्र को ४, वार को ८, करण को १६, योग को ३२, तारा को ६० तथा चन्द्र

११०

१०० गुण प्रदान किये गये हैं—<sup>१</sup>

शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा विशेष बली होता है । शुभ चन्द्रमा भी यदि पापग्रह के साथ हो, या दो पापग्रहों के बीच में स्थित हो, या सप्तम भाव में हो तो अशुभ एवं दुष्प्रभावकारक ही होता है ।

गर्भाधान, राज्याभिषेक, जन्मकाल, विवाह, यज्ञोपवीत, यात्रा, राजयुद्ध, दान, व्रत, उपवास, कामकीड़ा एवं सीमन्तो-न्यन में द्वादश चन्द्र शुभ है ।<sup>२</sup>

विवाह, रजोदर्शन गर्भाधान तथा प्रसव पूर्व स्थिति आदि संस्कारों में स्त्री की राशि से चन्द्र विचार करना चाहिए । अन्य सभा कार्यों में पति की राशि से ही चन्द्र की शुभाशुभता का विचार श्रेयस्कर एवं शास्त्रसम्मत है ।<sup>३</sup>

#### चन्द्र निर्बल-विचार

दान—मोती, दही, श्वेत चंदन आदि का दान करना चाहिए ।

जपमंत्र—ओं श्रां श्रीं श्रीं सः चन्द्रमसे नमः ॥

जपसंख्या—१००० ।

रत्न—मोती अंगूठी की अंगूठी में जड़वाकर पहने ।

१. तिथिरेक गुण प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।

वारश्चाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम् ।

चन्द्रः शतगुणः प्रोक्तस्तस्माश्चन्द्रबलं स्मृतम् ।

द्वार्त्रिशद् गुणितो योगस्तारा षस्तिगुणान्विता ॥

—क० न० तं प्रह

२. गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके सौचिजबन्धने ।

पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभ ॥

—दैवत कल्पद्रुम

३. विवाहकार्ये कुसुमः प्रतिष्ठा गर्भप्रतिष्ठा वनिताविशुद्धी ।

अन्यानि कार्याणि ध्रुवस्य सिद्धो पत्यो विहीने प्रमदात्म शुद्धा ।

—राज मार्तण्ड

१११

### ११६. भौम-विचार

यह लालवर्ण का उग्र ग्रह है, तथा-समय-समय पर यह अस्तमार्गी वक्री आदि होता रहता है। यह गोचर में राशि के प्रारम्भ में ही फल देता है।

#### शुभस्थान

३

६

११

#### दोष-परिहार—

दान—रक्त वस्त्र, गुड़, ताम्र-धी आदि का।

मंत्र—ओं क्रीं क्रीं सः भौमाय नमः।

रत्न—मूँगा रत्न सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें।

#### मंगलविद्ध स्थान

१२

६

५

### १२०. बुध-विचार

यह नेपुंसक ग्रह, चन्द्रमा का पुत्र तथा सौम्यग्रह है। यह जिस ग्रह के साथ या जिस राशि में बैठता है, उस राशि-स्वामी के अनुसार ही अपना फल देता है।

#### विद्धस्थान

#### शुभस्थान

२

४

६

८

१०

११

#### विशुद्धस्थान

५

३

८

१

८

१२

#### दोष-परिहार

दान—स्वर्ण, शक्कर, शहद, नीलवस्त्र, कपूर आदि।

जपसंख्या—१७००० जप।

जपमन्त्र—ओ३म् द्रां द्रीं द्रीं सः बुधाय नमः।

रत्न—पन्ना स्वर्ण-मुद्रिका में जड़वाकर पहनें।

#### १२१. शुक्र-विचार

देवाचार्य कभी अस्त, वक्री, मार्गी होते रहते हैं, पर

अतिचार गत, बृद्धायु, वक्री, एवं अस्तावस्था में शुभफलद नहीं रहते। गोचर में यह राशि के मध्य में फल देते हैं।

#### विद्धस्थान

#### शुभस्थान

२

५

७

९

११

#### विद्धस्थान

#### विद्धस्थान

१२

४

३

१०

८

#### दान—पीत वस्त्र, हल्दी, खांड, पुखराज।

जपमन्त्र—ओ३म् द्रां द्रीं द्रीं सः शुक्रे नमः॥

जपसंख्या—१६०००।

रत्न—पुखराज सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें।

#### १२२. शुक्र विचार

यह स्त्रीग्रह, भोग का प्रतीक, अस्तमार्गी तथा वक्री होता रहता है।

#### विद्धस्थान

#### शुभस्थान

#### विद्धस्थान

८

७

१

१२

६

५

६

१०

३

६

८

११

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

६

८

१०

३

रत्न—हीरा ।

घातु—स्वर्ण ।

मोने की अंगूठी में हीरा जड़वाकर धारण करना शुभ एवं लाभदायक रहता है ।

### १२३. शनि विचार

यह नपु सक ग्रह सूर्य का पुत्र, कृष्ण वर्ण तथा गोचर में राशि के अन्त में फल देनेवाला ग्रह है ।

### विद्वस्थान

#### शुभस्थान

३

६

११

सूर्य-शनि का परस्पर वेध नहीं होता ।

### बृहद् पनीती

कुछ इसे 'बृहद् कट्याणी' या 'बड़ी पनीती' भी कहते हैं। क्योंकि यह एक राशि पर ढाई बरस रहता है, अतः जन्मचन्द्र-राशि से जब शनि १२, १ और दूसरी राशि पर होता है, तब इन तीनों राशियों पर अर्थात् साढ़े सात बरस तक के काल को बृहद् पनीती कहते हैं ।

यह समय अप्रव्यय, परेशानियों एवं कठिनाइयों का होता है ।

बारहवीं राशि पर शनि होने पर उसका प्रभाव हृदय पर, जन्म का शनि सिर पर तथा दूसरा शनि पैरों पर अपना प्रभाव रखता है । सिर पर शनि दुर्बलता, हृदय पर बाधाएँ, तथा पैरों पर शनि होने से व्यर्थ का भ्रमण कराता है ।

### लघु पनीती

जब शनि जन्मराशि से चौथे या आठवें में होता है, तो उस ढाई बरस की अवधि को लघु पनीती कहा जाता है ।

लघु पनीती में हानि, मरण, व्याघ्रि, विदेश-प्रवास, बन्धु-विरोध, क्लेश तथा चिन्ता होती है ।

### शनि, चरण

जन्मराशि से शनि जिस-जिस भाव में हो, उसके अनुसार

#### फल—

#### जन्मराशि से शनिस्थान

१, ६, ११

२, ५, ६

३, ७, १०

४, ८, १२

#### पाद

स्वर्ण

रजत

ताम्र

लौह

#### फल

सर्वसुख

सौभाग्य

मध्यम, धनताश ।

शुभ

### शनिवाहन

अपने जन्म नक्षत्र से शनि नक्षत्र तक गणना कर प्राप्तांक में ६ का भाग देने से जो शेष बचे उसके अनुसार—

#### शेष

० हंस

१ गर्दभ

२ अश्व

३ गज

४ महिष

५ सियार

६ सिंह

७ काक

८ मधूर

#### फल

मृत्यु

हानि

विजय

सुख

सामान्य

शोक

शत्रुनाश

कलह

लाभ

### दोष परिहार

दान—नीलम, उड़द, तिल, तेल, चर्मपादुका, कृष्ण वस्त्र ।

मन्त्र—ओ३म् प्रां प्रां सः शनैर्य नमः ।

रत्न—नीलम् ।

जपसंख्या—१६००० ।

घातु—लौह ।

लौहे या पंचधातु की अंगूठी में नीलम जड़वाकर धारण करना चाहिए ।

### १२४. राहु केतु विचार

ये पापगृह हैं, तथा राशि पर आने से चार मास पूर्व ही अपना फल देने लग जाते हैं।  
विद्ध स्थान

| शुभस्थान | विद्ध स्थान |
|----------|-------------|
| ३        | १२          |
| ६        | ९           |
| ११       | ५           |

#### दोष परिहार

दान—गोमेद, सीमा, लहसुनिया (केतु के लिए), नील वस्त्र, कम्बल।

जप—राहु—१८०००।

केतु—७०००।

मंत्र—राहु—ओ३८ भ्रां भ्रां भ्रां सः राहवे नमः।

केतु—ओ३८ सां सीं सीं सः केतवे नमः।

रत्न—राहु—गोमेद।

केतु—लहसुनिया :

धातु—लौह या पंचधातु में रत्न जड़वाकर पहनें

#### १२५. सर्वोपयोगी मुहूर्त

तिथि—१(क) २, ३, ५, ८, १०, १२, १३, १४, १५ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, आ०, पुन०, पु०, आश्ले०, उत्तरा ३, अनु०, श०, ध०, शत०, रे०।

#### टिप्पणी

प्रत्येक प्रकार के शुभ एवं मंगलमय कार्यों के लिए उपर्युक्त मुहूर्त श्रेष्ठ हैं।

#### १२६. रोग-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०।

नक्षत्र—अ०, रो० मृग०, पुन०, पु०, पूर्वा० ३, अनु०

११६

श०, रे०।

#### टिप्पणी

उपर्युक्त योग में यदि कोई व्यक्ति बीमार हो तो समय पर अल्प चिकित्सा से ही व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है।

#### रोग त्रिनाड़ी

| प्रथम नाड़ी | द्वितीय नाड़ी | तृतीय नाड़ी |
|-------------|---------------|-------------|
| आद्रा       | पुनर्वसु      | पुष्प       |
| पू० फा०     | मधा           | आश्लेषा     |
| उ० फा०      | हस्त          | चित्रा      |
| अनुराधा     | विशाखा        | स्वाती      |
| ज्येष्ठा    | मूल           | पू० षा०     |
| घनिष्ठा     | श्रवण         | उ० षा०      |
| शतभिषा      | पू० भा०       | उ० भा०      |
| भरणी        | अश्विनी       | रेत्ती      |
| कृत्तिका    | रोहिणी        | मृग         |

रोगी का जब जन्मनक्षत्र, चन्द्रनक्षत्र एवं सूर्यनक्षत्र तीनों ही एक नाड़ी पर हो जायें, तो रोगी की तत्काल मृत्यु समझ लेनी चाहिए।

#### १२७. सर्पकष्ट मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १०, ११, १३ (शु)।

वार—चं०, बु०, गु०।

नक्षत्र—थ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, पूर्वा० ३, उत्तरा ३, ह०, चिं०, स्वा०, अनु०, ज्येष्ठा०, श०, ध०, रे०।

उपर्युक्त मुहूर्त में यदि किसी को सर्प काटे तो वह अवश्य ही बच जाता है।

#### १२८. रोगशान्ति उपचार

विभिन्न नक्षत्रों में जिस नक्षत्र को व्यक्ति बीमार पड़े तो उससे संबंधित पशु की शाक्ति गेहूँ के आटे से बनाकर संबंधित चीज उसके मुंह में देकर दक्षिण दिशा की ओर सुनसान स्थान पर फेंक दें तो तुरन्त रोग शान्त हो जाता है—

| नक्षत्र            | आकृति   | मुख में भरने की वस्तु |
|--------------------|---------|-----------------------|
| १ अश्विनी          | वानर    | गड़ भात               |
| २ भरणी             | वानर    | गुड़ भात              |
| ३ कृतिका           | बकरी    | दही                   |
| ४ रोहिणी           | गाय     | शाक                   |
| ५ मृगशिरा          | मृग     | उड़द                  |
| ६ आद्रा            | गाय     | तृण                   |
| ७ पुनर्वंशु        | सूबर    | शाक                   |
| ८ पुष्य            | बकरी    | खीर                   |
| ९ आश्लेषा          | सूबर    | घृत                   |
| १० मधा             | वानर    | तिल                   |
| ११ पूर्वा फाल्गुनी | वानर    | मूंग                  |
| १२ उत्तरा फाल्गुनी | बैल     | शाक                   |
| १३ हस्त            | भैसा    | कमल                   |
| १४ चित्रा          | शेर     | पुष्य                 |
| १५ स्वाती          | लोमड़ी  | तिल                   |
| १६ विशाखा          | वाघ     | गुड़                  |
| १७ अनुराधा         | मृग     | मेथी                  |
| १८ ज्येष्ठा        | चूहा    | घनिया                 |
| १९ मूल             | बिल्ली  | तिल                   |
| २० पूर्वाश्वा      | मगरमच्छ | तिल                   |
| २१ उत्तराश्वा      | घल      | शाक                   |
| २२ श्रवण           | भैसा    | पीपर                  |
| २३ धनिष्ठा         | घोड़ा   | पीपर                  |
| २४ शतभिषा          | वानर    | चावल                  |
| २५ पूर्वा भाद्रपद  | कूकर    | दही                   |
| २६ उत्तरा भाद्रपद  | फूकर    | दही                   |
| २७ रेती            | वानर    | गुड़भात               |

### १२६. औधिं-सेवन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १०, १२, (शुक्ल), १ (कृ)

वार—सू०, चं० बु०, गु०, शु० ।  
नक्षत्र—अ०, कृ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,  
स्वा०, वि०, अनु०, श्र० ध०, रे० ।

लग्न—३, ४, ५, ६, ११, राशि ।

### टिप्पणी

जन्म नक्षत्र एवं जन्मलग्न त्वाज्य है ।

### १३०. शाल्य क्रिया मुहूर्त

तिथि—४, ६, १४ (दोनों पक्ष) । शुभ शुक्ल पक्ष विशेषतः ।  
वार—सूर्य, मंगल, गुरु ।  
नक्षत्र—अश्वि०, मृग०, पुष्य, ह०, स्वा०, अनु०, ज्ये०, श०,  
ध० ।

जन्म नक्षत्र वर्जित ।

### टिप्पणी

दशा एवं गोचर अवश्य देख लेना चाहिए ।

### १३१. आरोग्यस्नान मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १०, १३, १५ (शुक्लपक्ष) ।  
वार—सू०, चं०, बु०, गु०, श० ।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, वि०,  
अनु० श्र०, ध०, रे० ।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ८ राशि ।

### टिप्पणी

रोगी का चन्द्रवल एवं सूर्यवल अवलोकनीय है ।

### १३२. शान्ति-कार्य मुहूर्त

मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, (शुक्ल ११ से पूर्व), कार्तिक  
माघ ।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल पक्ष) ।

वार—चं०, बु०, गु०, श० ।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०  
स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे० ।

लग्न—२, ३, ४, ६, ८, १२ राशि ।

### टिप्पणी

गुरुशुक्रास्त, भद्रा; व्यातपात, निर्बल चन्द्र आदि स्थाज्य हैं।

**१३३. अनुष्ठान मुहूर्त**  
तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १४ (शुक्र)।  
वार—सू०, ग०, श०।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, पुन०, उत्तरा ३, ह०, स्वा०, चि०, अनु०, श०, ध०, रे०।

### विशेष

गुरुशुक्रास्त, देवशयन, क्षीण चन्द्र वजित है।

**१३४. पूर्णाह्निति मुहूर्त**  
तिथि—५, १०, १५ (पूर्णातिथि) शुक्रल पक्ष।  
वार—चं० शु०, ग०, श०।

कुछ विद्वानों के अनुसार सूर्यवार भी लिया जा सकता है।  
नक्षत्र—अश्विं० रो०, मृग०, आ०, पुन०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श०, ध०, श०, रे०।

लग्न—२, ३, ६, ८, १२ राशि लग्न।

### टिप्पणी

केन्द्रत्रिकोण में शुभग्रह हो, तथा चन्द्रमा शुभ एवं बली हो।

**१३५. श्रखिल धार्मिक कार्य मुहूर्त**  
तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (शु०)।

वार—सू०, च०, शु०, ग०, श०।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, आ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०, ध०, रे०।

लग्न—२, १०, ११, १२।

ऊपर विविध मुहूर्त दिखाने के पश्चात् संक्षेप में स्वप्न एवं शक्ति पर प्रकाश डाला जा रहा है। यात्रादि में इनका विशेष महत्व है।

### स्वप्न

भविष्यगर्भी घटनाओं का ज्ञान स्वप्न के माध्यम से संभव है। विश्व-इतिहास में ऐसी संकड़ों घटनाएँ हैं, जिनके स्वप्न के माध्यम से गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं।

यहाँ केवल ज्योतिष एवं यात्रा से संबंधित स्वप्नों के बारे में जानकारी दी जा रही है।

यात्रा से पूर्व निर्दिष्ट एवं विचारणीय कार्य की शुभाशुभता की जानकारी के लिए एक दिन पूर्व स्वस्थचित्त, सतुलित एवं सात्त्विक भोजन कर सुखद शय्या पर गहरी नींद सोये।

### फल

यदि रात्रि के प्रथम पहर में स्वप्न आवे तो उसका फल एक वर्ष २ मास पश्चात्, दूसरे पहर में स्वप्न का फल छः महीनों बाद, तीसरे प्रहर में दृष्ट स्वप्न का फल ३ महीने १२ दिन बाद, तथा अंतिम पहर में जो स्वप्न देखा जाता है, उसका फल तुरन्त मिलता है।

### शुभ स्वप्न

|              |            |                  |
|--------------|------------|------------------|
| गो           | देवता      | हाथी             |
| सकेद वस्तुएँ | स्त्री     | राजा             |
| गृह          | स्वर्ण     | दही              |
| मिष्टान्न    | ध्वजा      | दर्पण            |
| विवाह        | धनलाभ      | जलाशय            |
| शिवलिंग      | पिता       | कुटुम्ब का सदस्य |
| बानकं        | महल        | सिह              |
| फलदार वृक्ष  | दिवासन     | सूर्य-चन्द्रादि  |
| नग्न शस्त्र  | गन्धर्व    | जलपान            |
| गंगा नदी     | छत्र       | युद्ध-विजय       |
| पूजन         | पृथिवी     | पर्वत            |
| सर्प         | सूर्य      | मृत्यु           |
| यज्ञ         | दैवी कार्य | भीड़             |
| वाहन         | किला       | नाव              |

सफल यात्रा अद्भुत वस्तुएँ विद्याध्ययन  
 महात्मा सभ्य व्यक्ति शुभ वस्तुएँ  
 उपर्युक्त वस्तुएँ या इससे मिलती-जुलती वस्तुएँ स्वप्न  
 में दिखाई दें तो कार्य सिद्धि समझनी चाहिए।

### अशुभ स्वप्न

|                      |                 |               |
|----------------------|-----------------|---------------|
| हृद्दयाँ             | राक्षस          | रक्त          |
| जलता हुआ मुर्दा      | रुद्ध           | राख           |
| सूखा पेड़            | धी, तेल         | गधा           |
| जंगली जानवर          | सर्प            | कीचड़         |
| स्याही               | केश पतन         | खाली बर्तन    |
| रिक्त जलाशय          | अपमान           | पागल          |
| काले-लाल वस्त्र      | गुड़ खाना       | विष्टा-मूत्र  |
| पहाड़ से गिरना       | क्रीधित व्यक्ति | रोगी          |
| पितृ                 | रसोईघर          | आँधी          |
| नंगा पुरुष या स्त्री | महिष            | दक्षिण-यात्रा |
| प्रसन्नता            | हँसना           | गायत-कीर्तन   |
| तारे दृटना           | मच्छी, मच्छर    | मुर्गा        |
| बिच्छू               | चोरी            | मुण्डन        |
| रोग                  | कबूतर           | रीछ           |
| उलू                  | कौआ             | भूत-प्रेत     |
| धातुएँ               | सुनार           | लुहार         |
| देवालय पतन           | झगड़ा           | होहल्ला       |

उपर्युक्त वस्तुएँ या इससे मिलती-जुलती वस्तुएँ दिखाई दें तो कार्य-असिद्धि समझनी चाहिए।

### अशुभ स्वप्न परिहार

अशुभ स्वप्न आने पर पुनः सो जाता चाहिए, चाहे सूर्योदय हो गया हो।  
 पर शुभ स्वप्न आ जाने पर तुरन्त उठ जाना चाहिए, और उसके बाद सोना नहीं चाहिए।  
 अशुभ स्वप्न ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को सुनाना चाहिए,

जिससे उसका दृष्टिभाव कम हो जाय। अशुभ स्वप्न आने पर प्रातः उठकर गंगास्नान, देवपूजा एवं दान करना चाहिए।

### शकुन

यात्रा, विवाह, यज्ञोपवीत आदि सभी शुभ कार्यों से पहले शकुन देख लेना आवश्यक है। शुभ शकुन कार्य सिद्ध करते हैं जबकि अशुभ शकुन कार्य विलम्ब, कार्य बाधा या कार्यनष्ट करते हैं। नीचे शुभ-अशुभ शकुनों को स्पष्ट किया जा रहा है—

### शुभ शकुन

| सीभाग्यचिह्नयुत | वेश्या                            | सभ्य व्यक्ति  |
|-----------------|-----------------------------------|---------------|
| पुत्रवती स्त्री | बालक                              | बनिया         |
| कुमारी          | आत्मीय जन                         | ब्राह्मण      |
| यशस्वी पुरुष    | विद्वान्                          | धोबी          |
| ज्योतिषी        | पगड़ीधारी व्यक्ति                 | राजा          |
| सुन्दर स्त्री   | घोड़ा                             | तांगा         |
| शिक्षक          | मोर                               | बैल           |
| गाय             | हिरण्य                            | कबूतर         |
| भेड़            | सांप                              | अन्न          |
| बकरा            | ईख                                | पुष्प         |
| फलों का ठेला    | गीली लकड़ी                        | दर्पण         |
| ताम्बूल         | दध-दही                            | मांस          |
| वस्त्र          | धी                                | धज्जा         |
| शराब            | खाद्य                             | दीपक          |
| रिक्ता          | वाद्य                             | जलयुक्त कलश   |
| नगाड़ा          | मिट्टी                            | अर्पिन        |
| छाता            | देव-प्रतिमा                       | शुभ वचन       |
| शवयात्रा        | शुभ समाचार                        | जयघोष         |
| गोवर            | पुस्तकें                          | पूजन-सामग्री  |
| वैद-घ्वनि       | आनन्ददायक सामग्री                 | इत्र          |
| खिलाने          | शुभ शकुनों को धपने से दाहिने रखकर | यात्रादि मंगल |

शुभ शकुनों को धपने से दाहिने रखकर यात्रादि मंगल

## जानिए अग्निवास

किस तिथि को अग्निवास कहा रहता है ?

भग्निवास यज्ञादि के लिए पृथ्वी में शुभ होता है। आकाश में प्राणनाशक, पाताल में धनैश्वर्य की हानि करता है।

• संध्या के समय जप-तप व ध्यान के सिवाय कछुन करें

कार्य करने वालिए

व्यपशुभुन

और  
गवाहा  
रीमी  
बापा  
सौंधी  
धैरा  
रजसवाना  
घासु  
विलारी  
नाई  
चमार  
दुर्जन  
हृषकड़ी  
दुर्घटना  
बिल्ली  
कुण्ड सर्प  
कुर्ता का कान  
फड़फड़ागा

काला धान  
धार  
छाल  
भाड़  
बरतन गिरना  
हड्डीयाँ  
खाली कलश  
कलह  
स्वन

यात्रा, विवाह आदि शुभ कार्यों में अशुभ शकुनों का

जंगा  
संतासी  
संगढ़ा  
हरिती  
गधा  
फहन  
गर्भवती  
झाल  
लकड़हारा  
सुनार  
कुम्हार  
शिकारी  
पारीर धूजना  
तंगे सिरवाला व्यक्ति  
इवान  
कौआ  
इवान युद्ध

लकड़ियाँ  
झाड़ियाँ  
नमक  
चावल  
पत्थर  
रसी  
छींक  
क्रोध  
कूड़ा-करकट

पागल  
जहाँ-जरी  
नपुंसक  
जटाधारी  
ऊँट  
यवन  
विधवा  
विकलांग  
पाखंडी  
लुहार  
मोची  
तलवार  
ठोकर छाना  
लकड़ियाँ  
बाँझ गाय  
वानर  
बिल्ली का रस्ता  
काटना

आटा  
तेल  
गुड-खाण्ड  
खाली बरतन  
लौह  
जंजीर  
'ठहरी' की धवनि  
कुत्सित वाक्य  
दुर्घटना

त्याग करना चाहिए। अशुभ शकुन होने पर दस मिनट विश्राम के बाद प्रस्थान करें।

यदि तीन बार (यात्रा में) अशुभ शकुन हो जाय, तो यात्रा स्थगित कर दी जानी चाहिए।

छींक

किसी भी प्रकार के शुभ कार्य या यात्रा से पूर्व छींक हो जाय, तो वह मनोरथ-सिद्धि को नष्ट कर देती है, अतः छींक को अशुभ ही माना है।

जान-दूँझकर की गई छींक, वृद्ध, बालक, वात-पित्त-कफ, रोगप्रस्त व्यक्ति के द्वारा की गई छींक को महत्व नहीं देना चाहिए।

अविवाहिता, गर्भिनी, वेश्या गार्यिका तथा निष्ठ जाति की स्त्री द्वारा की गई छींक पूर्ण अशुभ है तथा गाय द्वारा की गई छींक मरणप्रद है।

कुछ विद्वानों के अनुसार सामने की छींक कार्यनाश, दाईं तरफ की छींक अशुभ, पीठ-पीछे की छींक शूभ भलद एवं बाईं ओर की छींक शुभ होती है।

दिशानुसार छींक फल

| दिशा    | फल              |
|---------|-----------------|
| पूर्व   | लक्ष्मीप्राप्ति |
| पश्चिम  | सुख             |
| उत्तर   | अशान्ति         |
| दक्षिण  | सिद्धिप्रद      |
| अग्नि   | निधन            |
| ईशान    | रक्षा           |
| वायव्य  | समस्त लाभ       |
| नीचृत्य | पीड़ा           |

तिर्यंक पुरः प्रोक्तमनर्थं दक्षिणेन तु ।  
पृष्ठतः कार्यलाभाय क्षुतं क्षेमाय वामतः ॥

—सुहृत्त दीपिका



**COLLECTION OF VARIOUS**  
→ HINDUISM SCRIPTURES  
→ HINDU COMICS  
→ AYURVEDA  
→ MAGZINES

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

Made with  
By  
  
**Avinash/Shashi**

[creator of  
hinduism  
server]

## अपवाद

ददा बनाने या लेने के समय, बाहन पर चढ़ते समय, विवाह, शयन, भोजन, विद्यारंभ तथा खेत में बीज बोने के समय, यदि छींक हो तो वह शुभ है।<sup>१</sup>

छींक होने पर कर्ता स्ककर आठ बार जमीन पर दाहिना पैर मारे, जूते खोलकर पुनः पहने तथा मुख से शुभवचन उच्चरित करे। विष्णु-स्मरण करे।

गधे का बाईं ओर या पीठ-पीछे रेकना शुभफलदायक है।

अशुभ शकुन बाईं ओर तथा शुभ शकुन दाहिनी ओर हो तो लगभग सुखद कहे जाते हैं।

यदि यात्रा आवश्यक हो, या कार्य प्रारंभ करना आवश्यक हो तो अशुभ शकुन होने पर शिवार्चन करने से अशुभ शकुन दोष मिट जाता है।

## स्वर-विज्ञान

यात्रा, विवाहादि शुभ कार्यों में स्वर का महत्व भी है। नाक द्वारा जो श्वास बाहर आता है, उसे निःश्वास तथा बाहर से जो अन्दर आता है, उसे श्वास कहते हैं।

बार के अनुसार स्वर-महत्ता इस प्रकार है—

| बार       | दिन    | रात    |
|-----------|--------|--------|
| रविवार    | दाहिना | बायाँ  |
| चन्द्रवार | बायाँ  | दाहिना |
| मंगलवार   | दाहिना | बायाँ  |
| बुधवार    | बायाँ  | दाहिना |
| गुरुवार   | दाहिना | बायाँ  |
| शुक्रवार  | बायाँ  | दाहिना |
| शनिवार    | बायाँ  | दाहिना |

उदाहरणार्थ यदि मंगलवार के दिन को कोई शुभ कार्य

१. औषधेऽध्ययने वादे वाहने शयनशने।  
बीजबापे बुधे प्रोक्तं शोभनं सप्तसु भूतम् ॥

—मुहूर्त गणपति

१२६

या यात्रा-प्रस्थान कर रहे हैं, तो उस समय दाहिना स्वर चलता हो तो शुभ है, पर मंगलवार को ही रात को किसी शुभ कार्य के प्रारंभ में वायं स्वर को महत्ता दी जानी चाहिए।

वायं नथुने से निकलनेवाले तीव्र श्वास की बायाँ स्वर तथा दाहिने नथुने से निकलनेवाले श्वास को दाहिना स्वर कहते हैं।

यदि दोनों स्वर बराबर चल रहे हों तो फल सामान्य समझना चाहिए।

जिस नथुने से अपेक्षाकृत तेज निःश्वास होता हो वही प्रमुख स्वर कहलाता है।

इस प्रकार ज्योतिष-प्रेमियों को धीरे-धीरे अध्ययन करने से स्वरशास्त्र भली प्रकार समझ में आ जायगा।

जीवन के प्रत्येक काण का स्क आदृश्य रौचालक है जिसकी व्यवस्था से यह समयनक्र गतिशील रहता है। दिन, रात, रात के बादफिर डीक समय पर निश्चित स्थान पर स्मृदिय एवं स्र्वास्त, डीक समय पर त्रुट्जों का आगमन-प्रस्थान आदि सभी कार्य स्क निश्चित प्रणाली के अनुसार होते हैं। अतएव यह स्पष्ट है कि हम जौनुक भी कर रहे हैं, या भीग रहे हैं वह स्क अद्वैत विराट सत्ताकी विशेष देन है। इन सबका हमारे जीवन पर अभाव पड़ता है।

मुहूर्त-ज्योतिष हमें इस बात का बोध करा देता है कि किस कार्य के लिये कौन-सा राह साध्यक या बाध्यक है।

सुप्रसिद्ध ज्योतिष-ममता  
डॉ नारायण दत्त जीभाली  
की स्क वैज्ञानिक पुस्तक

(सुवोध प्रतिक्रिया)